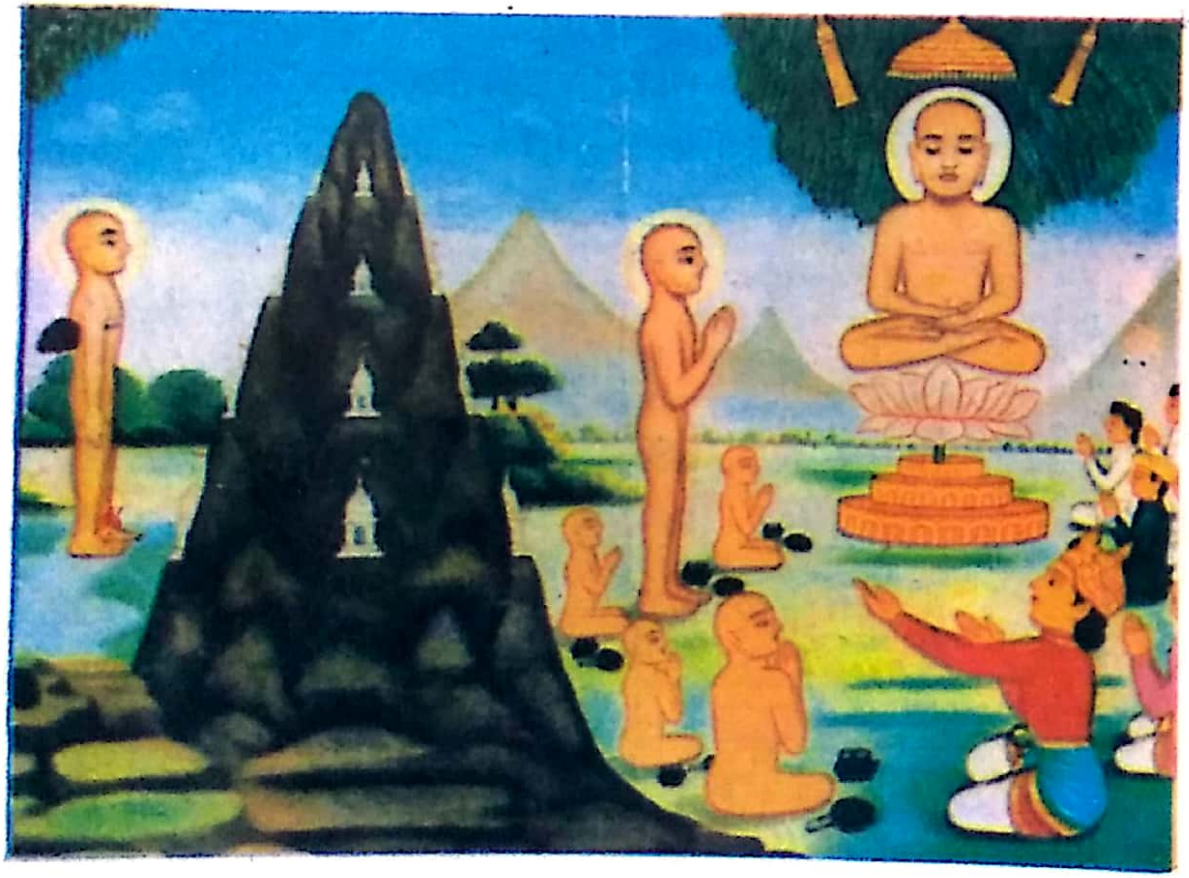
तीर्थक्षेत्र पूजांजलि



कविराज राजमल पवैया

श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल
भोपाल

Scanned by CamScanner

तीर्थक्षेत्र पूजान्जलि —विषय सूची

क्रं.	नाम	पृष्ठ
१	बड़े भाग्य से आये हैं	१
२	जिनेन्द्र प्रक्षाल पाठ	२
३	जिनेन्द्र स्तुति	२
४	कर लो जिनवर की पूजन	२
५	जिनेन्द्र प्रक्षाल एंव पूजन विधि	३
६	पूजा पीठिका	४
७	मंगल विधान- अर्घ्यावलि	५
८	स्वस्ति मंगल	६
९	श्री देव शास्त्र गुरू पूजन	७
१०	श्री सिद्ध पूजन	१०
११	अर्घ्य श्री विद्यमान बीस तीर्थकर	१२
१२	अर्घ्य-श्री कृत्रिमअकृतिम चैत्यालय	१३
१३	अर्घ्य-श्री वर्तमान चौबीस तीर्थकर	१४
१४	श्री समस्त सिद्धक्षेत्र पूजन	१४
१५	श्री अष्टापद कैलाश तीर्थक्षेत्र पूजन	१८
१६	श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर पूजन	२२
१७	श्री चम्पापुर तीर्थकर पूजन	२४
१८	श्री गिरनार तीर्थक्षेत्र पूजन	२७
१९	श्री पावापुर तीर्थक्षेत्र पूजन	३०
२०	श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र पूजन	३३
२१	श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्र पूजन	३६
२२	श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्र पूजन	३९
२३	श्री तुंगीगिरी सिद्धक्षेत्र पूजन	४२
२४	श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्र पूजन	४६
२५	श्री कुन्थलगिरी सिद्धक्षेत्र पूजन	४९
२६	श्री मुक्तागिरी सिद्धक्षेत्र पूजन	५३
२७	श्री सोनागिरी सिद्धक्षेत्र पूजन	५५
२८	श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र पूजन	५८
२९	श्री चूलगिरी सिद्धक्षेत्र पूजन	६१
३०	श्री पावागिरी सिद्धक्षेत्र पूजन	६४
३१	श्री द्रोणागिरी सिद्धक्षेत्र पूजन	६७
३२	श्री रेशन्दीगिरी नयनागिरी सिद्धक्षेत्र पूजन	७०
33	श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र पूजन	७२
३४	श्री मथुराचौरासी सिद्धक्षेत्र पूजन	७५
३५	श्री राजगृही सिद्धक्षेत्र पूजन	७८
३६	श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्र पूजन	८१
३७	श्री मंदारगिरी सिद्धक्षेत्र पूजन	८५
३८	श्री गुणावा सिद्धक्षेत्र पूजन	८७
३९	श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्र पूजन	९०
४०	श्री रेवातट सिद्धक्षेत्र पूजन	९३
४१	श्री अहारजी सिद्धक्षेत्र पूजन	९५
४२	श्री पोदनपुर सिद्धक्षेत्र पूजन	99
४३	श्री तीर्थकर जन्मातिशय क्षेत्र पूजन	१०१
४४	श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्र पूजन	१०५
४५	श्री कम्पिलापुरी अतिशय क्षेत्र पूजन	११०
४६	श्री हस्तिनापुर अतिशय क्षेत्र पूजन	११२
४७	श्री वाराणसी अतिशय क्षेत्र पूजन	११६
४८	श्री कुण्डलपुर (वैशाली) अतिशय क्षेत्र पूजन	११८
४९	श्री खण्डगिरी उदयगिरी पूजन	१२२

Scanned by CamScanner

५०	श्री गोम्मटेश्वर पूजन	१२४
५१	श्री मूडबिद्री अतिशय क्षेत्र पूजन	१२७
५२	श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र पूजन	१३३
५३	श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र पूजन	१३७
५४	श्री मक्सी पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र पूजन	१४२
५५	श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्र पूजन	१४७
५६	श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्र पूजन	१४९
५७	श्री चन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्र पूजन	१५१
५८	श्री भद्दिलपुरी अतिशय क्षेत्र पूजन	१५३
५९	श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्र पूजन	१५५
६०	श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्र पूजन	१५८
६१	श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्र पूजन	१६०
६२	श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्र पूजन	१६३
६३	श्री ऋजुकूलातट अतिशय क्षेत्र पूजन	१६५
६४	श्री सहस्त्रकूट चैत्यालय पूजन	१६७
६५	श्री समवशरण पूजन	१७०
६६	श्री मानस्तंभ पूजन	१७४
६७	महाअर्घ्य	१७७
६८	शान्ति पाठ	१७८
६९	क्षमापना पाठ	१७९
७०	निज अनुभव रस पान करेंगे	१७९
७१	जब तक निज पर भेद न जाना	१८०
७२	पुण्यो की जब तक मिठास है	१८१
७३	यदि भव सागर दुख से भय है	१८२
७४	मै तो सर्वज्ञ स्वरूपी हूँ	१८३
७५	अब मुझे समकित मिला है	१८४
७६	परिणामो बंधो परिणाम मोक्खो	१८५
७७	अगर जगत मे सुख होता तो	१८५
७८	जब तक मिथ्यात्व हृदय मे है	१८६

Scanned by CamScanner

ॐ

तीर्थक्षेत्र पूजान्जली

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

बड़े भाग्य से आए हैं हम

बड़े भाग्य से आए हैं हम, जिनवर के दरबार में।
हम अनादि से दुखिया व्याकुल, चारों गति में भटक रहे।
निज स्वरूप समझे बिन स्वामी, भव अटवी में अटक रहे।
भेद ज्ञान बिन पड़े हुए हैं पर के सोच विचार में ॥ बड़े॥१॥
महा पुण्य संयोग मिला तो शरण आपकी पाई है।
आज आपके दर्शन करके निज की महिमा आई है।
भवसागर से पार करो प्रभु हमको अबकी बार में ॥बड़े॥२॥
दर्शन ज्ञान चरित्र शील तप के आभूषण पहिना दो।
चार अनन्त चतुष्टय की शोभा से स्वामी सजवा दो॥
अष्टस्वगुण प्रगटाऊँ स्वामी फिर न बहूँ मझधार में ॥बड़े॥३॥

Scanned by CamScanner

जिनेन्द्र प्रक्षाल पाठ

मैं परम पूज्य जिनेन्द्र प्रभु को भाव से वन्दन करूँ।
मन वचन काय, त्रियोगपूर्वक शीष चरणों में धरूँ।।१।।
सर्वज्ञ केवल ज्ञानधारी की सुछवि उर में धरूँ।
निर्ग्रन्थ पावन वीतराग महान की जय उच्चरूँ।।२।।
उज्वल दिगम्बर वेश दर्शन कर हृदय आनन्द भरूँ।
अति विनयपूर्वक नमन करके सफल यह नरभव करूँ।।३।।
मैं शुद्ध जल के कलश प्रभु के पूज्य मस्तक पर करूँ।
जल धार देकर हर्ष से अभिषेक प्रभु जी का करूँ।।४।।
मैं न्हवन प्रभु का भाव से कर सकल भवपातक हरूँ।
प्रभु चरणकमल पखारकर सम्यकत्व की सम्पत्ति वरूँ।।५।।

जिनेन्द्र-स्तुति

मैंने प्रभु के चरण पखारे।
जनम, जनम के संचित पातक तत्क्षण ही निरवारे।।१।।
प्रासुक जल के कलश श्री जिन प्रतिमा ऊपर ढारे।
वीतराग अरिहंत देव के गूंजे, जय जयकारे।।२।।
चरणाम्बुज स्पर्श करत ही छाये हर्ष अपारे।
पावन तन, मन नयन भये सब दूर भये अँधियारे।।३।।

करलो जिनवर की पूजन

करलो जिनवर की पूजन, आई पावन घड़ी।
आई पावन घड़ी मन भावन घड़ी।।
दुर्लभ यह मानव तन पाकर, कर लो जिन गुण गान।
गुण अनन्त सिद्धों का सुमिरण, करके बनों महान।।करलो.।।१।।

Scanned by CamScanner

ज्ञानावरण, दर्शनावरणी,मोहनीय अन्तराय।
आयु नाम अरू गोत्र वेदनीय, आठों कर्म नशाय ॥करलो.॥२॥
धन्य धन्य सिद्धोंकी महिमा, नाश किया संसार।
निजस्वभाव से शिवपद पाया, अनुपम अगम अपार ॥करलो.॥३॥
जड़ से भिन्न सदा तुम चेतन करो भेद विज्ञान।
सम्यक दर्शन अंगीकृत कर निज को लो पहचान ॥करलो.॥४॥
रत्नत्रय की तरणी चढ़कर चलो मोक्ष के द्वार।
शुद्धातम का ध्यान लगाओ हो जाओ भव पार ॥करलो.॥५॥

जिनेन्द्र प्रक्षाल एवं पूजन विधि

शुद्ध प्रासुक जल से स्नान कर शुद्ध धुले हुये वस्त्र धारण कर जिनेन्द्र प्रक्षाल पाठ का भक्ति पूर्वक उच्चारण करते हुए शुद्ध प्रासुक जल से श्री जिनेन्द्र देव की प्रतिमा का प्रक्षाल करें। प्रक्षाल में शुद्ध खादी के वस्त्र का उपयोग करें।

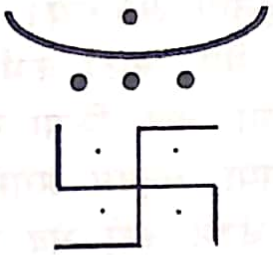
गन्धोदक निम्न मन्त्र उच्चारण करते हुये अत्यन्त विनय श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक अपने शरीर के उत्तमांग (मस्तक के अग्रभाग अर्थात ललाट) पर लगाना चाहिये।

निर्मलं निर्मलीकरणं, पवित्रं पापनाशनम् ।
जिन चरणोदकंबन्दे, अष्टकर्म विनाशनम् ॥

गन्धोदक शरीर के अन्य स्थान जैसे सीना, मुख, पेट बाहुओं, नेत्र या शरीर के रोगग्रस्त स्थान पर, लगाना या छिड़कना योग्य नहीं है तथा मकान दुकान आदि में छिड़कना योग्य नहीं है।

अवशिष्ट गन्धोदक प्रासुक जीव जन्तु रहित स्थान पर सावधानी पूर्वक क्षेपण कर देना चाहिए। जिससे उसी दिन जल भाप बनकर उड़ जावे अथवा शेष गन्धोदक को एक शुद्ध खादी का वस्त्र भिगोकर सूखने हेतु डाल देना श्रेयष्कर है। प्रक्षाल के लिये शुद्ध जल का ही उपयोग करना चाहिये। दूध घृत आदि पंचामृत का उपयोग करने में जीवहिंसा होती है। जो शुद्ध तेरापंथी आम्नाय में वर्जित हैं। प्रक्षाल के पश्चात स्वच्छ थाली में निम्नानुसार स्वस्तिक का चिन्ह अंकित कर कायोत्सर्ग कर (नौ बार णमोकार महामन्त्र पढ़कर) पूजन प्रारम्भ करना चाहिये।

Scanned by CamScanner



श्री

पूजन में शुद्ध प्रासुक जल, चावल (अक्षत) नारियल का गोला, शुद्ध धूप (चन्दन का बुरादा) बादाम, लोंग आदि अचित्त सामग्री का उपयोग करना चाहिये। पूजन में नैवैद्य (पकवान) हरे फल, अग्नि दीपक अशुद्ध धूप आदि का उपयोग करना शुद्ध तेरापंथी आम्नाय में वर्जित है। पूजन विसर्जन के पश्चात कायोत्सर्ग करना चाहिये।

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
अरिहंतो को नमस्कार है, सिद्धो को सादर वन्दन।
आचार्यो को नमस्कार है, उपाध्याय को है वन्दन॥
और लोक के सर्वसाधुओं को है विनय सहित वन्दन।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु को बार बार मेरा वन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलि क्षिपामि।

मंगल चार, चार है उत्तम, चार शरण में जाऊँ मैं।
मन वच काय त्रियोग पूर्वक, शुद्ध भावना भाऊँ मैं॥१॥
श्री अरिहन्त देव मंगल है, श्री सिद्ध प्रभु है मंगल।
श्री साधु मुनि मंगल हैं, है केवलि कथित धर्म मंगल॥२॥
श्री अरिहंत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में हैं उत्तम।
साधु लोक में उत्तम हैं, है केवलि कथित धर्म उत्तम॥३॥
श्री अरिहंत शरण में जाऊं, सिद्ध शरण में मै जाऊँ।
साधु शरण में जाऊं, केवलि कथित धर्म शरणा जाऊँ॥४॥

ॐ ह्रीं नमो अर्हते स्वाहा पुष्पांजलि क्षिपामि।

Scanned by CamScanner

मंगल विधान

णमोंकार का मन्त्र शाश्वत इसकी महिमा अपरम्पारं।
पाप ताप संताप क्लेश हर्ता भवभय नाशक सुखकार॥१॥
सर्व अमंगल का हर्ता है सर्वश्रेष्ठ है मन्त्र पवित्र।
पापपुण्य आश्रव का नाशक संवरमय निर्जरा विचित्र॥२॥
वन्ध विनाशक मोक्ष प्रकाशक वीतराग पददाता मित्र।
श्री पंचपरमेष्ठी प्रभु के झलक रहे हैं इसमें चित्र॥३॥
इसके उच्चारण से होता विषय कषायों का परिहार।
इसके उच्चारण से होता अंतर मन निर्मल अविकार॥४॥
इसके ध्यान मात्र से होता अंतर द्वन्दों का प्रतिकार।
इसके ध्यान मात्र से होता बाह्यान्तर आनंद अपार॥५॥
णमोकार है मन्त्र श्रेष्ठतम सर्व पाप नाशनहारी।
सर्व मंगलों में पहला मंगल पढ़ते ही सुखकारी॥६॥
यह पवित्र अपवित्र दशा सुस्थिति दुस्थिति में हितकारी।
निमिषमात्र में जपते होते हैं विलीन पातक भारी॥७॥
सर्व विघ्न बाधा नाशक है, सर्व संकटों का हर्ता।
अजरअमर अविकल अविकारी, अविनाशी सुखका कर्ता॥८॥
कर्माष्टक का चक्र मिटाता, मोक्ष लक्ष्मी का दाता।
धर्मचक्र से सिद्धचक्र पाता, जो ओम् नमः ध्याता॥९॥
ओंम् शब्द में गर्भित पाँचों, परमेष्ठी निज गुण धारी।
जो भी ध्याते बन जाते, परमात्मा पूर्ण ज्ञान धारी॥१०॥
जयजय जयति पंच परमेष्ठी, जयजय णमोकार जिनमंत्र।
भवबन्धन से छुटकारे का, यही एक है मन्त्रस्वतन्त्र॥११॥
इसकी अनुपम महिमा का, शब्दों में कैसे हो वर्णन।
जो अनुभव करते हैं वे ही, पालेते है मुक्ति गगन॥१२॥

— अर्घ्यावलि —

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूँ।
जिनगृह में जिन प्रतिमा सम्मुख, सहस्त्रनाम को नमन करूँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

Scanned by CamScanner

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूँ।
जिनगृह में जिनराज पंच कल्याणक, पाँचों नमन करूँ॥२॥
ॐ ह्रीं श्री जिन पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जल गंधाक्षत पुष्प सुचरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य धरूँ।
जिन गृह मे पांचो परमेष्ठी के, चरणों में नमन करूँ॥३॥
ॐ ह्री श्री अरहंतादि पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

मंगलमय भगवान वीर प्रभु, मंगलमय गौतम गणधर।
मंगलमय श्री कुन्द कुन्द मुनि, मंगल जैन धर्म सुखकर॥१॥
मंगलमय श्री ऋषभदेव प्रभु, मंगलमय श्री अजित जिनेश।
मंगलमय श्री सम्भव जिनवर, मंगल अभिनंदन परमेश॥२॥
मंगलमय श्री सुमति जिनोत्तम, मंगल पदम्नाथ सर्वेश।
मंगलमय श्री सुपार्श्व जिनस्वामी, मंगलचंदा प्रभु चन्द्रेश॥३॥
मंगलमय श्री पुष्पदन्त प्रभु, मंगल शीतलनाथ सुरेश।
मंगलमय श्रेयांसनाथ जिन, मंगल वासुपूज्य पूज्येश॥४॥
मंगलमय श्री विमलनाथ विभु, मंगल अनंतनाथ महेश।
मंगलमय श्री धर्मनाथ प्रभु, मंगल शान्ति नाथ चक्रेश॥५॥
मंगलमय श्री कुन्थुनाथ जिन,मंगल श्री अरनाथ गुणेश।
मंगलमय श्री मल्लिनाथ प्रभु, मंगल मुनिसुव्रत सत्येश॥६॥
मंगलमय नमिनाथ जिनेश्वर, मंगल नेमिनाथ योगेश।
मंगलमय श्री पार्श्वनाथ प्रभु, मंगल वर्धमान तीर्थेश॥७॥
मंगलमय अरिहंत महाप्रभु, मंगल सर्व सिद्ध लोकेश।
मंगलमय आचार्य श्री जय मंगल उपाध्याय ज्ञानेश॥८॥
मंगलमय श्री सर्वसाधुगण, मंगल जिनवाणी उपदेश!
मंगलमय सीमन्धर आदिक, विद्यमान जिन बीस महेश॥९॥
मंगलमय त्रैलोक्य जिनालय, मंगल जिन प्रतिमा भव्येश।
मंगलमय त्रिकाल चौबीसी, मंगल समवशरण सविशेष॥१०॥
मंगल पंचमेरू जिन मन्दिर, मंगल नन्दीश्वर द्वीपेश।
मंगल सोलह कारण दशलक्षण, रत्नत्रय व्रत भव्येश॥११॥

Scanned by CamScanner

मंगल सहस्त्र कूट चैत्यालय, मंगल मानस्तम्भ हमेश।
मंगलमय केवलि श्रुतकेवलि, मंगल ऋद्धिधारि विद्येश॥१२॥
मंगलमय पाँचों कल्याणक, मंगल जिन शासन उद्देश।
मंगलमय निर्वाण भूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष॥१३॥
सर्व सिद्धि मंगल के दाता हरो, अमंगल हे विश्वेश।
जब तक सिद्ध स्वपद ना पाऊँ, तब तक पूजूँ हे ब्रह्मेश॥१४॥

श्री देव-शास्त्र-गुरू पूजन

वीतराग अरिहंत देव के, पावन चरणों में वंदन।
द्वादशांग श्रुत श्री जिनवाणी, श्री गुरू को मैं करूँ नमन॥
द्रव्य भाव संयममय मुनिवर श्री गुरू को मैं करूँ नमन।
देव शास्त्र गुरू के चरणों का, बारम्बार करूँ पूजन॥
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह अत्र अवतर अवतर संवोषट्।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरू समूहअत्र मम् सन्निहित अष्टक भव भव वषट्।
आवरण ज्ञान पर मेरे है, हूँ जन्म मरण से सदा दुखी।
जब तक मिथ्यात्व हृदय में है, यह चेतन होगा नहीं सुखी॥
ज्ञानवरणी के नाश हेतु, चरणों में जल करता अर्पण।
देव शास्त्र गुरू के चरणों का, बारम्बार करूँ पूजन॥१॥
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो ज्ञानवरणकर्मविनाशनाय जलं नि.।
दर्शन पर जब तक छाया है, संसार ताप तब तक ही है॥
जब तक तत्वों का ज्ञान नहीं, मिथ्यात्व पाप तब तक ही है॥
सम्यक श्रद्धा श्रद्धा के चंदन से, मिट जायेगा दर्शनावरण। देव॥२॥
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो दर्शनावरण कर्म विनाशनाय चंदनं नि.।
निज स्वभाव चैतन्य प्राप्ति हित, जागे उर में अन्तरबल।
अभ्याबाधीत सुख का घाता, वेदनीय है कर्म प्रबल॥
अक्षत चरण चढ़ाकर प्रभुवर वेदनीय का करूँ दमन ।देव.॥३॥
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरूभ्यो वेदनीय कर्म विनाशनाय अक्षतं नि.।

Scanned by CamScanner

मोहनीय के कारण यह चेतन अनादि से भटक रहा।
निज स्वभाव तज पर द्रव्यों की, ममता में ही अटक रहा॥
भेदज्ञान की खड्ग उठाकर मोहनीय का करूँ हनन।
देव शास्त्र गुरू के चरणों का, बारम्बार करूँ पूजन।देव॥४॥
ॐ ह्रीं देवशास्त्र गुरूभ्यो मोहनीय कर्म विनाशनाय पुष्पं नि.।
आयुकर्म के बंध उदय में, सदा उलझता आया हूँ।
चारों गतियों में डोला हूँ, जिन को जान न पाया हूँ॥
अजर अमर अविनाशी पद हित, आयुकर्म का करूँ शमन। देव.॥५॥
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो आयुकर्म विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
नामकर्म के कारण मैंने जैसा, भी शरीर पाया।
उस शरीर को अपना समझा, निज चेतन को विसराया॥
ज्ञान दीप के चिर प्रकाश से, नाम कर्म का करूँ दमन। देव.॥६॥
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो नामकर्म विनाशनाय दीपं नि.।
उच्च नींच कुल मिला बहुत पर, निज कुल जान नहीं पाया।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य निरंजन, सिद्ध स्वरूप न उर भाया॥
गोत्रकर्म का धूम्र उडाऊँ निज परणति में करूँ रमण
देव शास्त्र गुरू के चरणों का, बारम्बार करूँ पूजन।देव॥७॥
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो अन्तरायकर्म विनाशनाय धूपं नि.
दान लाभ भोगोपभोग बल, मिलने में जो बाधक है।
अन्तराय के सर्वनाश का, आत्मज्ञान ही साधक है॥
दर्शन ज्ञान अनन्त वीर्य सुख, पाऊँ निज आराधक बन। देव॥८॥
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो अन्तरायकर्म विनाशनाय फलं नि.।
कर्मोदय में मोह रोष से, करता है शुभ अशुभ विभाव।
पर में इष्ट अनिष्ट कल्पना, रागद्वेष विकारी भाव॥
भावकर्म करता जाता है, जीव भूल निज आत्मस्वभाव।
द्रव्यकर्म बंधते हैं तत्क्षण, शाश्वत सुख का करें अभाव॥
चारघातिया चउअघातिया, अष्ट कर्म का करूँ हनन।देव॥९॥
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो संपूर्ण अष्टकर्म विनाशनाय अर्घ्यं नि. ।

Scanned by CamScanner

जयमाला

हे जगबन्धु जिनेश्वर तुमको, अब तक कभी नहीं ध्याया।
श्री जिनवाणी बहुत सुनी पर, नहीं कभी श्रद्धा लाया॥१॥
परम वीतरागी सन्तों का भी, उपदेश न मन भाया।
नरक तिर्यंच देव नर गति में, भ्रमण किया बहु दुख पाया॥२॥
पाप पुण्य में लीन हुआ निज, शुद्ध भाव को बिसराया।
इसीलिये प्रभुवर अनादि से, भव अटवी में भरमाया॥३॥
आज तुम्हारे दर्शन कर, प्रभु मैंने निज दर्शन पाया।
परम शुद्ध चैतन्य ज्ञानघन का, बहुमान हृदय आया॥४॥
दो आशीष मुझे हे जिनवर, जिनवाणी गुरूदेव महान।
मोह महातम शीघ्र नष्ट हो जाये, करूँ आत्म कल्याण॥५॥
स्वपर विवेक जगे अतर में दो, सम्यक् श्रद्धा का दान।
क्षायक हो उपशम हो हे प्रभु, क्षयोपशम सद्दर्शन ज्ञान ॥६॥
सात तत्व पर श्रद्धा करके, देव शास्त्र गुरू को मानूँ।
निज पर भेद जानकर केवल, निज में ही प्रतीत ठानूँ॥७॥
पर द्रव्यों से मैं ममत्व तज, आत्म द्रव्य को पहचानूँ।
आत्म द्रव्य को इस शरीर से, पृथक भिन्न निर्मल जानूँ॥८॥
समकित रवि की किरणें मेरे, उर अंतर में करें प्रकाश।
सम्यक्ज्ञान प्राप्त कर स्वामी, पर भावों का करूँ विनाश॥९॥
सम्यक्चारित को धारण कर, निज स्वरूप का करूँ विकास।
रत्नत्रय के अवलंबन से मिले, मुक्ति निर्वाण निवास॥१०॥
जय जय जय अरहन्त देव जय, जिनवाणी जग कल्याणी।
जय निर्ग्रंथ महान सुगुरू, जय जय शाश्वत शिवसुखदानी॥११॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यम् नि. स्वाहा।

देव शास्त्र गुरू के वचन, भाव सहित उरधार।
मन वच तन जो पूजते, वे होते भवपार॥

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरूभ्यो नमः

Scanned by CamScanner

श्री सिद्ध पूजन

हे सिद्ध तुम्हारे वन्दन से, उर में निर्मलता आती है।
भव भव के पातक कटते हैं, पुण्यावलि शीश झुकाती है॥
तुम गुण चिन्तन से सहज देव, होता स्वभाव का भान मुझे।
है सिद्ध समान स्वपद मेरा, हो जाता निर्मल ज्ञान मुझे॥
इसलिए नाथ पूजन करता, कब तुम समान मैं बन जाऊँ।
जिस पथ पर चल तुम सिद्ध हुए, मैं भी चल सिद्धस्वपद पाऊँ॥
ज्ञानावरणादिक अष्ट कर्म को, नष्ट करूँ ऐसा बल दो।
निज अष्ट स्वगुणप्रगटें मुझमें, सम्यक पूजन का यह फल हो।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन, अत्र अवतर अवतर वषट्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिन अत्र मम् सन्निहितो भव भव
कर्म मलिन हूँ जन्म जरा मृतु को, कैसे कर पाऊँ क्षय।
निर्मल आत्म ज्ञान जल दो प्रभु, जन्म मृत्यु पर पाऊँ जय॥
अजर, अमर, अविकल, अविकारी, अविनाशी अनंत गुणधाम।
नित्य निरंजन भव दुख भंजन ज्ञान स्वभावी सिद्ध प्रणाम॥१॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने जन्मजरामृत्यु विनाशनायजलं नि.।
शीतल चंदन ताप मिटाता, किंतु नहीं मिटता भव ताप।
निजस्वभाव का चंदन दो प्रभु मिटेराग का सब संताप॥अजर॥२॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चंदनं. नि.।
उलझा हूं संसार चक्र में कैसे इससे हो उद्धार।
अक्षय तन्दुल रत्नत्रय दो हो जाऊँ भव सागर पार॥अजर.॥३॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निं.।
काम व्यथा से मैं घायल हूं, कैसे करूँ काम मद नाश।
विमल दृष्टि दो ज्ञानपुष्प दो, काम भावहोपूर्ण विनाश ।अजर॥४॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने काम बाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
क्षुधा रोग के कारण मेरा, तृप्त नहीं हो पाया मन।
शुद्ध भाव नैवेद्य मुझे दो, सफल करूँ प्रभु यह जीवन। अजर.॥५॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

Scanned by CamScanner

मोह रूप मिथ्यात्व महातम, अन्तर में छाया घनघोर।
ज्ञानद्वीप प्रज्वलित करो प्रभु, प्रगटे समकित रविका भोर॥
अजर, अमर, अविकल, अविकारी, अनिवाशी अनंत गुणधाम।
नित्य निरंजन भव दुख भंजन ज्ञान स्वभावी सिद्ध प्रणाम॥६॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
कर्म शत्रु निज सुख के घाता, इनको कैसे नष्ट करूँ।
शुद्ध धूप तो ध्यान अग्नि में, इन्हें जला भवकष्ट हरूँ। अजर.॥७॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिनं अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि.।
निज चैतन्य स्वरूप न जाना, कैसे निज में आऊँगा।
भेद ज्ञान फल दो हे स्वामी, स्वयं मोक्ष फलपाऊँगा॥अजर.॥८॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्तायफलं निं.।
अष्ट द्रव्य का अर्घ चढाऊँ, अष्ट कर्म का हो संहार।
निज अनर्घ पद पाऊँ भगवन, सादि अनंत परम सुखकार॥अजर॥९॥
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिनं अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

जयमाला

मुक्तिकन्त भगवन्त सिद्ध को, मन बच काया सहित प्रणाम।
अर्ध चन्द्रसम सिद्ध शिला पर, आप विराजे आठो याम॥१॥
ज्ञानावरण दर्शनावरणी, मोहनीय अन्तराय मिटा।
चार घातिया नष्ट हुए तो, फिर अरहन्त रूप प्रगटा॥२॥
वेदनीय अरू आयु नाम अरू, गोत्र कर्म का नाश किया।
चऊ अघातिया नाश किये तो, स्वयं स्वरूप प्रकाश किया॥३॥
अष्टकर्म पर विजय प्राप्त कर, अष्टस्वगुण तुमने पाये।
जन्म मृत्यु का नाश किया, निज, सिद्ध स्वरूप स्वगुण भाये॥४॥
निज स्वभाव में लीन विमल, चैतन्य स्वरूप अरूपी हो।
पूर्ण ज्ञान हो पूर्ण सुखी हो, पूर्ण बली चिद्रूपी हो॥५॥
वीतराग हो सर्व हितैषी, राग द्वेष का नाम नही।
चिदानन्द चैतन्य स्वभावी, कृतकृत्य कुछ काम नहीं॥६॥

Scanned by CamScanner

स्वयं सिद्ध हो स्वयं बुद्ध हो, स्वयं श्रेष्ठ समकित आगार।
गुण अनन्त दर्शन के स्वामी, तुम अनन्त गुण के भंडार॥७॥
तुम अनन्त बल के हो धारी, ज्ञान अनन्तानन्त अपार।
बाधा रहित सूक्ष्म हो भगवन्, अगुरूलघु अवगाह उदार॥८॥
सिद्ध स्वगुण के वर्णन तक की, मुझमें प्रभुवर शक्ति नहीं।
चलूं तुम्हारे पथ पर स्वामी, ऐसी भी तो भक्ति नहीं॥९॥
देव तुम्हारी पूजन करके, हृदय कमल मुस्काया है।
भक्ति भाव उर में जागा, है मेरा मन हर्षाया है॥१०॥
तुम गुण का चिन्तवन करे जो, स्वयं सिद्ध बन जाता है।
हो निजात्म में लीन दुखों से, छुटकारा पा जाता है॥११॥
अविनश्वर अविकारी सुखमय, सिद्ध स्वरूप विमल मेरा।
मुझमें है मुझ से ही प्रगटेगा, स्वरूप अविकल मेरा॥१२॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्ध परमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध स्वाभावी आत्मा, निश्चय सिद्ध स्वरूप।
गुण अनन्तयुत ज्ञानमय, है त्रिकाल शिवभूप॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः।

अर्घ्य श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर

सीमंधर, युगमंधर, बाहु, सुबाहु, सुजात स्वयंप्रभ देव।
ऋषभानन, अनन्तवीर्य, सौरीप्रभु विशाल कीर्ति सुदेव॥१॥
श्री वज्रधर, चन्द्राननप्रभु, चन्द्रबाहु, भुजंगम ईश।
जयति ईश्वर जयति नेमप्रभु, वीरसेन महाभद्र महीश॥२॥
पूज्य देवयश अजितवीर्य, जिनबीस जिनेश्वर परम महान।
विचरण करते हैं विदेह में, शाश्वत तीर्थङ्कर भगवान॥३॥
नहीं शक्ति जाने की स्वामी, यहीं वन्दना करूँ प्रभो।
स्तुति पूजन अर्चन करके, शुद्ध भाव उर भरूँ प्रभो॥४॥

Scanned by CamScanner

ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्रस्थित विद्यमानबीसतीर्थङ्कर जिन समूह अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री विदेहक्षेत्र स्थित विद्यमान बीसतीर्थङ्कर जिनसमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विदेशक्षेत्रस्थित विद्यमानबीसतीर्थङ्कर जिनसमूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

अर्घ पुंज वैराग्य भाव का लेकर चरणों में आऊँ।
निज अनर्घ पदवी पाने को, श्री जिनवर के गुण गाऊँ।
सीमंधर, युगमंधर आदिक, अजितवीर्य को नित ध्याऊँ।
विद्यमान बीसों तीर्थङ्कर की पूजन कर हर्षाऊँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान बीस तीर्थङ्कराय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य नि.।

अर्घ्य श्री कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय

तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय को वन्दन।
ऊर्ध्व मध्य पाताल लोक के जिन भवनों को करूँ नमन॥१॥
हैं अकृत्रिम आठ कोटि अरू छप्पन लाख परम पावन।
संतानवे सहस्त्र चार सौ इक्यासी गृह मन भावन॥२॥
कृत्रिम अकृत्रिम जो असंख्य चैत्यालय हैं उनको वंदन।
विनय भाव से भक्ति पूर्वक नित्य करूँ मैं जिन पूजन॥३॥

ॐ ह्रीं श्री तीनलोकसंबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालय जिन बिम्ब समूह अत्र अवतर अवतर संवोषट्।
ॐ ह्रीं श्री तीनलोकसंबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालय जिन बिम्ब समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं तीनलोकसंबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालय जिन बिंब समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

द्वादश विधितप अर्घ्य संजोकर जिनवर पद अनर्घ्य वर लूँ।
मिथ्या अविरति, पंच प्रमाद, कषाय योग बंधन हरलूं॥१॥
तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालय वंदन कर लूं।
ज्ञान सूर्य की परम ज्योति पा भव सागर के दुख हरलूं॥२॥

ॐ ह्रीं तीन लोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनचैत्यालय जिन बिम्बेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य नि.।

Scanned by CamScanner

अर्घ्य श्री वर्तमान चौबीस तीर्थंकर

भरत क्षेत्र की वर्तमान जिन चौबीसी को करूँ नमन।
वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर के पद पंकज में वन्दन॥१॥
भक्ति भाव से नमस्कार कर विनय सहित करता पूजन।
भव सागर से पार करो प्रभु यही प्रार्थना है भगवन॥२॥

ॐ ह्री श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र अवतर अवतर सवौषट,
ॐ ह्री श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्री श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्।

आत्म ज्ञान वैभव का, निर्मल अर्घ्य अपूर्व बनाऊंगा।
पा अनर्घ्य पद चिदानंद, चिन्मय की ज्योति जगाऊंगा॥१॥
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर, के नित चरण पखारूँगा।
पर द्रव्यों से दृष्टि हटाकर, अपनी ओर निहारूँगा ॥२॥

ॐ ह्री श्री वृषभादि वीरांतेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य नि.।

श्री समस्त सिद्ध क्षेत्र पूजन

मध्य लोक में ढाई द्वीप के सिद्ध क्षेत्रों को वंदन।
जम्बूद्वीप सुभरत क्षेत्र के तीर्थ क्षेत्रों को वंदन॥
श्री कैलाश आदि निर्वाण भूमियों को मैं करूँ नमन।
श्रद्धाभक्ति विनयपूर्वक हर्षित हो करता हूँ पूजन॥
शुद्ध भावना यही हृदय में मैं भी सिद्ध बनू भगवन।
रत्नत्रय पथ पर चल कर मैं नाशूँ चहुँगति का क्रन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्ध क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

Scanned by CamScanner

ज्ञान स्वभावी निर्मल जल का सागर उर में लहराता।
फिर भी भव सागर भंवरों में जन्म मरण के दुख पाता॥
श्री सिद्ध क्षेत्रों का दर्शन पूजन वंदन सुखकारी।
जो स्वभाव का आश्रय लेता उसको है भव दुखहारी॥१॥
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

ज्ञान स्वभावी शीतलतामय चंदन निज में भरा अपार।
फिर भी भव दावानल में जल जल दुख पाया बारम्बार॥श्री.२॥
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं. नि।

ज्ञान स्वभावी उज्जवल अक्षत पुन्ज हृदय में भरे अटूट।
फिर भी अविनाशी अखंड होकर भी पा न सका निजकूट॥श्री.३॥
ॐ ह्रीं श्री सम्रस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।

आत्मज्ञान स्वभावी दिव्य सुगंधित पुष्पों का निज में उपवन।
फिर भी भव माया में पड़ निष्काम न बन पाया भगवन।॥श्री.४॥
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.।

शुद्ध स्वभावी सरस मनोरम तृप्तिपूर्ण नैवेद्य स्वयं।
फिर भी क्षुधारोग से व्याकुल तृष्णा हुई न तिलभर कम॥श्री.५॥
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

सहज स्वभावी स्वपर प्रकाशी केवलरवि निज में अनुपम।
फिर भी अघ मय अंधियारे में भटका मिटा न मिथ्यातम॥श्री.६॥
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।

सरल स्वभावी सहजानंदी विमल धूप से हूँ परिपूर्ण।
फिर भी प्रभो नहीं कर पाया अब तक अष्टकर्म अरिचूर्ण॥श्री७॥
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं नि.।

पूर्ण स्वभावी शिवफलधारी अविकारी हूँ सिद्धस्वरूप।
फिर भी भवअटकी में अटका होकर मैं त्रिभुवन काभूप॥श्री८॥
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।

मुक्तस्वभावी चिदानन्द चैतन्य अनन्त गुणों से पूर।
फिर भी पदअनर्घ्य ना पाया रहकर निजपरिणति से दूर॥श्री.९॥
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

तीर्थकर ऋषि आदि मुनि गए जहाँ निर्वाण।
उन क्षेत्रों को वंद्यकर करूँ आत्म कल्याण॥
जम्बू द्वीप धात की खण्ड अरू पुष्करार्द्ध में क्षेत्र विदेह।
पंच भरत अरु पंच ऐरावत तीर्थ क्षेत्र बंदू धर नेह॥१॥
तीन लोक के सकल तीर्थ निर्वाण क्षेत्र सविनय वन्दू।
सिद्ध अनन्तानन्त विराजित सिद्धशिला नित प्रति वन्दूँ॥२॥
अष्टापद कैलाश शिखर पर ऋषभदेव के पद बन्दूँ।
बालि महाबालि मुनि नागकुमार आदि मुनिवर बन्दूँ॥३॥
श्री सम्मेद शिखर पर्वत पर बीस तीर्थकर बंदूँ।
अजितनाथ संभव, अभिनन्दन, सुमति, पद्म प्रभु को बंदूँ॥४॥
श्री सुपार्श्व चंद्र प्रभु स्वामी, पुष्पदन्त, शीतल बंदूँ।
प्रभु श्रेयांश, विमल अनन्त जिन, धर्म, शांति कुन्थु बंदूँ॥५॥
श्री अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमिजिन, पार्श्वनाथप्रभु को बंदूँ।
मुनि अनंत निर्वाण गये जो, उनके चरणाम्बुज बंदूँ॥६॥
चम्पापुर में वासुपूज्य तीर्थकर को सादर बंदूँ।
श्री मंदारगिरि से मुक्त हुये मुनियों के पद बंदूँ॥७॥
श्री गिरनार नेमि प्रभु शंभु प्रदुम्न अनिरुद्ध आदि बन्दूँ।
कोटि बहात्तर सात शतक मुनि मुक्त हुये उनको बंदूँ॥८॥
पावापुर में महावीर अंतिम तीर्थकर को बंदूँ।
क्षेत्र गुणावा गौतमस्वामी के पद कमलों को बंदूँ॥९॥
तुन्गीगिरि श्री रामचंद्र, हनुमान गवय, गवाक्ष बंदूँ।
महानील, सुग्रीव नील मुनि निन्यानवे कोटि बंदूँ॥१०॥
शत्रुन्जय पर आठ कोटि मुनियों के चरणाम्बुज बंदूँ।
भीम.युधिष्ठिर अर्जुन पांडव और द्रविड़ राजा बंदूँ॥११॥
श्री गजपंथ शैल पर मैं बलभद्र सप्त के पद बंदूँ।
आठ कोटि मुनि मुक्त गए हैं भाव सहित उनको बंदूँ॥१२॥
सोनागिरि पर नंग अनंग कुमार आदि मुनि को बंदूँ।
साढ़े पांच कोटि ऋषियों की यह निर्वाण भूमि बंदूँ॥१३॥

Scanned by CamScanner

पावागढ़ पर साढ़े पांच कोटि मुनियों के पद बंदूँ।
रामचंद्र सुत लव, मदनांकुश, लाड़देव के नृप बंदूं॥१४
तारगा गिरिसाढ़े तीन कोटि मुनियों को मैं बंदूँ।
श्री वरदत्तराय मुनिसागरदत्त आदि प द अभिनन्दूँ॥१५॥
श्री सिद्धवर कूट सनत, मधवा चक्री दोनों बंदूँ।
कामदेव दस आदि ऋषीश्वर साढ़े तीन कोटि बंदू॥१६॥
मुक्ता गिरि से साढ़े तीन कोटि मुनि मोक्ष गए बंदूँ।
पावागिरि पर सुवर्णभद्र आदिक चारों मुनि को बंदूँ॥१७॥
कोटि शिला से एक कोटि मुनि सिद्ध हुये उनको बंदू।
देश कलिंग यशोधर नृप के पांच शतक सुर मुनि बंदूँ॥१८॥
रेशंदीगिरि वरदत्तादि पंच ऋषियों को मैं बंदूँ।
द्रोणागिरि पर गुरूदत्तादिक मुनियों को सविनय वंदूँ॥१९॥
पंच पहाड़ी राजगृही से मुक्त हुये मुनिवर बंदूँ।
चरम केवली जम्बूस्वामी मथुरा मुक्ति भूमि बंदूँ॥२०॥
पटवा से श्री सेठ सुदर्शन मुक्त हुये उनको बंदूँ।
कुन्डलपुर से मोक्ष गये श्रीधर स्वामी के पद बंदूँ॥२१॥
भरत आदि चक्रेश्वर मुनियों की निर्वाण धरा बंदू।
प्रवर कुण्डली, विपुलाचल, हिमवान क्षेत्रों को बंदू॥२२॥
तीर्थकर के सभी गणधरों की निर्वाण भूमि बंदूँ।
वृषभसेन आदिक गौतम चौदह सौ उन्सठ ऋषि बंदूँ॥२३॥
कामदेव बलभद्र चक्रि जो मुक्त हुये उनको बंदूँ।
जल थल नभ से सिद्ध हुये उपसर्ग केवली सब ब दूँ॥२४॥
ज्ञात और अज्ञात सभी निर्वाण भूमियों को बंदूँ।
भूत भविष्यत् वर्तमान की सिद्ध भूमियों को बंदूँ॥२५॥
मन वच काय त्रियोग पूर्वक सर्व सिद्ध भगवन बंदूँ।
सिद्ध स्वपद की प्राप्ति हेतु मैं पाँचों परमेष्ठी बंदूँ॥२६॥
सिद्ध क्षेत्रों के दर्शन कर निज स्वरूप दर्शन कर लूँ।
शुद्ध चेतना सिंधु नीर पी मोक्ष लक्ष्मी को वरलूँ॥२७॥
सब तीर्थों की यात्रा करके आत्म तीर्थ की ओर चलूँ।
अजर अमर अविकल अविनाशी सिद्धस्वपद की ओर ढलूँ॥२८॥

Scanned by CamScanner

भाव शुभाशुभ का अभावकर शुद्धआत्म का ध्यान करूँ।
रागद्वेष का सर्वनाश कर मंगलमय निर्वाण वरूँ॥२९॥
ॐ ह्रीं श्री समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

श्री निर्वाण क्षेत्र का पूजन बंदन जो जन करते हैं।
समकित का पावन वैभव पा मुक्ति वधू को वरते हैं॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री सर्व सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री अष्टापद कैलाश तीर्थक्षेत्र पूजन

अष्टापद कैलाशशिखर पर्वत, को बन्दू बारम्बार।
ऋषभदेव निर्वाण धरा की, गूंज रही है जय जयकार॥
बाली महाबालि मुनि आदिक, मोक्ष गये श्री नागकुमार।
इस पर्वत की भाव वंदना कर, सुख पाऊँ अपरम्पार॥
वर्तमान के प्रथम तीर्थङ्कर को, सविनय नमन करूँ।
श्री कैलाश शिखर पूजन कर, सम्यक्दर्शन ग्रहण करूँ॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाश तीर्थक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाश तीर्थक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाश तीर्थक्षेत्र अत्रममसन्निहितो भव भव वषट्।
ज्ञानानंद स्वरूप आत्मा सम्यक, जल से है परिपूर्ण।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली आश्रय से, हो जन्म मरणभय चूर्ण॥
ऋषभदेव चरणाम्बुज पूजूँ, बन्दूँ अष्टापद कैलाश।
नागकुमार बालि आदिक ने, पाया चिन्मय मोक्ष प्रकाश॥१॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापदकैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
ज्ञानानंद स्वरूप आत्मा में चित्चमत्कार की गंध।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली के आश्रय से होता कभी न बंध ॥ऋष.॥२॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.
सहजानंद स्वरूप आत्मा में अक्षय गुण का भंडार।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली के आश्रय से मिट जाता संसार॥ऋष.॥३॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

Scanned by CamScanner

सहजानंद स्वरूप आत्मा में है शिव सुख सुरभि अपार।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली के आश्रय से जाता काम विकार॥
ऋषभदेव चरणाम्बुज पूजूँ, बन्दूँ अष्टापद कैलाश।
नागकुमार बालि आदिक ने, पाया चिन्मय मोक्ष प्रकाश॥४॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापदकैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि
पूर्णानन्द स्वरूप आत्मा में है परम भाव नैवैद्य।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली के आश्रय से हो जाता निर्वेद ॥ऋष.॥५॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.
पूर्णानन्द स्वरूप आत्मा पूर्ण ज्ञान का सिंधु महान।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली के आश्रय से होता केवलज्ञान॥ऋष.॥६॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निं.
नित्यानंद स्वरूप आत्मा में है ध्यान धूप की वास।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली के आश्रय से होते कर्म विनाश॥ऋष.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं नि.
सिद्धानंद स्वरूप आत्मा में तो शिव फल भरे अनन्त।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली के आश्रय से होता मोक्ष तुरन्त॥ऋष.॥८॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.
शुद्धानन्द स्वरूप आत्मा है अनर्घ्य पद का स्वामी।
ध्रुव चैतन्य त्रिकाली के आश्रय से हो त्रिभुवन नामी॥ऋष.॥९॥
ॐ ह्रीं श्री अष्टापदकैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं नि.।

जयमाला

अष्टापद कैलाश से आदिनाथ भगवान।
मुक्त हुए निज ध्यानधर हुआ, मोक्ष कल्याण॥
श्री कैलाश शिखर अष्टापद, तीन लोक में है विख्यात।
प्रथम तीर्थंकर स्वामी ने, पाया अनुपम मुक्ति प्रभात॥१॥
इसी धरा पर ऋषभदेव को प्रगट हुआ था केवलज्ञान।
समवशरण में आदिनाथ की खिरीदिव्य ध्वनि महामहान॥२॥

Scanned by CamScanner

राग मात्र को हेय जान जो द्रव्य दृष्टि बन जायेगा।
सिद्ध स्वपद की प्राप्ति करेगा शुद्ध मोक्ष पद पायेगा॥३॥
सम्यक् दर्शन की महिमा को जो अंतर में ध्यायेगा।
रत्नत्रय की नाव बैठकर भव सागर तर जायेगा॥४॥
गुणस्थान चौदहवाँ पाकर तीजा शुक्ल ध्यान ध्याया।
प्रकृति बहात्तर प्रथम समय में हर कर अनुपम पद पाया॥५॥
अंतिम समयध्यान चौथा ध्या देह नाश कर मुक्त हुए।
जा पहुँचे लोकाग्र शीश पर मुक्ति वधू से युक्त हुए॥६॥
तन परमाणु खिरे कपूरवत शेष रहे नखकेश प्रधान।
मायामय तन रच देवों ने किया अग्नि संस्कार महान॥७॥
बालि महाबालि मुनियों ने तप कर यहाँ स्वपद पाया।
नागकुमार आदि मुनियों ने सिद्ध स्वपद निज प्रगटाया॥८॥
यह निर्वाण भूमि अति पावन अति पवित्र अतिसुखदायी।
जिसने द्रव्य दृष्टि पाई उसको ही निज महिमा आयी॥९॥
भरत चक्रवर्ती के द्वारा बने बहात्तर जिन मंदिर।
भूत भविष्यत् वर्तमान भारत की चौबीसी सुन्दर॥१०॥
प्रतिनारायण रावण की दुष्टेच्छा हुई न किंचित पूर्ण।
बाली मुनि के एक अँगूठे से हो गया गर्व सब चूर्ण॥११॥
मंदोदरी सहित रावण ने क्षमा प्रार्थना की तत्क्षण।
जिन मुनियों के क्षमा भाव से हुआ प्रभावित अंतर मन॥१२॥
मैं अब प्रभु चरणों की पूजन करके निज स्वभाव ध्याऊँ।
आत्म ज्ञान की प्रचुर शक्ति पा निज स्वभाव में मुसकाऊँ॥१३॥
राग मात्र को हेय जानकर शुद्ध भावना ही ध्याऊँ।
एक दिवस ऐसा आए प्रभु तुम समान मैं बन जाऊँ॥१४॥
अष्टापद कैलाश शिखर को बार बार मेरा वन्दन।
भाव शुभाशुभ का अभाव कर नाशकरूँ भव दुख क्रन्दन॥१५॥
आत्म तत्व का निर्णय करके प्राप्त करूँ सम्यक्दर्शन।
रत्नत्रय की महिमा पाऊँ धन्य धन्य हो यह जीवन॥१६॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाशतीर्थक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

Scanned by CamScanner

अष्टापद कैलाश की महिमा अगम अपार।
निज स्वरूप जो साधते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिक्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री अष्टापद कैलाशतीर्थ क्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर पूजन

तीर्थराज सम्मेदाचल जय शाश्वत तीर्थ क्षेत्र जय जय।
मुनि अनन्त निर्वाण गये हैं, पाया सिद्ध स्वपद शिवमय॥
अजितनाथ, संभव, अभिनन्दन, सुमति, पद्मप्रभु मंगलमय।
श्री सुपार्श्व चन्दाप्रभु स्वामी पुष्पदन्त शीतल गुणमय॥
जय श्रेयांस विमल, अनंत प्रभु, धर्म, शान्ति जिन कुन्थुसदय।
अरह. मल्लि, मुनिसुव्रत स्वामी, नमिजिन, पार्श्वनाथ जय जय॥
बीस जिनेश्वर मोक्ष पधारे इस पर्वत से जय जय जय।
महिमा अपरम्पार विश्व में निज स्वभाव की जय जय जय॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव वषट्।

अगणित सागर पी डाले पर प्यास न कभी बुझा पाया।
अनुपम सुखमय निर्मल शीतल समता जल पीने आया॥
तीर्थराज सम्मेदशिखर की पूजन कर उर हर्षाया।
बीस तीर्थंकर की यह निर्वाण भूमि लख सुख पाया॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्योजन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

पर भावों के संतापों में उलझ उलझ अति दुःख पाया।
ज्ञानानन्दी शुद्ध स्वभावी निज चंदन लेने आया॥
तीर्थराज सम्मेदशिखर की पूजन कर उर हर्षाया।
बीस तीर्थंकर की यह निर्वाण भूमि लख सुख पाया॥२॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

निज चैतन्य रूप को भूला पर ममत्व में भरमाया।
अक्षय चेतन पद पाने को चरण शरण में मैं आया। तीर्थराज३॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं नि ।

Scanned by CamScanner

पर द्रव्यों से राग हटाने का पुरुषार्थ न कर पाया।
शील स्वभाव शान्त पाने को कामनाश करने आया।
तीर्थराज सम्मेदशिखर की पूजन कर उर हर्षाया।
बीस तीर्थकर की यह निर्वाण भूमि लख सुख पाया।।४।।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
तीन लोक का अन्न प्राप्तकर भूख कभी न मिटा पाया।
क्षुधाव्याधि का रोगनशाने निज स्वभाव पाने आया।।तीर्थराज५।।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
मोह तिमिर के कारण अब तक सम्यक् ज्ञान नहीं पाया।
आत्म दीप की ज्योति जगाने भेद ज्ञान करने आया। ।।तीर्थराज.६।।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
आत्म ध्यान बिन भव की भीषण ज्वाला में जल दुःखपाया।
अष्टकर्म सम्पूर्ण जलाने ध्यान अग्नि पाने आया। ।।तीर्थराज.७।।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि.।
पुण्य फलों में तीव्र राग कर सदा पाप ही उपजाया।
पाप पुण्य से रहित शुद्ध परमातमपद पाने आया ।।तीर्थराज.८।।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि।
है अनादि भव रोग न इसकी औषधि अब तक कर पाया।
निजअनर्घ्य पद पाने का अब तो अपूर्व अवसर आया।।तीर्थराज.९।।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य

जयमाला

सम्मेदाचल शीश से तीर्थंकर मुनिराज।
सिद्ध हुए सम श्रेणि में ऊपर रहे विराज।।
प्रभु चरणाम्बुज पूज कर धन्य हुआ मैं आज।
भाव सहित वन्दन करूँ निज शिव सुख के काज।।१।।
जय जय शाश्वत सम्मेदाचल तीर्थ विश्व में श्रेष्ठ प्रधान।
भूत भविष्यत् वर्तमान के तीर्थकर पाते निर्वाण।।२।।
परम तपस्या भूमि सुपावन है अनन्त मुनिराजों की।
शुभ पवित्र निर्वाण धरा है यह महान जिनराजों की।।३।।

Scanned by CamScanner

लक्ष लक्ष वृक्षों की हरियाली से पर्वत शोभित है।
वातावरण शान्तमय सुन्दर लख कर यह जग मोहित है॥४॥
शीतल अरु गन्धर्व सलिल निर्झर जल धारायें न्यारी।
भांति भांति के पक्षीगण करते हैं कलरव मनहारी॥५॥
पर्वत पारसनाथ मनोरम यह सम्मेदशिखर अनुपम।
भाव सहित जो बन्दन करते उनका क्षय होता भ्रमतम॥६॥
बीस टोंक पर बीस तीर्थकर के चरण चिन्ह अभिराम।
शेष टोंक पर चार जिनेश्वर श्री मुनियों के चरण ललाम॥७॥
प्रथम टोंक है कुन्थुनाथ की प्रातः रवि बन्दन करता।
अन्तिम पार्श्वनाथ प्रभु की है संध्या सूर्य नमन करता॥८॥
कूट सिद्धवर अजितनाथ का धवलदत्त संभवजिन का।
अभिनन्दन आनन्दकूट जय अविचलकूट सुमतिजिन का॥९॥
मोहनकूट पद्मप्रभु का है प्रभु सुपार्श्व का प्रभासकूट।
ललितकूट चंदाप्रभु स्वामी पुष्पदन्त जिन सुप्रभकूट॥१०॥
विद्युत्तकूट श्री शीतलजिन श्रेयांस का संकुलकूट।
श्री सुवीरकुलकूट विमल प्रभु नाथ अनन्त स्वयंभूकूट॥११॥
जय प्रभु धर्म सुदत्तकूटजय शांति जिनेश कुन्दप्रभकूट।
कूटज्ञानधर कुन्थुनाथ का अरहनाथ का नाटक कूट॥१२॥
संवर कूट मल्लि जिनवर का, निर्जरकूट मुनि सुव्रतनाथ।
कूट मित्रधर श्री नमि जिनका स्वर्णभद्र प्रभु पारसनाथ॥१३॥
सर्व सिद्धवरकूट आदिप्रभु वासुपूज्य मन्दारगिरि।
उर्जयन्त है कूट नेमि प्रभु सन्मति का महावीर श्री॥१४॥
चौबीसों तीर्थकर प्रभु के गणधर स्वामी सिद्ध महान।
गणधरकूट भाव से पूजूँ मैं भी पाऊँ पद निर्वाण॥१५॥
बीसकूट से बीस तीर्थकर ने पाया मोक्ष महान।
इसी क्षेत्र से तो असंख्य मुनियों ने पाया है निर्वाण॥१६॥
भव्य गीत सम्यक्दर्शन का सहज सुनाई देता है।
रत्नत्रय की महिमा का फल यहाँ दिखाई देता है॥१७॥
सिद्ध क्षेत्र है तीर्थ क्षेत्र है परम पूज्य हैं अति पावन।
भव्य दिव्य पर्वत मालायें ऊँची नीची मन भावन॥१८॥

Scanned by CamScanner

मधुवन में मन्दिर अनेक हैं भव्य विशाल मनोहारी।
बृषभादिक चौबीस जिनेश्वर की प्रतिमाएँ सुखकारी॥१९॥
नन्दीश्वर की सुन्दर रचना श्री बाहुबलि के दर्शन।
ऊँचा मान स्तम्भ सुशोभित पार्श्वनाथ का समवशरण॥२०॥
पुण्योदय से इस पर्वत की सफल यात्रा हो जाये।
नरक और पशुगति का निश्चित बंध नहीं होने पाये॥२१॥
मैं सम्यक्तव ग्रहण कर प्रभु कब तेरह विध चारित्र धरूँ।
पंच महाव्रत धार साधु बन इस भू पर निर्भय विचरूँ॥२२॥
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित तप आराधना चार चितधार।
शुद्ध आत्म अनुभव से नित प्रति हो स्वरूप साधना अपार॥२३॥
नित द्वादश भावना चिन्तवन करके दृढ़ वैराग्य धरूँ।
भेदज्ञान कर पर परणति तज़ निज परणति में रमण करूँ॥२४॥
इसी क्षेत्र से महामोक्ष फल सिद्ध स्वपद को मैं पाऊँ।
अष्ट कर्म का नष्ट करूँ मैं परम शुद्ध प्रभु बन जाऊँ॥२५॥
मन वच काया शुद्धि पूर्वक भाव सहित की है पूजन।
यह संसार भ्रमण मिट जाए हे प्रभु! पाऊँ मुक्ति गगन॥२६॥

ॐ ह्री श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि0 स्वाहा।

श्री सम्मेद शिखर का दर्शन पूजन जो जन करते हैं।
मुक्तिकन्त भगवन्त सिद्ध बन भवसागर से तरते हैं॥

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्री श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री चंपापुर तीर्थ क्षेत्र पूजन

वासुपूज्य तीर्थंकर की निर्वाण भूमि चम्पापुर धाम।
शुद्ध हृदय से बंदन कर प्रभु चरणाम्बुज में करूँ प्रणाम॥
जल थल नभ में वासुपूज्य प्रभु का ही गूंज रहा जयगान।
जल फलादि वसु द्रव्य सजाकर पूजन करता हूँ भगवान॥

ॐ ह्री श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ह्री श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः,
ॐ ह्री श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट।

Scanned by CamScanner

अष्टक

पावन समता रस नीर चरणों में लाया।
मिथ्यात्व पाप का नाश करने मैं आया।।
चम्पापुर क्षेत्र महान दर्शन सुखकारी।
जय वासुपूज्य भगवान प्रभु मंगलकारी।।१ ।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
समता रस चन्दनसार अति शीतल लाया।
क्रोधादि कषाएँ नाश करनें मैं आया ।।चंपापुर.२ ।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि.।
त्रैकालिक ज्ञायक भाव निज अक्षत लाया।
अक्षय निधि पाने नाथ चरणों में आया ।।चंपापुर.३ ।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।
निज अन्तररूप मनोज्ञ शील सुमन लाया।
प्रभु विषय वासना नाश करने मैं आया ।।चंपापुर।।४ ।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.।
धुन जागी निजध्रुवधाम की तो चरु लाया।
अष्टादश दोष विनाश करने में आया ।।चंपापुर५ ।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
निज आत्मज्ञान का दीप ज्योतिर्मय लाया।
अज्ञान अंधेरा नष्ट करने मैं आया।।चंपापुर।।६ ।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि..।
निज आत्म स्वरूप अनूप सुधूप शुचिमय लाया।
वसु कर्मो को विध्वंस करने मैं आया ।।चंपापुर.७।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिंद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्मदहनाय धूपं नि.।
शिवमय अनुभव रस पूर्ण उत्तम फल लाया।
निज शुद्ध त्रिकाली सिद्ध पद पाने आया।।चंपापुर.८ ।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताये फलं नि.।
परिणाम शुद्ध का अर्घ्य चरणों में लाया।
अष्टम वसुधा का राज्य पाने को आया।।चंपापुर।।९ ।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

सिद्ध क्षेत्र चंपापुरी भरत क्षेत्र विख्यात।
वासुपूज्य जिन राज ने किए कर्म वसु घात॥
और अनेकों मुनि हुए इसी क्षेत्र से सिद्ध।
विनय सहित बन्दन करूँ चरणाम्बुज सुप्रसिद्ध॥

जय जय वासुपूज्य तीर्थकर जय चंपापुर तीर्थ महान।
गर्भ जन्म तप ज्ञान भूमि निर्वाण क्षेत्र अतिश्रेष्ठ प्रधान॥१॥
नृप वसुपूज्य सुमाता विजया के सुपुत्र प्रभु जगत प्रसिद्ध।
वासुपूज्य अभयंकर नामी बाल ब्रम्हचारी सुप्रसिद्ध॥२॥
स्वर्ग त्याग माता उर आए हुई रत्न वर्षा पावन।
जन्म समय सुरपति ने नव्हन किया सुमेरू पर मन भावन॥३॥
यह संसार असार जानकर लघुवय में दीक्षाधारी।
लौकांतिक ब्रम्हर्षि सुरों ने धन्य धन्य ध्वनि उच्चारी॥४॥
सोलह वर्ष रहे छद्मस्थ किया चंपापुर वन में ध्यान।
निज स्वभाव से घातिकर्म विनशाये हुआ ज्ञान कल्याण॥५॥
केवलज्ञान प्राप्त कर स्वामी वीतराग सर्वज्ञ हुए।
दे उपदेश भव्य जीवों को पूर्ण देव विश्वज्ञ हुए॥६॥
समवशरण रचकर देवों ने प्रभु का जय जयकार किया।
मुख्य सुगणधर मंदर ऋषि ने द्वादशांग उद्धार किया॥७॥
चंपापुर के महोद्यान में अंतिम शुक्लध्यान ध्याया।
चउ अघातिया भी विनाश कर परम मोक्ष पद प्रगटाया॥८॥
जिन जिन पति जिनदेव जगतपति परम पूज्य त्रिभुवनामी।
मैं अनादि से भव समुद्र में डूबा पार करो स्वामी॥९॥
चंपापुर में हुए आप के पाँचों कल्याणक सुखकार।
चरण कमल वंदन करता हूँ जागा उर में हर्ष अपार॥१०॥
यहाँ अनेकों भव्य जिनालय प्रभु की महिमा गाते हैं।
जो प्रभु का दर्शन करते उनके संकट टल जाते हैं॥११॥

Scanned by CamScanner

चंपापुर के तीर्थ क्षेत्र को बार-बार मेरा वन्दन।
सम्यक् दर्शन पाऊँगा मैं नाश करूँगा भव बन्धन।।१२।।
ॐ ह्रीं श्री चंपापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

चंपापुर के तीर्थ की महिमा अपरम्पार।
निज स्वभाव जो साधते हो जाते भवपार।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री चंपापुर तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री गिरनार तीर्थक्षेत्र पूजन

उर्जयंत गिरनार शिखर निर्वाण क्षेत्र को करूँ नमन।
नेमिनाथ स्वामी ने पाया, सिद्ध शिला का सिंहासन।।
शंबु प्रद्युम्न कुमार आदि अनिरुद्ध मुनीश्वर को वंदन।
कोटि बहात्तर सात शतक मुनियों ने पाया मुक्ति सदन।।
महा भाग्य से शुभ अवसर पा करता हूँ प्रभु पद पूजन।
नेमिनाथ की महा कृपा से पाऊँ मैं सम्यक् दर्शन।।
ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री गिरनारसिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्
मैं शुद्ध पावन नीर लाऊँ भव्य समकित उर धरूँ।
मैं शुभ अशुभ परभाव हर कर स्वयं को उज्जवल करूँ।।
मैं उर्जयन्त महान गिरि गिरनार की पूजा करूँ।
मैं नेमि प्रभु के चरण पंकज युगल निज मस्तक धरूँ।।१।।
ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
मैं सलिल चंदन सहज लाऊँ हृदय को उज्जवल करूँ।
मैं शुभ अशुभ भवताप हर कर स्वयं को शीतल करूं।।मैं।।२।।
ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।
मैं धवल अक्षत भावमय ले आत्म का अनुभव करूँ।
मैं शुभ अशुभ भव रोग हर कर स्वयं अक्षयपद वरूँ।।मैं।।३।।
ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

Scanned by CamScanner

मैं चिदानंद अनूप पावन सुमन मन भावन धरूँ।
मैं लाख चौरासी गुणोत्तर शील की महिमा वरूँ॥
मैं उर्जयन्त महान गिरि गिरनार की पूजा करूँ।
मैं नेमि प्रभु के चरण पंकज युगल निज मस्तक धरूँ॥४॥
ॐ ह्री श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनय पुष्पं नि.।
मैं सरल सहजानंद मय नैवेद्य शुचिमय उर धरूँ।
मैं अमल अतुल अखंड चिन्मय सहज अनुभव रस वरूँ॥मैं५॥
ॐ ह्री श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
मैं भेद ज्ञान प्रदीप से मिथ्यात्व के तम को हरूँ।
मैं पूर्ण ज्ञान प्रकाश केवल ज्ञान ज्योति प्रभा वरूँ॥मैं६॥
ॐ ह्री श्री गिरनार सिद्ध क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं.।
मैं भावना भवनाशिनी की धूप निज अन्तर धरूँ।
वसु कर्मरज से मुक्त होकर निरंजन पद आदरूँ॥मैं॥७॥
ॐ ह्री श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो दुष्टाष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं नि.।
मैं शुद्ध भावों के अमृतफल प्राप्त कर शिव सुख धरूँ।
मैं अतीन्द्रिय आनन्द कंद अनंत गुणमय पद वरूँ ॥मैं॥८॥
ॐ ह्री श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
मैं पारिणामिक भाव काले अर्घ निज आश्रय करूँ।
मैं शुद्ध सादि अनंत शाश्वत परमसिद्ध स्वपद वरूँ॥मैं॥९॥
ॐ ह्री श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं नि.।

जयमाला

उर्जयंत गिरनार को, निशि दिन करूँ प्रणाम।
निज स्वभाव की शक्ति सें लूँ सिद्धों का धाम॥
प्रथम टोंक पर नेमिनाथ प्रभु के जिन मंदिर बने विशाल।
स्वर्ण शिखर ध्वजदंड आदि से है शोभायमान तिहुँकाल॥ १॥
राजुल गुफा बनी अति सुन्दर संयम का पथ बतलाती।
वीतराग निर्ग्रन्थ भावनामयी मोक्ष पथ दर्शाती॥२॥

Scanned by CamScanner

चरण चिन्ह ऋषियों के पावन देते वीतराग संदेश।
नेमिनाथ ने भव्य जनों को दिया विरागमयी उपदेश॥३॥
द्वितिय टोंक पर श्री मुनियों के चरण कमल हैं दिव्यललाम।
भाव पूर्वक अर्घ्य चढ़ाकर मैं लूँ प्रभु निज में विश्राम॥४॥
तृतिय टोंक पर ऋषि मुनियों के चरणाम्बुज अतिशोभित हैं।
दर्शनार्थी दर्शन करके इन पर होते मोहित हैं॥५॥
चौथी टोंक महान कठिन है इस पर चरण चिन्ह सुखकार।
निज स्वभाव की पावन महिमा सुरनर मुनि गाते जयकार॥६॥
श्री कृष्ण रुक्मणी पुत्र श्री कामदेव प्रद्युम्नकुमार।
ले विराग संयम धर मुक्त हुए पहुंचे भव सागर पार॥७॥
शम्बुकुमार तथा अनिरुद्धकुमार आदि मुनि मुक्त हुए।
निज स्वभाव की अमर साधना कर शिवपद संयुक्त हुए॥८॥
पंचम टोंक नेमि प्रभु की है परम तपस्या भूमि महान।
निज स्वभाव साधन के द्वारा पाया सिद्ध स्वपद निवार्ण॥९॥
इन्द्रादिक देवों ने हर्षित किया यहाँ पंचम कल्याण।
कोटि कोटि मुनियों ने तप कर पाया सिद्ध स्वपद अमलान॥१०॥
एक शिला पर प्रभु की अनुपम मूर्ति यहाँ उत्कीर्ण प्रधान।
चरण चिन्ह श्री नेमिनाथ प्रभु के हैं जग में श्रेष्ठ महान॥११॥
इसी टोंक से चउ अघातिया कर्मों का करके अवसान।
एक समय में सिद्ध शिला पर नाथ विराजे महा महान॥१२॥
नेमिनाथ के दर्शन होते चढ़कर दस सहस्त्र सोपान।
हो जाती है पूर्ण यात्रा होता उर में हर्ष महान॥१३॥
फिर जाते हैं सहस्त्राम्र वन जहाँ हुआ था तप कल्याण।
नेमिनाथ के चरणाम्बुज में अर्घ्य चढ़ाते यात्री आन॥१४॥
जिन दीक्षा लेकर प्रभुजी ने यहाँ घोर तप किया महान।
चार घातिया कर्म नष्ट कर पाया प्रभु ने केवलज्ञान॥१५॥
राजुल ने भी यही दीक्षा लेकर किया आत्म कल्याण।
और अनेकों यादव वंशी आदि हुए मुनि महा महान॥१६॥
मैं भी प्रभु के पद चिन्हों पर चलकर महामोक्ष पाऊँ।
भेदज्ञान की ज्योति जलाकर सम्यक्ज्ञान सुप्रगटाऊँ॥१७॥

Scanned by CamScanner

सम्यक ज्ञान चरित्र शक्ति का पूर्ण विकास करूँ स्वामी।
निश्चय रत्नत्रय से मैं सर्वज्ञ बनूँ अन्तर्यामी॥१८॥
चार घातिया कर्म नष्ट कर पद अरहन्त सहज पाऊँ।
फिर अघातिया कर्म नाशकर स्वयं सिद्ध प्रभु बन जाऊँ॥१९॥
पद अनर्घ्य पाने को स्वामी व्याकुल है यह अन्तर्मन।
जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य चरणों में करता हूँ अर्पण॥२०॥
नेमिनाथ स्वामी तुम पद पंकज की करता हूँ पूजन।
वीतराग तीर्थंकर तुमको कोटि कोटि मेरा वन्दन॥२१॥

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

नेमिनाथ निर्वाण भू बन्दूँ बारम्बार।
उर्जयंत गिरनार से हो जाऊँ भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः

श्री पावापुर तीर्थ क्षेत्र पूजन

श्री पावपुर तीर्थ क्षेत्र को भक्तिभाव से करूँ प्रणाम।
जल मन्दिर में महावीर स्वामी के चरणकमल अभिराम॥
इसी भूमि से मोक्ष प्राप्त कर पाऊँ सिद्धपुरी का धाम।
विनय सहित पूजन करता हूँ पाऊँ निजस्वरूप विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर संवौष्ट्।
ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ट तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र अष्टक अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

प्रभु पद्म सरोवर नीर प्रासुक लाया हूँ॥
मैं त्रिविध ताप का नाश करने आया हूँ।
पावापुर तीर्थमहान भारत में नामी।
जय महावीर भगवान त्रिभुवन के स्वामी॥१॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

Scanned by CamScanner

बावन चंदन तरू सार उत्तम लाया हूँ।
निज शांत स्वरूप अपार पाने आया हूँ॥
पावापुर तीर्थ महान भारत में नामी।
जय महावीर भगवान त्रिभुवन के स्वामी॥२॥
ॐ ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।
धवलोज्जवल तंदुल पुन्ज भगवन लाया हूँ।
प्रभु निज शुद्धातम कुन्ज, पाने आया हूँ॥पावापुर॥३॥
ॐ ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।
कल्पद्रुम सुमन मनोज्ञ सुरभित लाया हूँ।
अन्तर का स्वपर विवेक पाने आया हूँ॥पावापुर॥४॥
ॐ ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.।
चरु विविध भाँति के दिव्य अनुपम लाया हूँ।
चैतन्य स्वभाव सुभव्य पाने आया हूँ॥पावापुर.॥५॥
ॐ ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
ज्योतिर्मय दीप प्रकाश नूतन लाया हूँ।
अज्ञान मोह का नाश करने आया हूँ॥पावापुर६॥
ॐ ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
भावों की अनुपम धूप शुचिमय लाया हूँ।
निज आत्मरूप अनूप पाने आया हूँ ॥पावापुर.॥७॥
ॐ ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि.।
सुर कल्प वृक्ष फल आज पावन लाया हूँ।
शिव सुखमय मोक्ष स्वराज पाने आया हूँ॥पावापुर.॥८॥
ॐ ह्री श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
निज अर्घ्य अनूठा देव पावन लाया हूँ।
निज सिद्ध स्वपद स्वयमेव पाने आया हूँ॥पावापुर९॥
ॐ ह्री श्री पावापुर तीर्थक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

पावापुर जिनतीर्थ को नित प्रति करूँ प्रणाम।
महावीर निर्वाण भू सुन्दर सुखद ललाम॥
त्रिशलानंदन नृप सिद्धार्थराज के पुत्र सुवीर जिनेश।
कुंडलपुर के राजकुंवर वैशालिक सन्मति नाथ महेश॥१॥
गर्भ जन्म कल्याण प्राप्तकर भी न बनें भोगों के दास।
बाल ब्रम्हचारी रहकर भवतन भोगों से हुये उदास॥२॥
तीस वर्ष में दीक्षा ले ली बारह वर्ष किया तप ध्यान।
पापपुण्य परभाव नाशकर प्रभु ने पाया केवलज्ञान॥३॥
समवशरण रचकर इन्द्रों ने किया ज्ञान कल्याण महान।
खिरी दिव्यध्वनि विपुलाचल पर सबने किया आत्मकल्याण॥४॥
तीस वर्ष तक कर विहार सन्मति पावापुर में आये।
शुक्ल ध्यान धर योग निरोध किया जगती मंगल गाये॥५॥
अ इ उ ऋ लृ उच्चारण में लगता है जितना काल।
कर्मप्रकृति पच्चासी क्षयकर जा पहुंचे त्रिभुवन के भाल॥६॥
कार्तिक कृष्ण अमावस का ऊषाकाल महान हुआ।
वर्धमान अतिवीर वीर श्री महावीर निर्वाण हुआ॥७॥
धन्य हो गई पावानगरी धन्य हुआ यह भारत देश।
अष्टादश गणराज्यों के राजों ने उत्सव किया विशेष॥८॥
तन कपूरवत उड़ा शेष नख केश रहे शोभा शाली।
इन्द्रादिक ने मायामय तन रचकर की थी दीवाली॥९॥
अग्निकुमार सुरों ने मुकुटानल से तन को भस्म किया।
सभी उपस्थित लोगों ने भस्मी का सिर पर तिलक लिया॥१०॥
पद्म सरोवर बना स्वयं ही जल मन्दिर निर्माण हुआ।
खिले कमल दल बीच सरोवर प्रभु का जय जयगान हुआ॥११॥
चतुर्निकाय सुरों ने आकर किया मोक्ष कल्याण महान।
वीतरागता की जय गूंजी वीतरागता का बहुमान॥१२॥
श्वेतभव्य जल मंदिर अनुपम रक्तवर्ष का सेतु प्रसिद्ध।
चरण चिन्ह श्री महावीर के अति प्राचीन परम सुप्रसिद्ध॥१३॥

Scanned by CamScanner

शुक्ल पक्ष के धवल चंद्रिका की किरणें नर्तन करती।
भव्य जिनालय पद्म सरोवर की शोभा मन को हरती॥१४॥
तट पर जिन मंदिर अनेक हैं दिव्य भव्य शोभाशाली।
महावीर की प्रतिमाएँ खड़गासन पद्मासन वाली॥१५॥
वृषभादिक चौंबीस जिनेश्वर प्रभु की प्रतिमाएं पावन।
विनय सहित वंदन करता हूँ भाव सहित दर्शन पूजन॥१६॥
जीवादिक नव तत्वों पर प्रभु सम्यक् श्रद्धा हो जाए।
आत्म तत्व का निश्चय अनुभव इस नर भव में हो जाए॥१७॥
यही भावना यही कामना यही एक उद्देश्य प्रधान।
पावापुर की पूजन का फल करूँ आत्मा का ही ध्यान॥१८॥
यह पवित्र भू परम पूज्य निर्वाण भावना की जननी।
जो भी निज का ध्यान लगाए उसको भव सागर तरणी॥१९॥

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि0 स्वाहा।

पावापुर के तीर्थ की महिमा अपरम्पार।
निज स्वरूप जो जानते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्र पूजन

जय जय जय शत्रुन्जय पर्वत सिद्धक्षेत्र सुन्दर अनुपम।
आठ कोटि मुनियो की यह निर्वाण भूमि पावन सुखतम॥
भाव सहित दर्शन करने से मिट जाता है मिथ्यातम।
निज प्रतीति होते ही सम्यक्दर्शन होता है दृढ़तम॥
इसलिये प्रभु शुद्ध भाव से करता हूँ मैं जिन पूजन।
विषय कषाय रहित हो जाऊँ यही भावना है भगवन॥

ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

Scanned by CamScanner

अष्टक

निजचैतन्य स्वभाव प्राप्ति हित यह निर्मल जल लाया हूँ।
सम्यक्दर्शन प्रगटाने को श्री चरणों में आया हूँ॥
शत्रुन्जय से आठ कोटि मुनियों में पाया पद निर्वाण।
भक्ति भाव से पूजन करके मैं भी करूँ आत्म कल्याण॥१॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
निज चैतन्य स्वभाव प्राप्तिहित शीतल चंदन लाया हूँ।
दर्शन ज्ञान चरित उपचार विनय पाने को आया हूँ॥शत्रुं.२॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।
निज चैतन्य स्वभाव प्राप्तिहित उज्जवल अक्षत लाया हूँ।
षट आवश्यक द्वादश तप की महिमा पाने आया हूँ ॥शत्रुं.॥३॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि.।
निज चैतन्य स्वभाव प्राप्ति हित पुष्प मनोहर लाया हूँ।
शील स्वभावी ब्रम्हचर्य आभूषण पाने आया हूँ। ॥शत्रुं.॥४॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.।
निज चैतन्य स्वभाव प्राप्तिहित उत्तम चरूप्रभु लाया हूँ।
दर्शन ज्ञान चरित मय रत्नमय पाने आया हूँ॥शत्रुं॥५॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
निज चैतन्य स्वभाव प्राप्तिहित दीप प्रभामय लाया हूँ।
सम्यक्ज्ञान प्राप्त करने को श्री चरणों में आया हूँ॥ शत्रु.॥६॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि।
निज चैतन्य स्वभाव प्राप्ति हित दिव्य धूप प्रभु लाया हूँ।
विषय कषायों की प्रकृति सम्पूर्ण जलाने आया हूँ॥शत्रु.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वन्सनाय धूपं नि.।
निज चैतन्य स्वभाव प्राप्तिहित रसमय तरुफल लाया हूँ।
तेरह विधि सम्यक चारित्र प्रकाश सजाने आया हूँ ॥शत्रु॥८॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्रेभ्यों मोक्षपद प्राप्ताय फलं नि.।
निज चैतन्य स्वभाव प्राप्तिहित अर्घ अष्ट विधि लाया हूँ।
रत्नत्रय की भव दुख हरणी तरणी पाने आया हूँ॥शत्रु.॥९॥
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

जंबू द्वीप सुभरत क्षेत्र में गुर्जर प्रान्त सुरम्य सुकाल।
पालीताना नगर मनोहर शत्रुन्जय पर्वत सुविशाल॥१॥
धन्य धन्य शत्रुन्जय पर्वत धन्य धन्य सम्यक्दर्शन।
धन्य ज्ञान चारित्र धन्य रत्नत्रय हरता भव बन्धन॥२॥
पांचों पांडव दीक्षा लेकर शत्रुन्जय गिरि पर आये।
निज स्वभाव में लीन हुए निज शुद्धातम के गुण गाये॥३॥
कुर्युवर ने क्रोधित होकर किया घोर उपसर्ग महान।
तप्त लोहे के तीव्र अग्निमय आभूषण पहनाये आन॥४॥
निज के ज्ञाता दृष्टा हो भीषण उपसर्ग सहाभारी।
शुक्ल ध्यान में लीन हुए उपसर्ग जयी बन अविकारी॥५॥
अर्जुन भीम युधिष्ठिर तीनों ने पाया निजपद निर्वाण।
नकुल और सहदेव राग शुभ के कारण रह गये अजान॥६॥
दोनों ही सर्वार्थ सिद्धि में गये राग कण के कारण।
तैंतिस सागर मुक्ति वियोग मिला शुभ भावों के कारण॥७॥
राग शुभाशुभ सदा हेय है मोक्ष मार्ग में बाधक है।
केवल शुद्ध स्वभाव स्वयं का मोक्ष मार्ग में साधक है॥८॥
और अनेक द्रविड़ राजा भी इस पर्वत से मुक्त हुए।
आठ कोटि मुनि शत्रुन्जय पर मुक्ति शिला से युक्त हुए॥९॥
आदिनाथ का समवशरण भी इसपर्वत पर आया था।
भूले हुए भव्य जीवों को यह संदेश सुनाया था॥१०॥
पाप पुण्य शुभ अशुभ आश्रव इनको सदा हेय जानो।
निज शुद्धातम उपादेय है एक मात्र निज को मानो॥११॥
प्रभु का यह उपदेश आज तक गूँज रहा है पर्वत पर।
रत्नत्रय की महिमा का जय घोष हो रहा पर्वत पर॥१२॥
तत्वों के श्रद्वान पूर्वक होता जब समकित पावन।
परम श्रेष्ठ निर्वाण प्राप्ति का होता तब पुरूषार्थ सघन॥१३॥

Scanned by CamScanner

इसीलिए पूजन करता हूँ भक्ति भाव भर तन मन में।
निज स्वरूप का आश्रय पाने की भावना जगे मन में॥१४।
सर्व कर्म मल रहित सिद्ध पद हे प्रभु मैं भी प्रगटाऊँ।
श्री मुनि चरणों की पूजन कर शुद्ध भाव में आ जाऊँ॥१५।
भेद ज्ञान से समकित पाऊँ त्वरित स्वरूपाचरण महान।
शत्रुन्जय की यात्रा मेरी सफल तभी होगी भगवान॥१६।
ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जयसिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य प्राप्तये पूर्णार्घ्यं नि.।

शत्रुन्जय के तीर्थ की महिमा अगम अपार।
निज स्वभाव जो साधते हो जाते भव पार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र ॐ ह्रीं श्री शत्रुन्जय सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

तारंगागिरि सिद्धक्षेत्र को भाव सहित में करूँ नमन।
वरदत्तादि वरांग मुनीश्वर सागरदत्त आदि बन्दन॥
साढ़े तीन कोटि मुनियों की यह निर्वाण भूमि पावन।
श्रद्धा भाव विनय से करता मुनि चरणों की मैं पूजन॥
वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर के पद पंकज का अर्चन।
दर्शन के द्वारा मैं भी प्रभु नाश करूँ भव दुख क्रन्दन॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः,
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

क्षीरोदधि का धवलनीर चरणों में भेंट चढ़ाता हूँ।
दोष अठारह नाश हेतु सिद्धों को शीश झुकाता हूँ॥
तारंगागिरि सिद्ध क्षेत्र को नमन करूँ मैं अति हर्षाय।
वरदत्तादिक साढ़े तीन कोटि मुनि वंदूँ मन वचकाय॥१॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.

Scanned by CamScanner

मलयागिरि का बावन चंदन हे प्रभु भेंट चढ़ाता हूँ।
निजस्वरूप की प्राप्ति हेतु सिद्धों को शीश झुकाता हूँ।
तारंगा गिरि सिद्धक्षेत्र को नमन करूँ मैं अति हर्षाय।
वरदत्तादिक साढ़े तीन कोटि मुनि वंदूँ मन वच काय॥२॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।
मुक्ता सम उज्जवल तंदुल हर्षित हो भेंट चढ़ाता हूँ।
निजअखंड पद पाने को सिद्धों को शीश झुकाता हूँ॥तारंगा.॥३॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।
कल्प वृक्ष के नवल पुष्प चरणों में भेंट चढ़ाता हूँ।
शील स्वभाव प्राप्त करने सिद्धों को शीष झुकाता हूँ॥तारंगा.४॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
दिव्य ज्योति मय स्वर्णदीप चरणों में भेंट चढ़ाता हूँ।
मोह महातम नाश हेतु सिद्धों को शीश झुकाता हूँ॥तारंगा॥५॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।
पावन धूप सुगंधमयी चरणों में भेंट चढ़ाता हूँ।
अष्ट कर्म पर जय पाने सिद्धों को शीश झुकाता हूँ॥तारंगा॥६॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।
पावन धूप सुगंधमयी चरणों में भेंट चढ़ाता हूँ।
अष्ट कर्म पर जय पाने सिद्धों को शीश झुकाता हूँ। तारंगा।७॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्मदहनाय धूपं नि.
भाँति भाँति के उत्तम फल चरणों में भेंट चढ़ाता हूँ।
निज स्वभाव फल मोक्षहेतु सिद्धों को शीश झुकाता हूँ।तारंगा.।८॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
जय फलादि वसुद्रव्य अर्घ पुलकित हो भेंट चढ़ाता हूँ।
निज अनर्घ पद प्राप्ति हेतु सिद्धो को शीश झुकाता हूँ॥तारंगा॥९॥
ॐ ह्रीं श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्रभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

तारापुर तारा सुगढ़ इसके नाम अनेक।
तारंगागिरि पूजिये जागे स्वपर विवेक॥

जंबू द्वीप सुभरत क्षेत्र में है गुजरात प्रान्त सुन्दर।
उत्तर में मेहसाणा के आगे तारंगागिरि मनहर॥१॥
अग्रावली पर्वत माला से संबंधित पर्वत पावन।
तपो भूमि है ज्ञान भूमि निर्वाण भूमि अति मनभावन॥२॥
वरदत्तादि वरंग सु सागरदत्त सिद्ध हो गए महान।
साढ़े तीन कोटि मुनियों ने तप करके पाया निर्वाण॥३॥
अति प्राचीन काल से इसका नगर तारवर नाम प्रसिद्ध।
है चालुक्यकाल के मन्दिर जिन बिम्बों से महा समृद्ध॥४॥
कोटि शिला अरू सिद्ध शिलापर्वत के हैं दो भाग प्रधान।
कई गुफाएं बनी हुई है मुनियों के तप हेतु महान॥५॥
पर्वत पर है टोंक अनेकों जिन प्रतिमाओं से शोभित।
चरण चिन्ह श्री ऋषिमुनियों के बने हुए सुर नर वंदित॥६॥
नीचे जिन मंदिर अनेक हैं कलापूर्ण सुन्दर विख्यात।
ऋषण अजित संभव आदिक श्री महावीर स्वामी के ख्यात॥७॥
संवत ग्यारह सौ से पहिले की प्रतिमाएँ रहीं विराज।
परम दिगम्बर वीतराग तीर्थकर जिन स्वामी जिनराज॥८॥
ऊँचा मानस्तंभ सुशोभित प्रभु की जय गाथा गाता।
मान गलित हो जाता जो भी तत्व भावना को भाता॥९॥
देवोपम अतिशय से शोभित सिद्धक्षेत्र है महा महान।
वृषभाषिक श्री वीर जिनेश्वर के प्राचीन बिम्ब छविमान॥१०॥
तीर्थक्षेत्र है सिद्धक्षेत्र है पुण्य क्षेत्र है पूज्य महान।
भेद ज्ञान कर कोटि कोटि मुनियों ने पाया पद निर्वाण॥११॥
श्री बाहुबलि प्रतिमा सुन्दर नन्दीश्वर प्रतीक पावन।
दृश्यसरोवर सहित प्राकृतिक शुभपर्वत है मनभावन॥१२॥
वीतराग निर्ग्रन्थ साधुओं ने तप कर शिव पद पाया।
पंच महाव्रत धारे फिर भी निज स्वभाव ही उरभाया॥१३॥

Scanned by CamScanner

परिषह जयकर आत्म ध्यान धर श्रेणी चढ़ सर्वज्ञ हुए।
केवलज्ञान सम्पदा पाकर त्रिभुवन पति विश्वज्ञ हुए॥१४॥
अन्तिम शुक्ल ध्यान के द्वारा योग अभाव किया तत्क्षण।
एक समय में सिद्धलोक पा मुक्तिप्रिया से किया मिलन॥१५॥
अष्ट स्वगुण तुमने प्रगटाए अष्ट कर्म का नाश किया।
सम्यक्दर्शन ज्ञानचरित्र सुफल पा मोक्ष प्रकाश लिया॥१६॥
मैं भी चरणों में आया हूँ मुझे सुमति दो हे भगवान।
सम्यक्दर्शन शीघ्र प्राप्तं हो मैं भी पाऊँ सम्यक्ज्ञान॥१७॥
ले सम्यक्चारित्र मुक्ति के पावन पथ पर आज जाऊँ।
ध्रुव स्वभाव का आश्रय लेकर परमतपस्वी बन जाऊँ॥१८॥
तीर्थयात्रा का पवित्र फल रत्नत्रय की निधि पाऊँ।
यह मानव सफल करूँ में सिद्धस्वपद निज प्रगटाऊँ॥१९॥
तारंगागिरि सिद्ध क्षेत्र को बार बार मैं करूँ प्रणाम।
भाव द्रव्य संयम मयमुनि बन मैं भी पाऊँ प्रभु शिव धाम॥२०॥
द्रव्य दृष्टि होते ही स्वामी पाप पुण्य का करूँ अभाव।
ज्ञान स्वभावी सिद्ध स्वरूपी प्रभु प्रगटाऊँ शुद्ध स्वभाव॥२१॥
तारंगा की पुण्य भूमि को बार बार मैं करूँ नमन।
तत्वों के श्रद्धान पूर्वक मोक्ष मार्ग को ग्रहण करूँ॥२२॥

ॐ ह्री श्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो साढ़े तीन कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि.।

श्री तारंगा क्षेत्र की महिमा अपरम्पार।
निज स्वभाव जों साधते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्य- ॐ ह्री तारंगागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्र पूजन

सिद्धक्षेत्र पावागढ़ सुन्दर यहाँ जागता स्वपर विवेक।
इस पर्वत की पूजन करके मेटूँ मिथ्या भ्रम की टेक॥

Scanned by CamScanner

रामचन्द्र के सुत लव अंकुश लाड़ देश के नृपति अनेक।
पाँच कोटि मुनियों ने पाया अनुपम सिद्ध स्वपद सविवेक॥
शुद्ध हृदय से पूजन करने अष्ट द्रव्य प्रभु लाया हूँ।
भेद ज्ञान की ज्योति जगाने चरण शरण में आया हूँ॥
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्,
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
प्रासुक जल की तीन धार दे जन्म मरण निरवारूं मै।
नित्यानंद स्वरूपी निज आतम को सदा निहारूं मै॥
पावागढ़ से पांच कोटि मुनियों ने पाया पद निर्वाण।
लव अंकुश आदिक मुनि वदूं पाऊँ वीतराग विज्ञान॥१॥
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि।
बावन चंदन अर्पित करके भव आताप निवारूं मैं।
नित्यानंद स्वरूपी निज आतम को सदा निहारूँ मैं ॥पावा.॥२॥
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन नि.।
शुद्ध श्वेत अक्षत अर्पित कर अक्षयपद को धारूँ मैं।
ज्ञानानंद स्वरूपी निज आतम को सदा निहारूं मै॥
पावागढ़ से पांच कोटि मुनियों ने पाया पद निर्वाण।
लव अंकुश आदिक मुनि बंदूँ पाऊँ वीतराग विज्ञान॥३॥
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।
परम सुगंधित पुष्प भेंटकर कामबाण निरवारूँ मैं।
ज्ञानानन्द स्वरूपी निज आतम को सदा निहारूँ मैं॥पावा.॥४॥
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.।
शुद्ध नैवेद्य समर्पित करके क्षुधा रोग निरवारूँ मैं।
सहजानंद स्वरूपी निज आतम को सदा निहारूं मैं॥पावा.५॥
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
तमहर मणिमय दीपं ज्योति ले मोह तिमिर निरवारूँ मैं।
सहजानंद स्वरूपी निज आतम को सदा निहारूँ मैं॥पावा॥६॥
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।

Scanned by CamScanner

मलयागिरि की धूप चढ़ाकर आठों कर्म निवारूँ मैं।
पूर्णानंद स्वरूपी निज आतम को निहारूँ सदा मैं।।
पावागढ़ से पांच कोटि मुनियो ने पाया पद निर्वाण।
लव अंकुश आदिक मुनि वंदूँ पाऊँ वीतराग विज्ञान।।७।।
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि.।
सुरतरू के फल चरणा चढ़ाकर भव की व्यथा निवारूँ मैं।
पूर्णानंद स्वरूपी निज आतम को सदा निहारू मैं।।पावा।।८।।
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य भेट कर चहुंगति दुख निरवारूँ मै।
परमानन्द स्वरूपी निज आतम को सदा निहारूँ मै।।पावा.९।।
ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र मे है गुजरात प्रान्त सुन्दर।
इसमें पावागढ़ पर्वत वन सुषमा से शोभित मनहर।।१।।
इस पर्वत पर यत्र तत्र जिन मंदिर निर्मित महा विशाल।
जिन मुनियों के चरण चिन्ह दर्शन कर होते भव्य निहाल।।२।।
रामचंद्र के सुत दोनों लव अंकुश महा योग्य बलवान।
राज्य पाट तज दीक्षा लेकर इस गिरि से पाया निर्वाण।।३।।
लाढ़ देश के नृप तप करके भव बंधन से मुक्त हुए।
पांच कोटि मुनि शुक्ल ध्यान धर मुक्ति लोक से युक्त हुए।।४।।
शुद्ध आत्मा की प्रतीति कर पंच महाव्रत की धारा।
निज स्वभाव मय रत्नत्रय के उत्तम पथ को स्वीकारा।।५।।
सर्व परीषह सहे ज्ञान से उपसर्गो पर जय पायी।
मुक्ति वधू उत्कंठित हो उनसे परिणय कर हर्षायी।।६।।
शुक्ल ध्यान धर श्रेणी चढ़कर कर्मघाति का नाश किया।
यथाख्यात चारित्र के बल से केवलज्ञान प्रकाश लिया।।७।।
गुणस्थान चौदहवाँ लेकर कर्म अघाति विनाश किया।
एक समय मे ऊर्ध्वलोक जा सिद्ध शिला पर वास किया।।८।।

Scanned by CamScanner

सिद्ध स्वरूपी विमल अनूपी निज चैतन्य लोक पाया।
इन मुनियों के चरण कमल की पूजन कर उर हर्षाया॥९॥
मैं भी अपना ध्यान लगाऊँ मुझको प्रभु ऐसा बल दो।
निज स्वरूप अवलंबन लूँ मैं, सम्यक्दर्शन संबल हो॥१०॥
प्राप्त स्वरूपाचरण करूँ मैं यथाख्याच तभी प्रगटाऊँ।
रत्नत्रय की तरणी चढ़कर अनुपम सिद्ध स्वपद पाऊँ॥११॥
पावागढ़ की पूजन करके धन्य हुआ मेरा जीवन।
शुद्ध स्वपद की सहज प्राप्तिकर निजस्वभाव ही है साधन ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं नि.।

पावागढ़ के क्षेत्र की महिमा अगम अपार।
निज स्वरूप जो साधते वे होते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिक्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री पावागढ़ सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

भरत क्षेत्र में तुंगीगिरि पर्वत की महिमा अपरम्पार।
निन्यानवे कोटि मुनियों की सिद्ध भूमि पावन सुखकार॥
तुंगीगिरि से मुक्त हुए है रामचन्द्र बलभद्र महान।
गवय गवाक्ष सुडील नील सुग्रीव सु महानील हनुमान॥
महाघोष सम्यक्दर्शन का यहाँ सुनाई देता है।
रत्नत्रय की महिमा का फल यहाँ दिखाई देता है॥
इस पर्वत पर सदा गूँजती श्री मुनियों की जय गुंजार।
भाव सहित पूजन करता हूँ तुंगीगिरि की जय उच्चार॥

ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवोषट्।
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Scanned by CamScanner

अष्टक

निज अनुभव का निर्मल जल पाने प्रभु चरणों में आऊँ।
जन्म मरण का दोष मिटाऊँ तुम सम सिद्ध स्वपद पाऊँ॥
तुंगीगिरि से मुक्त हुए हैं निन्यानवे कोटि मुनिराय।
रामचन्द्र हनुमान आदि मुनि चरण कमल बंदू हर्षाय॥१॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
निज अनुभव रस शीतल चन्दन लेने चरणों में आऊँ।
भव आतप का दोष नशाऊँ तुम सम सिद्ध स्वपद पाऊँ॥तुंगी.२॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।
निज अनुभव के उत्तम अक्षत लेने चरणों में जाऊँ।
अक्षय पद की प्राप्ति करूँ मैं तुमसम सिद्ध स्वपद पाऊँ॥तुंगी.३॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।
निज अनुभव के शील पुष्प पाने प्रभु चरणों में जाऊँ।
काम क्रोध मद रोग हटाऊँ तुम सम सिद्ध स्वपद पाऊँ॥तुंगी. ४॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
निज अनुभव रस के नैवेद्य प्राप्ति हित चरणों में आऊँ।
क्षुधा रोग का नाश करूँ मैं तुम समसिद्ध स्वपद पाऊँ॥तुंगी.५॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
निज अनुभव का ज्ञान दीप लेने प्रभु चरणों में आऊँ।
मिथ्यातम की भ्रांति मिटाऊँ तुम सम सिद्ध स्वपद पाऊँ॥तुंगी६॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगीरिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
निज अनुभव की धूप सुगन्धित पाने चरणों में आऊँ।
अष्टकर्म की व्याधि मिटाऊँ तुम सम सिद्ध स्वपद पाऊँ॥तुंगी।७॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं नि.।
निज अनुभव रस किंचित फल पाने प्रभु चरणों में आऊँ।
अविकल परम मोक्षफल पाऊँ तुम सम सिद्ध स्वपद पाऊँ॥तुंगी।८॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताये फलं नि.।
निज अनुभव रस अर्घ अनूठा पाने चरणों में आऊँ।
निज अनर्घ पद प्राप्त करूँ मैं तुम सम सिद्ध स्वपद पाऊँ॥तुंगी.९॥
ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

रामचन्द्र हनुमान मुनीश्वर तप कर हुये सिद्ध भगवान।
गवय गवाक्ष सुडील नील मुनि महानील सुग्रीव महान॥
निज स्वरूप अवलंबन द्वारा पाया सिद्ध स्वपद शिवरूप।
निन्यानवे कोटि मुनियों ने पाया जिनपद परम अनूप॥
जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य ले पूजूँ पद पंकज सुखदाय।
श्री मुनि चरण कमल मैं बंदूँ भाव पूर्वक अति हर्षाय॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री रामचन्द्र हनुमान, गवय गवाक्ष सुडील नील महानील सुग्रीव आदि निन्यानबे कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं नि.।

जयमाला

सम श्रेणी में सिद्ध जो, ऊपर रहे विराज।
उन सब को बंदन करूँ, महामोक्ष के काज॥
जंबूद्वीप सु भरत क्षेत्र में महाराष्ट्र है प्रान्त विशाल।
इसके मध्य क्षेत्र में तुंगीगिरि पर्वत का उन्नत भाल॥१॥
मांगीतुंगी क्षेत्र मनोहर दर्शन कर उर हर्षाता।
सिद्ध क्षेत्र तुंगीगिरि अनुपम भारत भर में विख्याता॥२॥
निन्यानवे कोटि मुनियो ने इस पर्वत पर धर निज ध्यान।
मुक्तिलोक का वैभव का पाया, पाया पावन पद निर्वाण॥३॥
दीक्षा ले श्री रामचन्द्र ने शुद्वातम का ध्यान किया।
निज स्वभाव की महाशक्ति से उत्तम पद निर्वाण लिया॥४॥
श्री हनुमान तपस्या करके इस पर्वत से सिद्ध हुए।
गवय गवाक्ष सुडील नील मुनि तपकर परम विशुद्ध हुए॥५॥
महानील सुग्रीव आदि मुनि मुक्ति वधू से युक्त हुए।
कोटि कोटि मुनि इस पर्वत से आत्म ध्यान धर मुक्त हुए॥६॥
द्वीपायन के महा क्रोध से भस्म हुई यादव संतान।
जली द्वारिका बचा न पाये श्रीकृष्ण बलराम महान॥७॥
हो उदास चल पड़े गहन वन में विधि का था यही विधान।
जरतकुमार भ्रात से अनजाने में गये कृष्ण के प्राण॥८॥

Scanned by CamScanner

श्री कृष्ण नारायण की निर्जीव देह कांधे पर ले।
छह महीने तक लिये फिरे बलभद्र मोह ममता उर ले॥९॥
आत्मबोध जब हुआ द्रव्य परिणमन स्वतंत्र पूर्ण जाना।
मृत्यु अवश्यम्भावी है भवितव्य यही था यह माना॥१०॥
श्री कृष्ण का इसपर्वत पर अन्तिम संस्कार करके।
श्री बलराम चले तप करने उर में शुद्ध भाव धरके॥११॥
यहां अनेको राजाओं ने मुनि पद अंगीकार किया।
भावशुभाशुभ से विहीन निज आत्म तत्व स्वीकार किया॥१२॥
सम्यक्दर्शन की महिमा का यहाँ गूँजता है जयगान।
रत्नत्रय की परम भक्ति की देखो महिमा महा महान॥१३॥
पर्वत की ऊंचाई भक्त जनों की मन हर्षाती है।
कठिन चढ़ाई भव्य जनों को सहज सरल हो जाती है॥१४॥
पर्वत पर उत्कीर्ण मूर्तियाँ अनुपम सुन्दर भव्य ललाम।
चरणचिन्ह मुनियों के शोभित परम पूज्य पावन अभिराम॥१५॥
नीचे जिन मंदिर अनेक है वृषभादिक सन्मति प्रभु के।
भव्य दिगंबर प्रतिमाओं से युक्त जिनेन्द्र महाविभु के॥१६॥
ऊँचा मानस्तंभ श्वेत शुभ जिन प्रतिमाओं से शोभित।
तीर्थकर प्रभु के दर्शन से हो जाता है मन मोहित॥१७॥
इन सबका पूजन बंदन भव भव के पातक हरता है।
इनके पद चिन्हों पर जो चलता वह निज पद वरता है॥१८॥
तुंगीगिरि की तीर्थयात्रा भाव सहित यदि हो जाए।
शुद्ध भाव निज उर में जागे शुद्धातम पद दर्शाए॥१९॥
इसीलिये प्रभु भक्ति भाव से करता हूँ जिनवर पूजन।
विषय कषाय रहित हो जाऊँ. यही भावना है भगवन॥२०॥
पाप पुण्य क्षय करने को पुरूषार्थ जगे मेरे मन में।
शुद्ध आत्मा को ही पाऊँ अब न फिरूँ प्रभु भव वन में॥२१
पूर्ण ध्रौव्य चैतन्य तत्व निज का पल पल बहुमान करूँ॥
सर्व विभावों से सुदूर हो जिन अनुभव रस पान करूँ॥२२।
इसी क्षेत्र मे मुक्ति प्राप्त करने का स्वामी यतन करूँ।
अष्ट स्वगुण सिद्धों के पाऊँ मुक्ति गगन में ही विचरूँ॥२३

ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

तुंगीगिरि के क्षेत्र की महिमा अगम अपार।
भाव सहित जो पूजते वे होते भव पार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमन्त्र-ॐ ह्रीं श्री तुंगीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्र पूजन

श्री गजपंथ शैल अति पावन देवों द्वारा पूज्य ललाम।
यहाँ सप्त बलभद्रो ने मुनि बनकर पाया शिवपुर धाम॥
आठ कोटि मुनियों की शुभ निर्वाण भूमि सुन्दर अभिराम।
श्री मुनियों के चरण कमल में भक्ति भाव से करूँ प्रणाम॥
अष्ट द्रव्य से पूजन करने आया हूँ बनने निष्काम।
निजस्वभाव का जाप करूँ प्रभु पाऊँ मैं निज में विश्राम॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः,
ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

शुभ भावों का सलिल नीर प्रभु चरणों में करता अर्पण।
शुद्ध भाव की मुझे प्राप्ति हो यही प्रार्थना है भगवान॥
श्री गजपंथ शिखर पर्वत की भाव सहित करता पूजन।
आठ कोटि मुनियों की अनुपम सिद्ध भूमि को है वंदन॥१॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

शुभ भावों का शीतल चंदन चरणो में करता अर्पण।
शुद्धातम की मुझे प्राप्ति हो यही प्रार्थना है भगवन॥श्री॥२॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

शुभ भावों के उज्जवल अक्षत चरणाम्बुज में है अर्पण।
निज स्वरूप की मुझे प्राप्ति हो यही विनय है हे भगवन॥श्री.३॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि।

Scanned by CamScanner

शुभ भावों के पुष्प सुरभिमय चरणाम्बुज में है अर्पणा।
महाशील की मुझे प्राप्ति हो यही विनय है हे भगवन॥
श्री गजपंथ शिखर पर्वत की भाव सहित करता पूजन।
आठ कोटि मुनियों की अनुपम सिद्धभूमि को है वंदन॥४॥
ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
शुभ भावों के शुचिमय चरू पदकमलो में करता अर्पण।
क्षुधा व्याधि से रहित बनूँ मैं यही याचना है भगवन॥श्री५॥
ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
शुभ भावों के रत्नदीप पद कमलों में करता अर्पण।
आत्म ज्ञान की मुझे प्राप्ति हो यही याचना है भगवान॥श्री६॥
ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
शुभ भावों की दिव्य धूप पद पंकज में सादर अर्पण।
अष्ट स्वगुण की मुझे प्राप्ति हो यही कामना है भगवन॥श्री७॥
ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।
शुभ भावों के सरस पुण्य फल पद पंकज में है अर्पण।
महामोक्ष की मुझे प्राप्ति हो यही कामना है भगवन॥श्री८॥
ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
शुभ भावों का भव्य अर्घ्य पद पंकज में सविनय अर्पण।
सिद्ध स्वपद की मुझे प्राप्ति हो यही भावना है भगवन॥श्री९॥
ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।
वंदूँ विजय, अचल, सुधर्म अरू सुप्रभ श्री सुदर्शन नाथ।
नंदी, नंदीमित्र सप्त बलभद्रो को मैं नाऊँ माथ।
जल फलादि वसुद्रव्य अर्घ्य ले भाव सहित पूजूँ मनलाय॥
प्राप्त स्वरूपाचरण करूँ फिर पाऊँ यथाख्यात शिवधाम॥१०॥
ॐ ह्रीं श्री विजय, अचल, सुधर्म, सुप्रभ, सुदर्शन, नंदी, नंदीमित्र सप्त बलभद्र एवं आठ कोटि मुनिचरणकमलेभ्यो अर्घ्यं नि.।

जयमाला

मुक्तिपंथ गजपंथ को वंदू बारम्बार।
भक्ति सहित दर्शन करूँ मन वचकाय संवार॥

Scanned by CamScanner

जंबूदीप सु भरत क्षेत्र मे है महाराष्ट्र प्रान्त अति ख्यात।
नासिक पंचवटी के उत्तर में म्हसरूल ग्राम विख्यात॥१॥
श्री गजपंथ शिखर निर्वाण क्षेत्र को मैं बंदूँ दिनरात।
मैं भी परम मोक्ष पद पाऊँ अष्ट कर्म सब करूँ विघात॥२॥
यहाँ तपस्या करके मुक्त हुए बलभद्र मुनेश्वर सात।
आठ कोटि मुनियों ने पाया महामोक्ष का पूर्ण प्रभात॥३॥
उन्नत पर्वत सरल चढ़ाई इसकी शोभा है न्यारी।
भव्य दिगंबर जिन प्रतिमायें अति प्राचीन मनोहारी॥४॥
श्री मुनियों के चरण चिन्ह से पर्वत शोभा पाता है।
दर्शन पूजन अर्चन करके मन प्रसन्न हो जाता है॥५॥
वंदूँ विजय अचल, सुधर्म अरू सुप्रभ श्री सुदर्शन राज।
नंदी, नंदीमित्र आदि मुनि सम श्रेणी में रहे विराज॥६॥
इस पर्वत पररत्नत्रय का घोष गूंजता आठों याम।
इस पर्वत से ऋषि मुनियों ने पाया सिद्धपुरी का धाम॥७॥
निज स्वरूप का आश्रय लेने वाले मुनिवर सिद्ध हुए।
जो विभाव में अटके वे ही भव बंधन से बद्ध हुए॥८॥
बलभद्रों के चरण कमल पर बलि बलि जाऊँ बारंबार।
शिवपुर गामी श्री मुनियों के चरणाम्बुज लूँ उर में धार॥९॥
निज स्वभाव की अनुपम महिमा निजस्वभाव की हो जयकार।
निज स्वभाव साधन से होते जीव सदा भव सागर पार॥१०॥
इसीलिये वसुद्रव्य अर्घ्य चरणों में प्रभुवर लाया हूँ।
श्री गजपंथ शैल पूजन कर मन में अति हर्षाया हूँ॥११॥
नीचे जिन मंदिर विशाल हैं ऊंचा मानस्तंभ महान।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर प्रतिमायें बन्दूँ धर ध्यान॥१२॥
भाव शुभाशुभ का अभाव कर मैं अरहन्त बनूँ हे देव।
सातों बलभद्रों के पथ पर चलकर सिद्ध बनूँ स्वयंमेव॥१३॥
ज्ञानावरणादिक आठों कर्मों का पूर्ण विनाश करूँ।
अजर अमर अविकल अविनाशी शास्वत मोक्ष प्रकाश करूँ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय पूर्णार्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

सिद्ध क्षेत्र गजपंथ की महिमा अगम अपार।
निज स्वभाव जो साधते वे होते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः

श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

कुन्थलगिरि पर्वत की पावन सिद्ध भूमि सुन्दर सुखकार।
श्री देशभूषण कुलभूषण मुनि की तपोभूमि साकार॥
बाल ब्रम्हचारी मुनि द्वय की गूँज रही है जय जयकार।
भाव सहित पूजन करता हूँ मन वचकाय त्रियोग संवार॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

जन्म जरा मृतु क्षय करने को देता हूँ जल की त्रयधार।
दर्शन ज्ञान स्वभावी शुद्धातम की महिमा अपरम्पार॥
सिद्ध क्षेत्र कुन्थलगिरि वंदूँ, वंदूँ शुद्ध स्वभाव महान।
श्री देशभूषण कुलभूषण मुनिवर हुए सिद्ध भगवान॥१॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

भव आताप नशाने, लाया मलयागिरि चन्दन तरूसार।
एक शुद्ध परिपूर्ण आत्मा के ही गाऊँ मंगलचार॥
सिद्धक्षेत्र कुन्थलगिरि बंदूँ वंदूँ शुद्ध स्वभाव महान।
श्री देशभूषण कुलभूषण मुनिवर हुये सिद्ध भगवान॥२॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

अक्षय पद पाने को लाया मैं अखण्ड तन्दुल साकार।
निजस्वरूप का अवलंबन ले हो जाऊँ भवदधि से पार॥सिद्ध३॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि.।

Scanned by CamScanner

काम व्याधि की दाह मिटाने लाया सुरतरु पुष्प सँवार।
अविनाशी अविकल पद पाऊँ नष्ट करूँ मैं सकल विकार।।
सिद्धक्षेत्र कुन्थलगिरि वंदूँ, वंदूँ शुद्ध स्वभाव महान।
श्री देशभूषण कुलभूषण मुनिवर हुये सिद्ध भगवान।।४।।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
क्षुधा रोग के नाश हेतु लाया नैवेद्य सु विविध प्रकार।
परम तृप्त निज पद दो स्वामी यही विनय है बारंबार ।।सिद्ध५।।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
मोह महातम नाश हेतु लाया हूँ यह दीपक तमहार।
केवलज्ञान प्रकाश प्राप्तकर सिद्ध स्वपद पाऊँ सुखकार।सिद्ध६।।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
अष्ट कर्म विध्वंस हेतु लाया सुगंधमय धूप निहार।
शुक्ल ध्यान की परमज्वाल में दग्ध करूँ भववन दुखकार।सिद्ध.७।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्मदहनाय धूपं नि.।
महामोक्ष फल प्राप्ति हेतु लाया हूँ भावपूर्ण फलसार।
सादि अनंत सिद्धपद पाऊँ अतुल अरूपी ध्रुव अविकार।सिद्ध.८।।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
निज अनर्घ्य पद प्राप्ति हेतु लाया हूँ वसुविध अर्घ्य सवार।
सिद्धशिला पर सदा विराजूँ सिद्ध स्वपद की जय जयकार।।सिद्ध९।।
ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तय अर्घ्यं नि.।
श्री देशभूषण कुलभूषण चरण कमल बंदूँ हर्षाय।
बाल ब्रम्हचारी भवतारी त्रिभुवन पूज्य महा मुनिराय।।
निज स्वभाव साधन के द्वारा पाया सिद्धस्वपद सुखदाय।
जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य लेभाव सहित पूजूँ मनलाय।।सिद्ध१०।।
ॐ ह्रीं श्री देशभूषण कुलभूषण चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं नि.।

जयमाला

मन वच काया पूर्वक वन्दन करूँ त्रिकाल।
सब सिद्धो को नमन कर अब गाऊँ जयमाल।।

Scanned by CamScanner

जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र में महाराष्ट्र है प्रान्त प्रवर।
इसमें कुन्थलगिरि पर्वत है अनुपम सिद्ध क्षेत्र सुन्दर॥१॥
इस गिरि पर जिन मन्दिर अति प्राचीन अनेकों हैंशोभित।
भाव पूर्ण जिन बिम्बो के दर्शन से उर होता पुलकित॥२॥
वृषभादिक श्रीवीर जिनेश्वर के जिन बिम्ब अनेक महान।
भाव सहित दर्शन पूजन से होता शुद्धातम का भान॥३॥
वंशस्थलगिरि और वंशगिरि वंशाचल भी इसके नाम।
श्री कुन्थगिरि या कुन्थलगिरि अति प्राचीन मुक्ति का धाम॥४॥
ऋषण अजित प्रभु शान्ति कुन्थुअर नेमि वीरप्रभु सीमंधर।
बाहुबली नन्दीश्वर आदिक अरू मुनि द्वय मंदिर सुन्दर॥५॥
मानस्तंभ श्वेत धवलोज्जवल समवशरण रचना मनहर।
सल्लेखना भूमि मुनियो की बंदन करूँ भाव शुभ धर॥६॥
राजा थे सिद्धार्थनगर के क्षेमंकर, रानी विमला।
पुत्र देशभूषण कुलभूषण कमलोत्सवा बहिन सफला॥७॥
विद्याध्ययन हेतु दोनों भेजे गुरू सागरघोष निकट।
सर्वकला विद्या सम्पन्न हुए वर्षो में वीर सुभट ॥८॥
तरुण हुए गृह आए नगरी स्वागत करके हुए निहाल।
राजमहल की खिड़की पर निज भगिनी देख हुए बेहाल॥९॥
मोहित हुए रूप लख दोनों ने ही मन में किया विचार।
इसके संग विवाह करेंगे उर में छाया काम विकार॥१०॥
जब कन्या का परिचय पूछा भगिनी कमलोत्सवा सगी।
हाय हाय धिक्कार हमें है कैसी खोटी कुमति जगी॥११॥
तत्क्षण ही भव से विरक्त हो ब्रम्हचर्य उर में धारा।
माता पिता से आज्ञा ले लघुवय में मुनिपद स्वीकारा।॥१२॥
दोनों कठिन तपस्या करके निज स्वभाव में लीन हुए।
ऋद्धि सिद्धियों से शोभित हो तप में परम प्रवीण हुए॥१३॥
रामचन्द्र सीता लक्ष्मण ने वंशस्थल वन दिया आहार।
देवो द्वारा पंचाश्चर्य हुए थे गूंजी जय जयकार॥१४॥
वंशगिरी पर एक रात्रि दोनों मुनि हुए आत्म तल्लीन।
कायोत्सर्ग ध्यान मुद्रा में अंतिम धर्म ध्यान में लीन॥१५॥

Scanned by CamScanner

अग्नि कुमार जाति का व्यंतर पूर्व भवों का बैर विचार।
श्री मुनियों पर किया घोर उपसर्ग भयानक बारम्बार॥१६॥
तत्क्षण रामचन्द्र लक्ष्मण ने करके धनुषों की टंकार।
किया महा उपसर्ग निवारण धर्म भावना उर में धार॥१७॥
धनुषों की टंकारों से भयभीत हो गया वह व्यंतर।
जान इन्हें बलभद्र और नारायण भागा अपने घर॥१८॥
ध्यानारूढ़ श्री मुनिवर ने शुक्ल ध्यान पहिला ध्याया।
क्षपक श्रेणि चढ़ मोह क्षीणकर दूजा शुक्ल ध्यान पाया॥१९॥
चार घातिया कर्मदग्ध कर पाया अनुपम केवलज्ञान।
नव केवल लब्धियां प्राप्तकर हुए देव सर्वज्ञ महान॥२०॥
गंध कुटी देवों के द्वारा तत्क्षण निर्मित हुई मनोज्ञ।
दे उपदेश भव्य जीवों को तुमने किया मोक्ष के योग्य॥२१॥
इसपर्वत से शेष कर्म हर सिद्ध शिला आसीन हुए।
जा लोकाग्र शिखर पर दोनों पूर्ण शुद्ध स्वाधीन हुए॥२२॥
इनके चरणों के पूजन से पुण्य सातिशय मिलते हैं।
निज स्वभाव अवलम्बन से ही कर्म घातिया जलते हैं॥२३॥
मैं भी कब यह अवसर पाऊँ सम्यक्दर्शन प्रगटाऊँ।
सम्यक्ज्ञान चरित्र धारकर निज सर्वोत्तम पद पाऊँ॥२४॥
पाप पुण्य का रूप जानकर शुद्ध भाव उर में लाऊँ।
निज स्वभाव साधन से स्वामी पर विभाव सब विनशाऊँ॥२५॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

कुन्थलगिरि के क्षेत्र की महिमा अगम अपार।
निज स्वरूप की शक्ति से हो जाते भव पार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री कुन्थलगिरि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः।

Scanned by CamScanner

श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

नगर अचलपुर की ईशान दिशा में मुक्तागिरि सुखकार।
साढ़े तीन कोटि मुनियों का सिद्धक्षेत्र यह मंगलकार।।
बावन जिन गृह बने मनोरम सुन्दर पर्वत वंदनवार।
श्री मुनियों के चरण-चिन्ह से शोभित जग में जय-जयकार।।
श्री मुनियों की जय-जयकार, अरहंतों की जय- जयकार।
श्री सिद्धों की जय-जयकार, मुक्तागिरि की जय-जयकार।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवोषट् ।
ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

सम्यक् निर्मल नीर मनोहर हृदय कटोरी में भर लाय।
जन्म जरा मृतु नाश हेतु मैं भाव सहित पूजूँ जिनराय।।
मुक्तागिरि से सिद्ध हुये हैं साढ़े तीन कोटि मुनिराय।
श्रीमुनि चरण कमल मैं बन्दू राग द्वेष परिणति मिट जाय।।१।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

निज गुण चंदन दाह निकंदन लाया हूँ शीतल सुखदाय।
नाशहेतु संसार ताप दुख भाव सहित पूजूँ जिनराय।।मुक्ता.२।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

उज्जवल महा मनोरम अक्षत शुभ्र हृदय आनन्द प्रदाय।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु मैं भाव सहित पूजूँ जिनराय।।मुक्ता.३।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।

सुन्दर दिव्य पुष्प अति कोमल चरण चढ़ाऊँ मैं हर्षाय।
कामबाण के नाश हेतु मैं भाव सहित पूजूँ जिनराय।।मुक्ता४।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

शुभ नैवैद्य चढ़ाऊँ प्रभुवर अपना चेतन भाव जगाय।
क्षुधा रोग के नाश हेतु मैं भाव सहित पूजूँ जिनराय।।मुक्ता५।।

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

Scanned by CamScanner

ज्ञानदीप के नव प्रकाश से मेरा मिथ्यातम मिट जाय।
मोह तिमिर के नाश हेतु मैं भाव सहित पूजूँ जिनराय॥
मुक्तागिरि से सिद्ध हुये हैं साढ़े तीन कोटि मुनिराय।
श्री मुनि चरण कमल मैं बन्दूँ राग द्वेष परिणति मिट जाये॥६॥
ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।
पावन धूप चढ़ा विभाव के पूर्ण नाश का करूँ उपाय।
अष्टकर्म के नाश हेतु मैं भाव सहित पूजूँ जिनराय॥मुक्ता॥७॥
ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि. सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि.
सहज भाव संपति फल द्वारा मिले मुक्ति मंगल शिवदाय।
परम मोक्षफल प्राप्ति हेतु मैं भाव सहित पूजूँ जिनराय॥मुक्ता.८॥
ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य ले नाचूँ गाऊँ हिय हर्षाय।
निज अर्घ्य पद प्राप्ति हेतु मैं भाव सहित पूजूँ जिनराय॥मुक्ता९॥
ॐ ह्री श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्य नि.।

जयमाला

मुक्तागिरि से मुक्ति प्राप्त करने का उर में भाव जगे।
तत्वों के सम्यक् निर्णय से समकित हो मिथ्यात्व भगे॥१॥
श्रेष्ठ तपस्या भूमि यही है कोटि कोटि मुनिराजों की।
पर की चिन्ता त्याग जगाई चिन्ता निज के काजों की॥२॥
शुक्ल ध्यान से कर्म जलाये निजानन्द रसलीन हुए।
जा पहुँचे लोकाग्र शिखर पर सिद्ध शिला आसीन हुए॥३॥
होते अतिशय यहाँ सदा ही केशर वर्षा होती है।
पर्वत की अनुपम शोभा मन की कालुषता धोती है॥४॥
दुंदुभि देव बजाते नित ही नृत्य गान मंगल करते।
भविजन दर्शन पूजन करके अशुभ अमंगल को हरते॥५॥
विमल घोष सम्यक्दर्शन का यहाँ सुनाई देता है।
रत्नत्रय की महिमा का फल यहाँ दिखाई देता है॥६॥

Scanned by CamScanner

पावन चरण चिन्ह मुनियों के मोक्ष मार्ग दिखलाते हैं।
भव्य जिनालय चौबीसों तीर्थंकर का यश गाते हैं॥७॥
पद्मासन खड़गासन प्रतिमायें मनोज्ञ मंगलकारी।
कलापूर्ण नयनाभिराम नासाग्र दृष्टि अति सुखकारी॥८॥
भाव विभोर भक्ति में तन्मय जो जिनवर गुण गाते हैं।
सम्यक्पथ पर चलकर निश्चित परम सौख्य पद पाते हैं॥९॥
सिद्ध क्षेत्र का पूजन बंन्दन अतुलित महापुण्य दाता।
जो स्वभाव का आश्रय लेता सादि अनंत मोक्ष पाता॥१०॥
यही भावना फिर आकर हम बावन जिन मन्दिर पूजै।
इस पर्वत की पूजन द्वारा शुद्ध भाव मन में गूंजे॥११॥
वृषभ आदि चौबीस जिनेश्वर के चरणों में नित बंदन।
सारे संकट दूर हो गये करके जिन पूजन दर्शन॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

मुक्तागिरि के क्षेत्र की महिमा अगम अपार।
मन वच तन जो पूजते वे होते भव पार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाजंलि क्षिपामि

जाप्य-ॐ ह्रीं श्री मुक्तागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

जम्बूद्वीप सुभरत क्षेत्र के, मध्य देश में अति पावन।
सिद्धक्षेत्र सोनागिरि पर्वत, दिव्य मनोहर मनभावन॥
एक शतक जिन मन्दिर शोभित, चंदाप्रभु का समवशरण।
वृषभादिक महावीर जिनेश्वर, की प्रतिमाओं को वन्दन॥
नंग अनंग कुमार मुक्त हो, निजानन्द रस हुए मगन।
साढ़े पाँच कोटि मुनियों ने, तप कर पाया मुक्ति सदन॥
रत्नत्रय केवल से पाया सिद्ध किलाका सिंहासन।
श्री मुनिचरण कमल नित बदूँ, धन्य-धन्य पूजन दर्शन॥

ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

Scanned by CamScanner

अष्टक

हिंसादिक पाँचों पापों में, सदा लीन होता आया।
पाप पंक से रहित अवस्था, पाने को प्रभु जल लाया॥
सिद्धक्षेत्र सोनागिरि वन्दूँ, वन्दूँ चन्दाप्रभु जिनराज।
नंग अनंग कुमार सु पूजूँ साढ़े पाँच कोटि मुनिराज॥१॥
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

पंचेन्द्रिय के पंच विषय का राग कभी न हटा पाया।
विषय भोग का ताप मिटाने, शीतल चन्दन लाया॥सिद्धक्षेत्र.२॥
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

पंच प्रमादों में फँसकर भवसागर में गोता खाया।
अप्रमत्त की मिले अवस्था इसीलिये अक्षत लाया॥सिद्धक्षेत्र.३॥
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

क्रोध मान माया लोभादिक, भाव किए भव दुख पाया।
सर्व कषायों का अभाव करने को दिव्य पुष्प लाया॥सिद्धक्षेत्र४॥
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

सप्तव्यसन का राग न छूटा, भक्ष्य अभक्ष्य सभी खाया।
अघतृष्णा की अगिन् बुझाने, शुभ नैवेद्य नाथ लाया॥सिद्धक्षेत्र५॥
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

इसअनादि मिथ्यात्व पाप का, अन्त न अब तक कर पाया।
मोह तिमिर अज्ञान हटाने, ज्ञान दीप पाने आया ।सिद्धक्षेत्र.६॥
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।

अष्टकर्म ज्ञानावरणादिक का बन्धन कम कर पाया।
घाति अघाति कर्मक्षय करने ध्यान धूप पाने आया।सिद्धक्षेत्र.७॥
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।

भव तन भोगों से विरक्ति का, कुछ पुरूषार्थ न कर पाया।
विगत कर्म मल रागद्वेष से रहित, सुफल पाने आया॥सिद्धक्षेत्र.८॥
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षपद प्राप्ताय फलं नि.।

पंच महाव्रत पंच समिति त्रय गुप्ति न धारण कर पाया।
निज आत्मानुभूति पाने को, चरण शरण में मैं आया॥सिद्धक्षेत्र९॥
ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

सोनागिरि के क्षेत्र की महिमा अपरम्पार।
भावसहित वन्दन करूँ, मन वच काय सँवार॥

परम पूज्य पावन सोनागिरि पर्वत सिद्धक्षेत्र सुखकार।
साढ़े पाँच कोटि मुनिवर की गूँज रही है जय जयकार॥१॥
इस पर्वत पर ही आया था, चन्द्राप्रभु का समवशरण।
नंग अनंग कुमार दीक्षा लेकर निज की हुए शरण॥२॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित रत्नत्रय का ले अवलम्बन।
पर द्रव्यों का मोह त्यागकर निज स्वभाव में हुए मगन॥३॥
कोटि कोटि मुनि निजस्वरूप लख निज में ही तल्लीन हुए।
ज्ञानानन्दी सिद्धस्वभावी शुद्धातम में लीन हुए॥४॥
इस पर्वत पर कठिन तपस्याकरके सिद्धलोक पाया।
जा पहुँचे लोकाग्र शिखर पर परम अनन्त स्वपद पाया॥५॥
चन्दाप्रभु के समवशरण की शोभा पर्वत पर न्यारी।
श्री बाहुबलि का दर्शन कर, हर्षित होते नर नारी॥६॥
चन्दाप्रभु की भव्य मनोहारी, विशाल प्रतिमा सुखकार।
नंग अनंग कुमारों की प्रतिमाएं, शोभित मंगलकार॥७॥
साढ़े पाँच कोटि मुनियों के चरण चिन्ह अनुपम मनहार।
भाव सहित दर्शन करने से होता है आनन्द अपार॥८॥
यहां पिसनहारी का मन्दिर श्रम का पाठ पढ़ाता है।
ऊँचा मानस्तम्भ श्वेत लख मान गलित हो जाता है॥९॥
नीचे शान्ति कुन्थु अर जिनकी प्रतिमाएं है अति प्राचीन।
जिनबिम्बों के दर्शमात्र से हो जाते हैं पाप विलीन॥१०॥
ऋषण अजित सम्भव अभिनन्दन सुमति पद्मप्रभु सुपार्श्ववंत।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस प्रभु वासुपूज्य जिन विमल अनन्त॥११॥
धर्म शान्ति प्रभु कुन्थु अरहजिन मल्लि मुनिसुव्रत नमि भगवंत।
नेमि पार्श्व प्रभु महावीर का शासन जग में जय जयवंत॥१२॥
तीर्थङ्कर चौबीस जिनेश्वर के जिन मन्दिर बने अनेक।
जिनप्रतिमा दर्शन से होता निकट भव्य को स्वपर विवेक॥१३॥

Scanned by CamScanner

भव्य दिगम्बर जिन प्रतिमा की पूजन से होता आनन्द।
पुण्योपार्जन हो जाता है होती सभी कषायें मन्द॥१४॥
पाप-पुण्य से रहित अवस्था आत्माश्रय से होती है।
कर्मों की कालुषता धुलती तब पंचम गति होती है॥१५॥
शान्त मौन नासाग्रदृष्टि जग को सन्देश सुनाती है।
शुद्धत्रिकाली ध्रुव स्वभाव की उर में महिमा आती है॥१६॥
सिद्धस्वपद पाकर यह चेतन कृतकृत्य हो जाता है।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर परमेश्वर हो जाता है॥१७॥
तुम समान पद मैं भी पाऊँ यही भावना भाता हूँ।
निजस्वरूप का दर्शन करने चरण शरण में आता हूँ॥१८॥

ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि.।

सोनागिरि पर्वत का दर्शन, पूजन महासौख्यदाता।
श्रीमुनि पदचिन्हों पर चलने वाला महामोक्ष पाता॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री सोनागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र पूजन

जयति जयति जय सिद्धक्षेत्र जय श्री सिद्धवरकूट महान।
साढ़े तीन कोटि मुनियों ने पाया सिद्ध स्वपद निर्वाण॥
दो चक्री दश काम कुमारों की गूंजी है जय जयकार।
निज स्वरूप का ध्यान किया तो शीघ्र हुए भवसागरपार॥
भक्ति भाव से प्रेरित होकरपूजन करने आया आज।
निज स्वभाव की सहज प्राप्ति हो यह पूजन फल दो जिनराज॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Scanned by CamScanner

अष्टक

निर्मल उज्जवल उत्तम शीतल रेवा का जल लाया हूँ।
जन्म मरण का नाश कराने प्रभु चरणों में आया हूँ।।
सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट से दो चक्री दश कामकुमार।
साढ़े तीन कोटि मुनियों ने पाया सिद्ध स्वपद सुखकार।।१ ।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
तन की तपन बुझाने वाला बावन चन्दन लाया हूँ।
यह अनादि भव् ताप मिटाने प्रभु चरणों में आया हूँ।।सिद्ध.२ ।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।
उत्तम उज्जवल अक्षत तंदुल पुँज मनोहर लाया हूँ।
निज अखंड अक्षय पद पाने प्रभु चरणों में आया हूँ।।सिद्ध३ ।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.
विविध भाँति के पुष्प सुगन्धित दिव्य मनोरम लाया हूँ।
कामरोग का मैल मिटाने प्रभु चरणों में आया हूँ।।सिद्ध.४ ।।
ॐ ह्री श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
क्षुधारोग से पीड़ित होकर मन भावन चरु लाया हूँ।
आधि व्याधि का नाश कराने प्रभु चरणों में आया हूँ।।सिद्ध५ ।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्ध क्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
मैं अनादि मिथ्यात्व नष्ट करने को दीपक लाया हूँ।
मोह महातम का अँधियारा दूर हटाने आया हूँ।। सिद्ध.६ ।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
शुभ भावों की धूप सुगन्धित हर्षित होकर लाया हूँ।
शुद्ध भाव से अष्ट कर्म अरि पर जय पाने आया हूँ।।सिद्ध ७।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।
सादि अनंत सिद्ध पद पाऊँ इसीलिये फल लाया हूँ।
महामोक्ष की अभिलाषा पूरी करने आया हूँ।।सिद्ध८ ।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
निज अनर्घ पदवी पाने को अर्घ मनोहर लाया हूँ।
राग द्वेष का नाम मिटाने प्रभु चरणों में आया हूँ।।सिद्ध९ ।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

सनत कुमार चक्रवर्ती अरू मधवा चक्री को वन्दन।
कामदेव दस के चरणों का करता शत शत अभिनंदन॥
चक्रवर्ती पद त्यागा त्यागे महामंडलेश्वर के पद।
मुनि बन रत्नत्रय धारण कर ध्याया केवल शुद्ध स्वपद॥
श्री सिद्धवरकूट क्षेत्र से निज स्वभाव से युक्त हुए।
साढ़े तीन कोटि ऋषि मुनिवर भव सागर से मुक्त हुए॥
इन चरणों में कोटि कोटि वन्दन करता हूँ हे स्वामी।
अर्घ्य सुमन अर्पित करता हूँ ऋषिवर महामोक्षगामी॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री सनतकुमार मघवा चक्रवर्ती एवं दस कामदेव एवं साढ़े तीन कोटि मुनि चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं नि.।

जयमाला

मध्यदेश में रेवा तट पर श्री सिद्धवर कूट प्रधान।
पश्चिम में कावेरी बहती दक्षिण में रेवा छविमान॥

लघु पर्वत मालाओं से शोभित यह सुन्दर क्षेत्र विशाल।
वन तरुओं की शोभा अनुपम पुष्प सुगन्धित मधुर रसाल॥१॥
हैं अनेक जिन मंदिर सुन्दर उच्च शिखर ध्वज से शोभित।
दिव्य वेदियां बनी अनेकों कला पूर्ण जन मन मोहित॥२॥
भव्य दिगंबर जिन प्रतिमा नासाग्र दृष्टि मंगल कारी।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर का दर्शन भव भय हारी॥३॥
मुक्ति प्राप्त मुनियों के चरण चिन्ह की शोभा है न्यारी।
दो चक्री दश कामकुमारों के पद कमल मनोहारी॥४॥
साढ़े तीन कोटि मुनिवर की तपोभूमि है यह पावन।
सिद्ध भूमि है मुक्ति भूमि है पुण्य भूमि का मन भावन॥५॥
सनतकुमार और मघवा चक्री स्वरूप में लीन हुए।
कामदेव दश ध्रुव स्वभाव के आश्रय से स्वाधीन हुए॥६॥
निज स्वभाव की जलधारा से जन्ममरण का नाश किया।
केवलज्ञान सूर्य के द्वारा जग को ज्ञान प्रकाश दिया॥७॥
उसी ज्योति की एक किरण बस पाने को मैं आया हूँ।
निज स्वरूप को पर स्वरूप से भिन्न जानने आया हूँ॥८॥

Scanned by CamScanner

पर परिणति से अरूचि हो उठे रूचि जागे निज परिणति की।
चक्र चार गतियों का नाशूँ अभिरूचि हो पंचम गति की॥९॥
समकित दीप जले अंतर में रत्नत्रय को अपनाऊँ।
द्रव्यभाव संयम मय मुनि बनने का कब अवसर पाऊँ॥१०॥
भाव शुभाशुभ से ऊपर उठ शुद्ध भाव का ध्यान करूँ।
निज आत्मानुभूति के द्वारा मैं अपना कल्याण करूँ॥११॥
एक दिवस ऐसा आ जाये मैं भी पा जाऊँ निर्वाण।
सादि अनंत सुखी हो जाऊँ सिद्ध बनूँ प्रभु दो वरदान॥१२॥
सम्यक्दर्शन की महिमा का आज मुझे आया बहुमान।
रत्नत्रय के अवलम्बन से पाऊँ तुम सम मुक्ति महान॥१३॥
भाव सहित दर्शन पूजन कर मन मे छाया अति आनंद।
जन्म-जन्म के पातक नाशे हुई कषायें सारी मंद॥१४॥
सिद्धक्षेत्र का दर्शन बंदन अतुलित महापुण्य दाता।
जो स्वभाव का आश्रय लेता वहीं मोक्ष पद को पाता॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

श्री सिद्धवरकूट की महिमा अगम अपार।
मन वच तन जो पूजते वे होते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्र जय कुम्भकरण मुनिवर जय जय।
इन्द्रजीत मुनि सम श्रेणी से मुक्त हुए प्रभुवर जय जय॥
आदिनाथ प्रभु को विशाल प्रतिमा उत्तुंग मनोहर जय।
बावनगजा प्रसिद्ध जगत में भाववंदना पूजन जय॥

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

Scanned by CamScanner

अष्टक

मन वच काया शुद्धि पूर्वक उज्जवल जल लेकर आऊँ।
अजर अमर अनिश्वर पद हित जन्ममरण पर जय पाऊँ॥
श्री चूलगिरि पर्वत पूजूँ आदिनाथ प्रभु को ध्याऊँ।
इन्द्रजीत श्री कुम्भकर्ण मुनि सिद्ध हुए बलि बलिजाऊँ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
भव आताप नष्ट करने को मलयागिरि चन्दन लाऊँ।
राग शुभाशुभ टाल हृदय से शुद्धभाव निजगुण गाऊँ॥श्री॥२॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु उत्तम अक्षत लेकर आऊँ।
चारों गति का भ्रमण मिटाऊँ शुद्ध बुद्ध प्रभु बन जाऊँ॥श्री॥३॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।
काम रोग का मूल नशाने संवर पुष्प सुमन लाऊँ।
आश्रव बंध मार्ग तज तप से करूँ निर्जरा सुख पाऊँ॥४॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
क्षुधा ज्वाल की आग बुझाने निज स्वभाव शीतल पाऊँ।
शुद्ध भाव नैवेद्य प्राप्त करने को चरणों में आऊँ॥श्री.॥५॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
घोर तिमिर मिथ्यात्व मोह को दूर करूँ समकित पाऊँ।
ज्ञानदीप की अमर ज्योति ले रत्नत्रय पथ पर आऊँ॥श्री.६॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
घाति अघाति नष्ट कर्मों की धूप चूर कर ले आउँ।
ध्यान अग्नि में उसे जलाकर कर्म रहित शिव पद पाऊँ॥श्री ७॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।
अन्तिम शुक्ल ध्यान फल द्वारा महामोक्षफल पा जाऊँ।
सिद्ध शिला सिंहासन बैठ, सादि अनन्त स्वपद पाऊँ॥श्री.८॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ्य प्रभु के चरणों में नित ध्याऊँ।
निज अर्घ्य पदवी को पाने मैं जिनराज शरण आऊँ॥श्री९॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

रावण के लघु भ्राता कुम्भकर्ण को जब वैराग्य हुआ।
पंच महाव्रत धारण करके निज स्वरूप ही मान्य हुआ॥
पंचेन्द्रिय जय कर स्वभाव के अवलम्बन से युक्त हुए।
इस पर्वत पर कर्म नाश कर भव बन्धन से मुक्त हुए॥
श्री चूलगिरि से ही तुमने तप कर सिद्धस्वपद पाया।
आज तुम्हारे चरण कमल की पूजन कर अति हर्षाया॥१०॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो श्री कुम्भकर्णचरणकमलेभ्यो अर्घ्यं नि.।
रावण के सुत इन्द्रजीत को जब विराग मन में आया।
जिन दीक्षा ले मुनि पद धारा दादश तपकरसुख पाया॥
एक दिवस इस पर्वत पर आ प्रतिमा योग किया धारण।
शुक्ल ध्यान से योग निरोध किया हो गए तरण तारण॥
श्री चूलगिरि से ही तुमने तप करसिद्ध स्वपद पाया।
आज तुम्हारे चरण कमल की पूजन कर अति हर्षाया॥११॥
ॐ ह्रीं श्री चूलगिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो श्री इन्द्रजीतचरण कमलेभ्यो अर्घ्यं नि.।

जयमाला

भरत क्षेत्र के मध्यदेश में बड़वानी है नगर सुजान।
बड़वानी के निकट क्षेत्र है बावनगजा प्रसिद्ध महान॥
श्री चूलगिरि पर्वत सुन्दर पावन सिद्ध भूमि सुखधाम।
उन्नत पर्वतमालाओं से शोभित दृश्यावलि अभिराम॥१॥
उच्च शिखर पर इन्द्रजीत अरू कुम्भकरण के चरण ललाम।
विनय पूर्वक करूँ वंदना मैं भी पाऊँ शिवपुर धाम॥२॥
चौरासी फीट की प्रभु प्रतिमा अतिप्राचीन मनोज्ञ विशाल।
आदि देव के दर्शन मात्र से हो जाते हैं भव्य निहाल॥३॥
आदिनाथ प्रभु की महान प्रतिमा के दर्शन सुखदायक।
कायोत्सर्ग ध्यानमुद्रा में लीन जगत के अधिनायक॥४॥
चौबीसी के प्रथम तीर्थङ्कर श्री ऋषभदेव स्वामी।
कर्मभूमि के आदि प्रवर्त्तक जगउद्धारक गुणनामी॥५॥

Scanned by CamScanner

नीचे जिन मन्दिर मनोज्ञ बहु मानस्तंभ मनोहारी।
वृषभादिक चौबीस जिनेश्वर को प्रतिमायें सुखकारी॥६॥
त्रिभुवनपति त्रैलोक्यतिलक चूड़ामणि तीन लोक वंदित।
सुर नर मुनि पूजित हे स्वामी शत इन्द्रों से अभिनंदित॥७॥
भाव भक्ति पूर्वक हे स्वामी इन चरणों में आया हूँ।
अशरण शरण जान तुमको प्रभु अर्घ्य सुमन यह लाया हूँ॥८॥
सम्यक् ज्योति प्रकाशित कर दो मेरे अन्तर में स्वामी।
पूजन का फल भेद ज्ञान दो आदीश्वर अंतर्यामी॥९॥
पंच पाप से दूररहूँ मैं पंच प्रमाद न हृदय धरूँ।
चार कषायो पर जय पाऊँ राग द्वेष को शीघ्रहरूँ॥१०॥
रत्नत्रय पथ पर चलकर मैं केवलज्ञान प्रकाश करूँ।
निजानंद रस लीन रहूँ मैं सिद्ध लोक में वास करूँ॥११॥

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि.।

बावनगजा चूलगिरि पूजन जो जन करते मन वचकाय।
जन्म जन्म के पातक क्षय हो रोग द्वेष परिणति मिट जाय॥

इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपामि्

जाप्य- ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

जम्बूद्वीप सुभरत क्षेत्र में मध्यप्रदेश प्रान्त सुन्दर।
सिद्धक्षेत्र पावागिरि पावन ऊन ग्राम के निकट प्रवर॥
नदी चेलना के तट पर है छोटा सा पर्वत मनहर।
स्वर्णभद्र आदिक मुनियों ने पाया मुक्ति स्वपद सुखकर॥
शान्ति कुन्थु अरनाथ आदि श्री महावीर प्रभु को बन्दूँ।
श्री मुनिचरण कमल वन्दन कर निज स्वभाव ही अभिनंदू॥

ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

Scanned by CamScanner

निज स्वभाव साधन जल द्वारा मिथ्या भ्रान्ति हटाऊँ मैं।
सम्यक्दर्शन की महिमा पा तीनों व्याधि मिटाऊँ मैं॥
सिद्धक्षेत्र पावागिरि बन्दूँ स्वर्णभद्र आदिक मुनि चार।
शान्ति कुन्थु अरनाथ आदि श्री महावीर की जय जयकार॥१॥
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
निज स्वभाव साधन का चन्दन ले शीतलता पाऊँ मैं।
सम्यकज्ञान प्रकाश प्राप्तकर भव संताप मिटाऊँ में ॥सिद्ध.॥२॥
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।
निज स्वभाव साधन अक्षत ले प्रभु अक्षय पद पाऊँ मैं।
ले सम्यक्चारित्र भाव मय चहुँगति भ्रमण मिटाऊँ मैं॥सिद्ध.॥३॥
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि.।
निज स्वभाव साधन पुष्पों से अन्तर द्वारा सजाऊँ मैं।
रत्नत्रय के सुमन प्राप्तकर काम कुशील नशाऊँ मैं॥४॥
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
निज स्वभाव साधन के ही नैवेद्य हृदय में लाऊँ मैं।
तप संयम की दिव्यप्रभा से क्षुधा विकार नशाऊँ मैं॥सिद्ध.॥५॥
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
जिन स्वभाव साधन की निर्मल दीपक ज्योति जगाऊँ मैं।
परम दिगम्बर वीतराग बन ज्ञान सूर्य प्रगटाऊँ में ।सिद्ध.॥६॥
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं. नि.।
निज स्वभाव साधन की शुचिमय ध्यान धूप उरलाऊँ मैं।
शुक्ल ध्यान की महाज्वाल में आठों कर्म जलाऊँ मैं ।सिद्ध.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्मदहनाय धूपं नि.।
निज स्वभाव साधन के द्वारा महामोक्ष फल पाऊँ मैं।
आत्म तत्व अवलोकन करके सिद्ध स्वपद फल पाऊँ मैं।सिद्ध.८॥
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
निज स्वभाव साधन का अर्घ्य मनोरम लेकर आऊँ मैं।
भवनाशिनी भावना भाऊँ निज अर्घ्य पद पाऊँ मैं॥सिद्ध.९॥
ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

स्वर्णभद्र आदिक चारों नृप धन वैभव से हुए उदास।
भेद ज्ञान की निधि पाते ही उरमें जागा दृढ़ विश्वास॥
राज्य पाट तज पंच महाव्रत धारणकर मुनि बने प्रधान।
पावागिरि पर्वत पर आकर किया भावपूर्वक निज ध्यान॥
उग्र तपस्या द्वारा कर्मो का विनाश कर हुए महान।
जय जय चरमशरीरी ऋषिवर स्वामी हुए सिद्ध भगवान॥
जल फलादि वसु द्रव्य सजाकर अर्घ्य समर्पित करताहूँ।
तुम समान शिवपद पा जाऊँ यही भाव उर भरता हूँ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री स्वर्णभद्र आदि चतुर्मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं नि.।

जयमाला

पावागिरि के क्षेत्र से, गए मोक्ष मुनि चार।
निजस्वरूप का ध्यान धर पाया सौख्य अपार॥

पावागिरि की महिमा सुनकर मैं दर्शन करने आया हूँ।
मैं स्वर्णभद्र आदिक मुनिवर को शीश झुकाने आया हूँ॥१॥
पर्वत पर जिन मन्दिर अनेक जिन प्रभु की महिमा गाते हैं।
मुनियों के चरण चिन्ह अनुपम उर में वैराग्य जगाते हैं॥२॥
श्री शान्ति कुन्थु अर तीर्थकर की अतिप्राचीन भव्य प्रतिमा।
लख मानस्तंभ मनोहर प्रिय उर में छाई प्रभु की महिमा॥३॥
नीचे मन्दिर में महावीर स्वामी की भव्य मूर्ति सुन्दर।
संवत बारह सौ बावन की निर्मित है भावपूर्ण मनहर॥४॥
तुमने मुनिवर जिन दीक्षा ली भव देह भोग से हो विरक्त।
पर का अवलम्बन छोड़ दिया ' शुद्धातम के हो गये भक्त॥५॥
निजका चिंतन निजका मंथन निजका दर्शन निजका पूजन।
निज परिणति में रम गये आप निज के स्वरूप में हुए मगन॥६॥
घनघोर तपस्या के द्वारा चारों कषाय का कर अभाव।
दृढ़ शुक्ल ध्यान बल के द्वारा प्रगटाया अपना निज स्वभाव॥७॥
सर्वज्ञ हुए केवलज्ञानी त्रिभुवनपति जय जयवंत हुए।
अरु नाश कर्मो का नाश किया प्रभु परमसिद्ध भगवंत हुए॥८॥

Scanned by CamScanner

हे गुरूवर चरण पखार आज मेरे उर में आनंद हुआ।
शुद्धातम की महिमा आई तो दूर शोक दुःख द्वन्द हुआ॥९॥
वृषभादिक वीर जिनेश्वर के चरणों में शीश झुकाता हूँ।
भव तन भोगो से हो विरक्ति मैं यही भावना भाता हूँ॥१०॥
द्वादश भावना चिंतवन कर वैराग्य भाव उर में लाऊँ।
पावन रत्नत्रय को पाकर प्रभु मैं भी सिद्ध स्वपद पाऊँ॥११॥
यह सिद्धक्षेत्र निर्वाण भूमि इसकी महिमा का पार नहीं।
जो निज स्वभाव की ध्याता है उसका रहना संसार नहीं॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री पावागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

पावागिरि के क्षेत्र की बोलो जय जयकार।
मन वच तन जो पूजते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलिक्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री पावगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

सिद्धक्षेत्र द्रोणागिरि सुन्दर महिमामय अति सुखकारी।
ऋषि मुनियों की सिद्ध भूमि यह मंगलमय भव भयहारी॥
परम तपस्या करके श्री गुरूदत्तादिक मुनि मुक्त हुए।
इसी क्षेत्र से शुक्ल ध्यानधर मुक्तिरमा से युक्त हुए॥
द्रोणागिरि की पूजन करके आत्म ध्यान महिमा आये।
तत्व बोध की जगे भावना निज चेतन पद दरशाए॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौष्ट्।
ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र अत्रमम् सन्निहितो भव भव वषट्।

शुभ भावों के उज्जवल जल से चिर मिथ्यात्व न धुल पाया।
निर्मल सम्यक्दर्शन पाने प्रभु चरणों में मैं आया॥
द्रोणागिरि पर्वत मैं वंदूँ वदूँ गुरदत्तादि मुनीश।
सिद्धक्षेत्र की पूजन करके सिद्ध स्वपद पाऊँ जगदीश॥१॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि

Scanned by CamScanner

शुभ भावों के चंदन से प्रभु भव आताप न मिट पाया।
निज सम्यक्चारित्र प्राप्तिहित प्रभु चरणों में आया॥
द्रोणागिरि पर्वत में वंदूँ वंदूँ गुरदत्तादि मुनीश।
सिद्धक्षेत्र की पूजन करके सिद्धस्वपद पाऊँ जगदीश॥२॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि.।
शुभ भावों के अक्षत से प्रभु भव का भ्रमण न हर पाया।
निज सम्यक् चारित्र प्राप्तिहित प्रभु चरणों में मैं आया॥द्रोणा.३॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।
शुभ भावों के पुष्प सजाए काम व्यथा न मिटा पाया।
पर अहिंसा तप संयम पाने प्रभु चरणों में मैं आया॥द्रोणा.॥४॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
शुभ भावों के नैवेद्यों से क्षुधा तृषा न बुझा पाया।
बाइसों परिषह पर जय पाने प्रभु चरणों में आया॥द्रोणा.५॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरिसिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
शुभ भावों के दीपक से अज्ञान तिमिर न हटा पाया।
निज पर भेदज्ञान पाने को अब प्रभु चरणों में आया॥द्रोणा.॥६॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
शुभ भावों की धूप जलाई किन्तु न कर्म जला पाया।
आत्म ध्यान से अष्टकर्म हरने प्रभु चरणों में आया॥द्रोणा.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।
शुभ भावों का फल स्वर्गादिक पाया मोक्ष नहीं पाया।
रत्नत्रय फल महामोक्ष पाने प्रभु चरणों में आया॥द्रोणा.॥८॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि.।
शुभ भावों के अर्घ्य बनाए किन्तु न पद अनर्घ्य पाया।
शुद्ध स्वभाव प्राप्त करने को मैं प्रभु चरणों में आया॥द्रोणा.॥९॥
ॐ ह्रीं श्री द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पदप्राप्तये अर्घ्यंनि.।

जयमाला

द्रोणागरि के शीश पर श्री मुनिचरण महान।
भाव सहित वंदन करूँ पाऊँ सम्यक्ज्ञान।

Scanned by CamScanner

फलहोड़ी बड़गाँव सु पश्चिम द्रोणागिरि पर्वत मनहार।
गुरदत्तादिक ऋषीश्वरों ने पाया सिद्ध स्वपद अविकार॥१॥
जब वैराग्य जगाउर मैं संयम ले तप को अपनाया।
छटे सातवें गुणस्थान में झूले निज पद को ध्याया॥२॥
क्षपकश्रेणि पर चढ़े मोह अंतमुहूर्त्त में क्षीण किया।
गुणस्थान तेरहवां पाया पद सर्वज्ञ प्रवीण लिया॥३॥
शुक्ल ध्यान का अंतिम पाया इस पर्वत पर ही ध्याया।
देह मुक्त हो सर्व कर्महर सिद्ध स्वपद को प्रगटाया॥४॥
श्री मुनियों की श्रेष्ठ तपस्या भूमि द्रोणागिरि की जयजय।
रत्नत्रय को धारण करने वाले मुनिवर हुए अभय॥५॥
जिन मंदिर सुन्दर विशाल है चरण चिन्ह मुनिराजों के।
दशों दिशाओं में गुन्जित है जयकारे ऋषिराजों के॥६॥
है छब्बीस जिनालय सुन्दर एक गुफा है अतिप्राचीन।
वृषभादिक चौबीसों तीर्थकर की प्रतिमाएँ है प्राचीन॥७॥
गुरूदत्तादि मुनीन्द्रों के है चरण चिन्ह पावन सुललाम।
सम श्रेणी में नाथ विराजे निज स्वभाव में आठों याम॥८॥
व्रती आश्रम विद्यालय छात्रालय संस्थाएँ उत्तम।
तत्वज्ञान होते ही जाता है अनादि का मिथ्यातम॥९॥
मिथ्यातम जाने पर होता अविरति का अभाव इक दिन।
अविरति जाने पर प्रमाद का क्षय हो जाता है छिन छिन॥१०॥
फिर प्रमाद के जाने पर होता कषाय का पूर्ण अभाव।
चउकषाय के जाने पर होता कुछ दिन में योग अभाव॥११॥
योग अभाव पूर्ण होने पर सिद्ध स्वपद मिलता सुखदाय।
इसीलिए सम्यक्दर्शन की प्रभु महिमा गाऊँ हर्षाय॥१२॥
श्री द्रोणागिरि वंदन करके मैं अपना कल्याण करूँ।
परम शान्त रस पाने को प्रभु निज स्वरूप का ध्यान धरूँ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

श्री द्रोणागिरि क्षेत्र की महिमा अपरम्पार।
निज स्वभाव जो सधते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वाद : पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री द्रोणागिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

Scanned by CamScanner

श्री रेशंदीगिरि नयनागिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

रशंदीगिरि नयनागिरि निर्वाण भूमि सुन्दर अनुपम।
वरदत्तादिक पंचमुनीश्वर मोक्ष गए हर कर भवतम॥
परम तपस्या द्वारा मुनियों ने पाया था केवलज्ञान।
अन्तिम शुक्ल ध्यान से पाया सिद्धालय बन्दूँ धर ध्यान॥
रेशंदीगिरि क्षेत्र को बंदू बारम्बार।
नयनों में आनन्द का आया पावन ज्वार॥

ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः,।
ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्र अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट।

अष्टक

निर्मल जल की भेंट चढ़ाकर जन्म मरण का करूँ अभाव।
क्रोध लोभ मद माया नाशूँ नाशूँ सकल विकारी भाव॥
रेशंदीगिरि नयनागिरि के सिद्ध क्षेत्र को करूँ प्रणाम।
वरदत्तादिक पंच महाऋषियों को मैं बन्दू वसुयाम॥१॥

ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जल नि.।

शीतल चंदन भेंट चढ़ाकर भव पीड़ा का करूँ अभाव ।
मिथ्याभ्रम की तपन मिटाऊँ नाशूँ सकल विकारी भाव ॥रेशंदी॥२॥

ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

उज्जवल अक्षत भेंट चढ़ाकर भवसागर का करूँ अभाव।
पंचपापमय अविरति त्यागूँ नाशूँ सकल विकारी भाव॥रेशंदी॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीरेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदं प्राप्तये अक्षतं नि.।

पुष्प सुकोमल भेंट चढ़ाकर पाऊँ अपना शील स्वभाव।
पंच प्रमाद नष्ट कर स्वामी नाशूँ सकल विकारी भाव॥रेशंदी॥४॥

ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.

शुभ नैवेद्य समर्पित करके क्षुधा व्याधि का करूँ अभाव।
प्रभु पच्चीस कषायें नाशूँ नाशूं सकल विकारी भाव ॥रेशंदी.५॥

ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

Scanned by CamScanner

तमहर दीपक ज्योति जलाकर मोहतिमिर का करूँ अभाव।
केवलज्ञान प्राप्तिहित स्वामी नाशूँ सकल विकारी भाव॥
रेशंदीगिरि नयनागिरि के सिद्धक्षेत्र को करूँ प्रणाम।
वरदत्तादिक पंच महाऋषियों को मैं बंदूँ वसुयाम॥.६॥
ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि.।
धूप सुगंधित भेंट चढ़ाकर अष्टकर्म का करूँ अभाव।
योग अभाव हेतु हे स्वामी नाशूँ सकल विकारी भाव॥रेशदी॥७॥
ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि।
मृदुल कल्पतरू फल अर्पितकर रागद्वेष का करूँ अभाव।
महा मोक्षफल पाने को मैं नाशूँ सकल विकारी भाव॥रेशंदी.॥८॥
ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
जल फलादि वसुद्रव्य अर्घ्य दे नाश करूँ मैं सर्व विभाव।
निजस्वभाव साधन के द्वारा नाशूंसकल विकारी भाव॥रेशंदी.९॥
ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्य नि.।

जयमाला

रेशंदीगिरि क्षेत्र को मैं बन्दूँ हर्षाय।
जिनप्रतिमा जिनराज़ सम पूजूँ मन वच काय॥

रेशंदीगिरि पर आया था पार्श्वनाथ का समवशरण।
सुन उपदेश भव्य जीवों ने सहज किया सम्यक्त्व वरण॥१॥
इस पर्वत पर है पैंतीस जिनालय अति पावन सुन्दर।
नीचे सतरह जिन मन्दिर हैं दो है जल मंदिर मनहर॥२॥
सलिल सरोवर में जल मंदिर महावीर जिन स्वामी का।
नव शोभायमान जिन मंदिर पार्श्वनाथ जगनामी का॥३॥
संवत ग्यारह सौ तक की जिन प्रतिमाएँ प्राचीन महान।
संवत पंदरह सौ तक के जिन मंदिर है अतिशोभावान॥४॥
त्रेपन जिन मंदिर महान अरू चरण कमल ऋषिराजों के।
मुक्त हुए जो इसी क्षेत्र से निकट गए जिनराजों के॥५॥
श्रीवरदत्त श्रीगुणदत्त सु इन्द्रदत्त के चरण कमल।
चरण मुनीन्द्रदत्त के वंदूँ सागरदत्त चरण निर्मल॥६॥

Scanned by CamScanner

तुमने हे/ऋषिराज अनूठा पंच महाव्रत धार लिया।
भव तन भोगों से उदास हो मुनि पद अंगीकार किया॥७॥
परम यशस्वी परम तपस्वी निज स्वभाव आधार लिया।
केवलज्ञान पूर्ण प्रगटाया घाति कर्म संहार किया॥८॥
अंतिम शुक्ल ध्यान धर रेशंदीगिरि से शिवपद प्रगटाया।
मुक्ति वधू के कंत हो गए इन्द्रादिक ने यश गाया॥९॥
जय जय पंच महा ऋषि जय जय पंच परावर्तननाशी।
अर्घ्य सुमन अर्पित करता हूँ परमपूज्य प्रभु अविनाशी॥१०॥
नाथ आपके चरण चिन्ह पर चलने का निश्चय कर लूँ।
भेदज्ञान की महाशक्ति पा भव सागर के दुख हर लूँ॥११॥

ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

रेशंदीगिरि क्षेत्र की महिमा अपरम्पार।
निज स्वरूप जो ध्यावते हो जावे भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री रेशंदीगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः

श्री कुन्डलपुर सिद्धक्षेत्र पूजन

श्री केवली श्रीधरस्वामी के चरणों में करूँ नमन।
कुन्डलपुर से निज स्वभाव के द्वारा पाया मुक्ति सदन॥
महावीर स्वामी की अनुपम प्रतिमा को मेरा वंदन।
कुन्डलगिरि कुन्डलाकार पर्वत को सादर अभिनंदन॥
जल फलादि वसुद्रव्य सजाकर करूँ हृदय से मैं पूजन।
शुद्धभाव की प्राप्ति हेतु प्रगटाऊँ मैं सम्यक्दर्शन॥

ॐ ह्रीं श्रीः कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषटः।
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्र अत्र मम् सन्निहितों भव भव वषट्।

Scanned by CamScanner

अष्टक

वर्धमान सागर का निर्मल प्रासुक जल लेकर आऊँ।
जन्म मरण भव व्याधि मिटाऊँ शुद्ध स्वरूप सहज पाऊँ॥
कुन्डलपुर से सिद्ध हुए श्रीधर स्वामी को करूँ नमन।
महावीर बाबा के चरणाम्बुज में है सादर वंदन॥१॥
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
मलयागिरि का बावन चंदन शुद्ध भावना से लाऊँ।
भव ज्वाला की अग्नि बुझाऊं शुद्ध स्वरूप सहज पाऊँ॥कुन्डल॥२॥
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनायचंदनं नि.।
मुक्ता सम उज्जवल अखंड तंदुलनिज भावों के लाऊँ
भव भंवरों से ऊपर उछलूँ शुद्ध स्वरूप सहज पाऊँ॥कुन्डल॥३॥
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि।
कल्पवृक्ष के सुमन सजाकर शुद्ध भावना से लाऊँ।
काम भाव पर जय पाने को शुद्ध स्वरूप सहज पाऊँ॥कुन्डल४॥
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
षट रस व्यंजन जो अतृप्ति के कारण हैं लेकर आऊँ।
क्षुधारोग पर जय पाने को शुद्ध स्वरूप सहज पाऊँ॥कुन्डल॥॥५॥
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.नि।
भेदज्ञान का दीप जलाकर सम्यक्दर्शन प्रगटाऊँ।
दुर्लभ तिमिर निवारण कारण शुद्ध स्वरूप सहज पाऊँ॥कुन्डल.६॥
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं. नि.।
शुक्ल ध्यान की धूप जलाऊँ श्रेणी चढ़ ऊपर जाऊँ।
अष्ट कर्म का ईंधन डालूँ शुद्ध स्वरूप सहज पाऊँ॥कुन्डल.७॥
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।
घाति अघाति कर्म सब क्षयकर सिद्धशिला वैभव पाऊँ।
परममोक्षफल पाने को प्रभु शुद्ध स्वरूप सहज पाऊँ॥कुन्डल८॥
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्ष फल प्राप्तये फलं नि.।
अष्टम वसुधा का अनर्घ्य पद पाने भाव अर्घ्य लाऊँ।
अष्टस्वगुण की प्राप्ति हेतु मैं शुद्धस्वरूप सहज पाऊँ॥कुन्डल.९॥
ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

कुन्डलगिरि कुन्डलपुरी कुन्डल के आकार।
भव्य जिनालय शोभते महिमा अपरम्पार॥

जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र में मध्यप्रदेश प्रान्त सुन्दर।
है दमोह से बीस मील पर कुण्डलपुर पर्वत मनहर॥१॥
नीचे वर्धमान सागर है जलमंदिर शोभित पावन।
बीस जिनालय पंक्ति सरोवरतट पर हैं अति मन भावन॥२॥
पर्वत पर चालीस जिनालय है शोभायमान अनुपम।
वीतराग निर्ग्रन्थ दिगम्बर जिन प्रतिमाएँ सुन्दरतम॥३॥
कुन्डल के आकार मनोहर पर्वत शोभाशाली है।
सिद्धभूमि श्रीधर केवलि स्वामी की वैभवशाली है॥४॥
महावीर बाबा का जिन मन्दिर है अति प्राचीन महान।
प्रभु प्रतिमा नासाग्र दृष्टि पद्मासन है सुविशाल प्रधान॥५॥
दूर दूर से भक्त सहस्त्रों आते है प्रति मास यहाँ।
जिन प्रतिमाओं के दर्शन कर प्रगटाते उल्लास यहाँ॥६॥
आत्मज्ञान मय मनोकामना भव्यों की पूरी होती।
भौतिक विषय कामनाओं से भव्यों की दूरी होती॥७॥
नीचे मानस्तंभ सुशोभित जिन मंदिर है अति प्राचीन।
बनी धर्मशाला अनेक हैं उदासीन आश्रम सु नवीन॥८॥
सरस्वती भण्डार तथा विद्यालय है विद्या का धाम।
निशदिन जय जयकार गूँजता पाते पथिक पूर्ण विश्राम॥९॥
वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर की प्रतिमाओं को बन्दन।
चरण चिन्ह केवली श्रीधरस्वामी को मैं करूँ नमन॥१०॥
तत्वज्ञान की दिव्य भावना अन्तर में जाग्रत हो देव।
भेद ज्ञान की ज्योति जगे प्रभु मिथ्यातम क्षय हो स्वयमेव॥११॥
सम्यक्दर्शन की निधि पाऊँ ऐसी कृपा करो स्वामी।
तुम समान मैं भी बन जाऊँ यह वर दो अंतर्यामी॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

कुण्डलपुर के क्षेत्र की महिमा अगम अपार।
निज स्वरूप जो साधते हो जाते भव पार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री कुण्डलपुर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री मथुरा चौरासी सिद्धक्षेत्र पूजन

चरम केवली जम्बूस्वामी के चरणों में करूँ प्रणाम।
महावीर के समवशरण में दीक्षित ही पहुँचे शिवधाम॥
मथुरा सिद्धक्षेत्र से पाया शुक्लध्यान धर पद निर्वाण।
परम पारिणामिक स्वभाव से किया आत्मा का कल्याण॥
चरण कमल जम्बूस्वामी के पूजूं नाथ त्रियोग संवार।
अजितनाथ प्रभु की पूजन कर पाऊँ ज्ञानानन्द अपार॥

ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतरसंवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

जन्म मरण दुख क्षय करने को यमुना जल प्रासुक लाऊ।
सत्स्वरूप हूँ स्वतः सिद्ध हूँ शुद्ध भावना उर भाऊँ॥
परम केवली जम्बूस्वामी के चरणाम्बुज करूँ नमन।
मथुरा सिद्धक्षेत्र से पाया तुमने स्वामी मुक्ति गगन॥१॥

ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

भव आताप नाश करने को निज शीतल चन्दन लाऊं।
चिदानन्द आनन्द कन्द हूँ शुद्ध भावना उर भाऊँ॥परम॥२॥

ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

भव समुद्र से पार उतरने निज अक्षत तरणी लाऊँ।
एक शुद्ध हूँ पूर्ण बुद्ध हूँ शुद्ध भावना उर भाऊँ॥ परम.॥३॥

ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

Scanned by CamScanner

प्रबल काम की आग बुझाने भाव सुमन लेकर आऊँ।
ज्ञानानन्दी ज्ञानमात्र हूँ शुद्ध भावना उर भाऊँ॥
परम केवी जम्बूस्वामी के चरणाम्बुज करूँ नमन।
मथुरा सिद्धक्षेत्र से पाया तुमने स्वामी मुक्ति गगन॥४॥
ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
क्षुधा व्याधि को शीतल करने निज नैवेद्य सरस लाऊँ।
निर्विकार हूँ सहज स्वरूपी शुद्ध भावना उरभाऊँ॥परम.॥५॥
ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्या क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
मोह महातम भ्रम हरने को दिव्यज्ञान दीपक लाऊँ।
परम श्रेष्ठ सर्वज्ञ स्वरूपी शुद्ध भावना उर भाऊँ॥परम.॥६॥
ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाथ दीपं नि.।
अष्टकर्म जंजाल मिटाने धूप अनूप श्रेष्ठ लाऊँ।
सहजानन्दी ज्ञान स्वरूपी शुद्ध भावना उर भाऊँ॥परम.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं नि.।
मुक्तिभवन की सुखशैय्या पाने को शुचिमय फललाऊँ।
त्रैकालिक ज्ञायक स्वरूप हूँ शुद्ध भावना उरभाऊँ॥परम.॥८॥
ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
निज अनर्ध्य पद पाने को मैं अष्ट-प्रकार अर्घ्य लाऊँ।
पंचदेह से मैं विमुक्त हूँ शुद्ध भावना उरभाऊँ॥परम.॥९॥
ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

मथुरा चौरासीपुरी सिद्धक्षेत्र सुखधाम।
जम्बूस्वामी केवली अंतिम करूँ प्रणाम॥

राजगृही के अर्हददाससेठ के नन्दन जम्बूकुमार।
मात जिनमती के सुपुत्र थे बचपन में आया सुविचार॥१॥
देख विराग वृत्ति दीक्षामय माता पिता ने किया विवाह।
पद्म, कनकश्री, विनय, रूपश्री कन्याओं से हो निर्वाह॥२॥
चारों नव वधुओं ने अपनी रूपराशि का किया प्रकाश।
किन्तु कुमार न हुए प्रभावित भव भोगों से रहे उदास॥३॥

Scanned by CamScanner

भव तन भोग प्रचुर दुखदायी आत्म स्वभाव परम सुखमय।
निज का अवलम्बन लेने से क्षय हो जाते भव के भय॥४॥
विद्युत चोर श्रवणकर वार्ता इस भव से हो गया विरक्त।
माँ जिनमती तथा व धुएं भी हुईं विराग भाव से युक्त॥५॥
गौतम गणधरस्वामी को जिस दिन पावन निर्वाण हुआ।
श्री सुधर्म आचार्यदेव को उस दिन केवलज्ञान हुआ॥६॥
नाथ सुधर्माचार्य केवली से दीक्षित हो गये उदार।
विपुलाचल पर दीक्षा ले ली अपने उपादान अनुसार॥७॥
मुनिबन जम्बूस्वामी ने ही निज का ही पावन ध्यान किया।
मुक्त सुधर्माचार्य हुए उस दिन ही केवलज्ञान लिया॥८॥
फिर चालीस वर्ष तक प्रभु ने कर विहार उपदेश दिया।
शुद्ध सिद्धसम सभी जीव हैं यह पावन संदेश दिया॥९॥
कर विहार मथुरा में आए योग निरोध किया अनुपम।
जा पहुँचे त्रैलोक्य शिखर पर पाया सिद्ध स्वपद सुखतम॥१०॥
चरणचिन्ह जम्बूस्वामी के वंदनीय सुर नर द्वारा।
जो निज को जपता है उसकी कट जाती है भवकारा॥११॥
मन्दिर अति प्राचीन मनोरम जिन प्रतिमाओं से शोभित।
अजितनाथ प्रभु यहाँ मूलनायक हैं परम पवित्र अमित॥१२॥
वृषभादिक श्री वीरजिनेश्वर की प्रतिमाएँ यहाँ अनेक।
श्री सप्तऋषियों की प्रतिमा वंदन करता मस्तक टेक॥१३॥
मरीरोग से जब मथुरा का जन जीवन विध्वंस हुआ।
आते ही सातों ऋषियों के मरीरोग सब ध्वंस हुआ॥१४॥
महाऋद्धिधारी मुनियों के चरण कमल बन्दू तिहुँकाल।
मथुरा सिद्धक्षेत्र को वदूँ निज स्वभाव जप बनूँ निहाल॥१५॥
मानस्तंभ विशाल बना है जिन प्रभुका गाता यशगान।
धन वैभव परिवार सुलभ है दुर्लभ है बस आतमज्ञान॥१६॥
ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम सुन्दर विद्यालय मनहर सुविशाल।
यहाँ धर्मशाला अनेक हैं जय ध्वनि होती है तिहुँकाल॥१७॥
जय जय जम्बूस्वामी जय जय जय जय सप्त ऋषीश्वर नाथ।
निज स्वभाव की महाशक्ति से पाऊँ नाथ आपका साथ॥१८॥

ॐ ह्रीं मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि।

Scanned by CamScanner

सिद्धक्षेत्र मथुरापुरी त्रिभुवन में विख्यात।
भाव सहित जो पूजते पाते समकित प्रात।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री मथुरा सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री राजगृही सिद्धक्षेत्र पूजन

पंच पहाड़ी राजगृही के सिद्धक्षेत्र को करूँ नमन।
जो मुनिवर निर्वाण गए हैं उनके चरणों में वंदन।।
मुनिसुव्रत की गर्भ जन्म तप ज्ञान भूमि को करूँ नमन।
महावीर के समवशरण का विपुलाचल पर अभिनंदन।।
क्षेत्र राजगृह की पूजन कर निज स्वरूप को करूँ नमन।
रत्नत्रय की तरणी चढ़कर मुक्ति वधू का करूँ वरण।।

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

निर्मल निर्झर का प्रासुक जल ले चरणों में आया हूँ।
जो मुनि मोक्ष गए उनके पद कमल पूजने आया हूँ।।
मुनिसुव्रत श्री महावीर की महिमा गाने आया हूँ।
पंच पहाड़ी राजगृही की पूजन करने आया हूँ।।१।।

ॐ ह्रीं राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशानाय जलं नि.।

शुभ परिणामों का चंदन लेकर चरणों में आया हूँ।
जो मुनि मोक्ष गए उ नके प द कमल पूजने आया हूँ।।मुनि.२।।

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

शभ्र अखंडित तंदुल पावन ले चरणों में आया हूँ।
जो मुनि मोक्ष गए उनक पद कमल पूजन आया हूँ।।मुनि.३।।

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्ष ·भ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं नि.।

दिव्य सुगंधित पुष्प सजाकर मैं चरणों में आया हूँ।
जो मुनि मोक्ष गए उनके पद कमल पूजने आया हूँ।।मुनि

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि

Scanned by CamScanner

विविध रम्य नैवेद्य मनोहर प्रभु चरणों में लाया हूँ।
जो मुनि मोक्ष गए उनके पद कमल पूजने आया हूँ॥
मुनिसुव्रत श्री महावीर की महिमा गाने आया हूँ।
पंच पहाड़ी राजगृही की पूजन करने आया हूँ॥५॥
ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
रत्नदीप सम उज्जवल दीपक प्रभु चरणों में लाया हूँ।
जो मुनि मुक्त हुए उनके पद कमल पूजने आया हूँ॥ मुनि.६॥
ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनायदीपं नि.।
धूप सुवासित दश धर्मों की प्रभु चरणों में लाया हूं।
जो मुनि मुक्त हुए उनके पद कमल पूजने आया हूँ।मुनि.७॥
ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं नि..।
पुण्योदय से शुभ भावों के फल लेकर प्रभु आया हूँ।
जो मुनि मुक्त हुए उनके पद कमल पूजने आया हूँ॥मुनि.८॥
ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
ज्ञान भाव के अर्घ्य अनूठे प्रभु चरणों में लाया हूँ।
जो मुनि मुक्त हुए उनके पद कमल पूजने आया हूँ॥मुनि.९॥
ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

पंच शैलपुर नाम है राजागृही सुप्रसिद्ध।
गिरिव्रज और कुशाग्रपुर भी है नाम प्रसिद्ध॥
विपुलाचल अरू रत्नगिरि गिरि वैभार महान।
श्रमण स्वर्णगिरि उदयगिरि सभी मुक्ति के धाम॥

जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र में मगध देश हे अतिसुन्दर।
विपुल राजधानी का जगमठा वैभव से संपन्न नगर॥१॥
पंचपहाड़ी की शोभा से स्वर्ग लोक भी लज्जित है।
धर्मतीर्थ है धर्म क्षेत्र है धर्म भाव से सज्जित है॥२॥
विपुलाचल पर महावीरस्वामी ने दिया प्रथम उपदेश।
समवशरण की रचना अनुपम परमौदारिक प्रभु का नश॥३॥

Scanned by CamScanner

श्रोता मुख्य नृपति श्रेणिक थे गणधर श्री गौतमस्वामी।
मुख्य आर्यिका सती चंदना वक्ता वर्धमान नामी॥४॥
भाव सहित मैं विपुलाचल पर्वत को वंदन करूँ त्रिकाल।
महावीर के चरणाम्बुज में सदा झुकाऊँ अपना भाल॥५॥
सुन्दर नूतन समवशरण दर्शन कर जागा उर में हर्ष।
जिन प्रतिमा की पूजन करके करूँ आत्मा का उत्कर्ष॥६॥
रत्नागिरि पर्वत पर जिन मंदिर प्राचीन भव्य रमणीय।
चरण पादुका जिनमुनियों की दर्शनीय शोभा कमनीय॥७॥
उदयगिरी की शोभा अनुपम चरण पादुकाएं पावन।
पार्श्वनाथ आदिक जिन प्रतिमाएँ शोभित है मन भावन॥८॥
स्वर्णगिरी पर ऋषभदेव की भव्य मनोहर जिन प्रतिमा।
चरणपादुका जिन मुनियों की अनुपम है जिनकी महिमा॥९॥
है वैभारगिरी पर जिन मंदिर जिन बिम्ब महा प्राचीन।
परम तपस्या भूमि महामुनियों की है यह सदा नवीन॥१०॥
मुनिसुव्रत की गर्भ जन्म तप ज्ञान भूमि मंगलकारी।
पिता सुमित्र मात पद्मा के नंदन प्रभु भव तमहारी॥११॥
श्रावण कृष्णा द्वितिया के दिन हुआ गर्भ कल्याण महान।
शुभ बैशाख कृष्ण द्वशमी को जन्म महोत्सव हुआ प्रधान॥१२॥
शुभ वैशाख कृष्ण दशमी को तपो महोत्सव हुआ विशाल।
शुभ वैशाख कृष्ण नवमी को मिला ज्ञान साम्राज्य विशाल॥१३॥
मुनिसुव्रत बीसवें जिनेश्वर को मैं वंदू बारम्बार।
पावन करके राजगृही को किया सकल जग का उपकार॥१४॥
प्रतिनारायण जरासिन्ध अर्ध चक्री की रजधानी।
पर नारायण श्री कृष्ण के द्वारा हता महामानी॥१५॥
तीर्थकर तेईसों के शुभ समवशरण आए अनुपम।
ऋषभदेव को छोड़ सभी की दिव्य ध्वनि गूंजी सुखतम॥१६॥
श्री सुधर्मास्वामी केवलि मुक्त हुए विपुलाचल से।
मुक्त हुए धनदत्त सुमंदर साधु मेघरथ इस थल से॥१७॥
प्रीतंकर ने महावीर से दीक्षा ले निज ध्यान किया।
विद्युच्चर ने घोर तपस्या करके पद निर्वाण लिया॥१८॥

Scanned by CamScanner

एक धीवरी नाम पूतगंधा ने लिया समाधिमरण।
यहाँ अनेकों ऋषि मुनियों ने किया भाव से तपश्चरण॥१९॥
एक भव्य मेंढ़क ने शुभ भावों से मर सुरपद पाया।
जन्मभूमि जम्बूस्वामी की मथुरा से शिवपद पाया॥२०॥
अभयकुमार सुवारिषेण आदिक को तपोभूमि पावन।
ऊष्ण नीर के अद्भुत कुंड यहाँ झरते हैं मन भावन॥२१॥
विपुलाचल पर चार जिनालय रत्नागिरि पर भी है तीन।
स्वर्णगिरी पर दो जिन मन्दिर उदयगिरी परभी है तीन॥२२॥
है वैभारगिरी परमंदिर एक तथा चौबीसी भव्य।
नीचे भी दो मन्दिर सुन्दर इनमें जिन प्रतिमाएँ दिव्य॥२३॥
इन सबको मैं पूजन करके तत्वज्ञान अभ्यास करूँ।
सम्यक्दर्शन का वैभव पा प्रतिपल आत्म विकास करूँ॥२४॥
निज स्वरूप का करूँ चिंतवन निज स्वरूप का ध्यान करूँ।
निज सिद्धत्व प्रगट कर स्वामी शाश्वत निज कल्याण करूँ॥२५॥

ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

राजगृही के क्षेत्र की महिमा अपरम्पार।
निश्चय व्रत जो धारते हो जाते भवपार॥
इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री राजगृही सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री पद्मद्रह-पटना सिद्धक्षेत्र पूजन

सेठ सुदर्शन ने मुनि होकर किया घोर उपसर्ग सहन।
शुक्ल ध्यान की परमशक्ति से प्राप्त किया निर्वाण सदन॥
श्री मुनिवर के चरणाम्बुज में भाव सहित मैं करूँ नमन।
सिद्धक्षेत्र पटना पद्मद्रह भव्य भूमि को है वंदन॥
भक्ति भाव से पूजन करके निज स्वरूप का करूँ मनन।
आत्म ध्यान के द्वारा पाऊँ पूर्ण शुद्ध हो मुक्ति गगन॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषटः।
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

Scanned by CamScanner

अष्टक

जन्म मरण दुख नाश हेतु गंगा का प्रासुक जल लाऊँ।
चिदानंद चैतन्य चिदातम चिन्मय चेतन पद पाऊँ॥
श्री पद्मद्रह पटना से मुनिराज सुदर्शन मुक्त हुए।
शील स्वभावी शुद्धातम की महिमा से शिव युक्त हुए॥१॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं.नि.।
भव आताप मिटाने को मैं मलयागिरि चंदन लाऊँ।
चिदानंद चैतन्य चिदातम चिन्मय चेतन पद पाऊँ ॥श्री पद्म.॥२॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।
अक्षय पद पाने को स्वामी मैं अखंडज तंदुल लाऊं।
चिदानंद चैतन्य चिदातम चिन्मय चेतन पद पाऊँ॥श्री पद्म.॥३॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।
काम क्रोध मद लोभ नष्ट करने को सहज पुष्प लाऊँ।
चिदानंद चैतन्य चिदातम चिन्मय चेतन पद पाऊँ॥श्री पद्म.॥४॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं.नि।
क्षुधा व्याधि का मूल मिटाने प्रभु नैवेद्य सरस लाऊँ।
चिदानंद चैतन्य चिदातम चिन्मय चेतन पद पाऊँ॥श्रीपद्म५॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्द पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.नि.।
मोह तिमिर अज्ञान नशाने भेदज्ञान दीपक लाऊँ।
चिदानंद चैतन्य चिदातम चिन्मय चेतन पद पाऊँ॥श्री पद्म.॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीपद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं.
कर्म ज्वाल में अब न जलूं मैं ऐसी ध्यान धूप लाऊं।
चिदानंद चेतन्य चिदातम चिन्मय चेतन पद पाऊँ॥श्री पद्म.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.
सादि अनंत मोक्षफल पाने कल्पवृक्ष के फल लाऊँ।
चिदानंद चैतन्य चिदातम चिन्मय चेतन पद पाऊँ॥श्री पद्म.॥८॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
अजर अमर अविकल अनर्घ्य पद पाने ज्ञान अर्घ्य लाऊँ।
चिदानंद चैतन्य चिदातम चिन्मय चेतन पद पाऊँ॥श्री पद्म॥९॥
ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

पद्मद्रह पटना नगर सिद्धक्षेत्र शुभथान।
सेठ सुदर्शन ने लिया तपकर पद निर्वाण॥

चंपापुर नृप धात्रीवाहन रानी अभयमती सुंदर।
न्याय पूर्वक शासन करते धर्म पालने में तत्पर॥१॥
इसी नगर में वृषभदास थे सेठ जिनमती सेठानी।
पुत्र सुदर्शन सेठ जिन्हों की पत्नी मनोरमा रानी॥२॥
पूर्व जन्म में सेठ सुदर्शन ग्वाले का था जीव सरल।
अंत समय में अरहंताणं जप कर हुआ सेठ प्रबल॥३॥
वृषभदास जिनमती दीक्षित हो करते थे निज कल्याण।
रहे एक पत्नी व्रतधारी सेठ सुदर्शन शील प्रधान॥४॥
सेठ सुदर्शन की छवि लखकर रानी हुई मोह से ग्रस्त।
बड़ी युक्ति से बुला महल में कामेच्छा की उनसे व्यक्त॥५॥
बोले सेठ सुदर्शन माता मैं पुरुषार्थ हीन बेकार।
क्षमा करो हे माता मुझमें काम भाव का नहीं विकार॥६॥
सेठ सुदर्शन शील बचाकर अपने गृह आए तत्काल।
धर्म साधना में सुलीन हो करते सामायिक तिहुँकाल॥७॥
ज्ञात हुआ कपिला से इक दिन दिया सुदर्शन ने धोखा।
फिर छलबल से बुला महल में रानी ने उनको रोका॥८॥
किन्तु न डिगे सुदर्शन अपने श्रेष्ठ शीलव्रत से पलभर।
शोर मचाया तब रानी ने मन में अतिक्रोधित होकर॥९॥
वंदी बना तभी राजा ने भेजा बंदीगृह भीतर।
शूली दे दो इसे शीघ्र इस नगरी के चौराहे पर॥१०॥
किन्तु सुदर्शन सेठ न घबराए तिल भर अपने मन में।
पूर्व असाता उदय जान हो गए लीन अंतर्मन में॥११॥
शूली पर चढ़ते ही शूली त्वरित बन गई सिंहासन।
नभ से पुष्पों की वर्षा लख चकित हुआ राजा का मन॥१२॥
जय जयकार हुई चहुँदिशि में राजा भी अभिभूत हुआ।
तू है महाशील का धारी मेरा सच्चा पूत हुआ॥१३॥

Scanned by CamScanner

क्षमा माँगकर राजा ने रानी को घर से दिया निकाल।
रानी मर कर हुई व्यंतरी रहती वैर हृदय में पाल१४॥
सेठ सुदर्शन ने विराग ले जिन दीक्षाधारी तत्क्षण।
मनोरमा को पुत्र सुकान्त सौंपकर पहुंचे तत्क्षण वन॥१५॥
तप करते करते विहार कर गए पाटलीपुत्र नगर।
पूर्व बैर से वही व्यंतरी आई अतिक्रोधित होकर॥१६॥
किया महा उपसर्ग सुदर्शन मुनिपर प्रचुर भयंकर घोर।
किंतु ध्यान में लीन रहे मुनि दौड़े शुक्ल ध्यान की ओर॥१७॥
श्रेणी चढ़ अंतर्मुहूर्त में अंतःकृकेवली हुए।
महावीर के तीर्थकाल में पंचम श्रुतकेवली हुए॥१८॥
गंध कुटी रचकर देवों ने प्रभु का जय जयकार किया।
विनश गया उ पसर्ग तत्क्षण जग ने मंगलकार किया॥१९॥
दे उपदेश भव्य जीवों को देश देश में किया बिहार।
भव्यों को जिन दीक्षाएँ दी महाशीलव्रत कर साकार॥२०॥
फिर आये पाटलीपुत्र में पद्मद्रह के निकट प्रभो।
योग निरोध पूर्वक अन्तिम शुक्लध्यान धर लिया विभो॥२१॥
जा पहुँचे लोकाग्र शिखर पर सिद्ध स्वपद पाया अमलान।
अष्टकर्म से रहित हुए प्रभु पाया अनुपम मुक्ति विहान॥२२॥
इसी भूमि से इसी क्षेत्र से सेठ सुदर्शन मुक्त हुए।
परम विदेही परमपूज्य पद पाया शिवसुख युक्त हुए॥२३॥
प्रभु के पावन चरणाम्बुज लख सादर शीष झुकाता हूँ।
पूजन करके विनय भाव से प्रभु की महिमा गाता हूँ॥२४॥
मैं बन महाशीलव्रत धारी निज स्वभाव में आ जाऊँ।
अष्ट कर्म अनिष्ट करूँ मैं तुम समान शिवपद पाऊँ॥२५॥
पद्मद्रह पाटलीपुत्र पटना को बंदूँ बारम्बार।
निज स्वभाव का साधन लेकर करूँ आत्मा का उद्धार॥२६॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

पद्मद्रह के क्षेत्र की महिमा परम महान।
निज स्वरूप जो ध्यावते पाते पद निर्वाण॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री पद्मद्रह पटना सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

Scanned by CamScanner

श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्र पूजन

है पावन मंदारगिरि सुन्दर प्रान्त बिहार।
भाव सहित वंदन करूँ मन वच काय संवार॥
मंदारगिरि का क्षेत्र पावन परम भव्य ललाम है।
मंदर श्रीगणधर गए निर्वाण सतत् प्रणाम है॥
वासुपूज्य जिनेन्द्र की यह तपोभूमि सुधाम है।
वसुद्रव्य ले पूजन करूँ यह भावना अभिराम है॥

ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

सम्यक्त्व जल का पान करके शुद्ध निज अन्तर करूँ।
निज आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्दमय शिवरस भरूँ॥
मंदारगिरि पर्वत मनोहर भाव से वंदन करूँ।
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र मन्दरमुनीश्वर पूजन करूँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.

सम्यक्त्व चंदन प्राप्त करके भवताप शीतल करूँ।
निज आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्दमय शिवरस भरूँ॥मन्दार.॥२॥

ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन नि.।

सम्यक्त्व अक्षत दिव्य पावन से जगत के दुख हरूँ।
निज आत्मा मे अतीन्द्रिय आनन्दमय शिवरस भरूँ ॥ मन्दार॥३॥

ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

सम्यक्तव पुष्प सुशील पा मैं कामभाव दमन करूँ।
निज आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्दमय शिवरस भरूँ॥मंदार.॥४॥

ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

सम्यक्त्व के नैवेद्य पाकर क्षुधा परिषह जय करूँ।
निज आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्दमय शिवरस भरूँ॥मंदार.॥५॥

ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

Scanned by CamScanner

सम्यक्त्व दीपक प्रकाशित कर मोहमय भ्रम तप हरूँ।
निज आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्दमय शिवरस भरूँ॥
मंदारगिरि पर्वत मनोहर भाव से वंदन करूँ।
श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र मन्दर मुनीश्वर पूजन करूँ॥६॥
ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
सम्यक्त्व धूप अनूप लेकर कर्म आठों क्षय करूँ।
निज आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्दमय शिवरस भरूँ॥मंदार.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं नि.।
सम्यक्त्व फल सर्वांश सुखमय मोक्ष लक्ष्मी को वरूँ।
निज आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्दमय शिवरस भरूँ॥मंदार॥८॥
ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
सम्यक्त्व का ले अर्घ्य अनुपम शुद्ध सिद्ध स्वपद वरूँ।
निज आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्दमय शिवरस भरूँ॥मंदार.॥९॥
ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

सिद्धक्षेत्र मंदारगिरि वंदन करूँ त्रिकाल।
निजस्वरूप को साधकर पाऊँ स्वपद विशाल॥

जम्बू द्वीप सुभरतक्षेत्र में अंगदेश चंपापुर धाम।
हैं मंदारगिरी शुभ पर्वत अतिप्रसिद्ध अति भव्यललाम॥१॥
सुन्दर नाम नगर चंपापुर का कहलाता था उस काल।
दीक्षा केवल ज्ञान महोत्सव यहाँ हुआ प्रभु का सुविशाल॥२॥
वासुपूज्य के छयासठ गणधर में थे मुख्य श्रीमंदर।
परम ध्यान धर मुक्त हो गए इस भू से मंदर गणधर॥३॥
यही तपस्या भूमि सुपावन वासुपूज्य जिन स्वामी की।
कोटि कोटि मुनियों ने गाई महिमा अन्तर्यामी की॥४॥
चरणचिन्ह श्री वासुपूज्य के अरू मंदर गणधर के दिव्य।
श्री जिनालय पर्वत पर शोभायमान है पावन भव्य॥५॥
पापहारिणी नाम सरोवर यहाँ तलहटी में शोभित।
दो जिन मंदिर और धर्मशाला हैं यहाँ नई निर्मित॥६॥

Scanned by CamScanner

छोटे से पर्वत पर जल के कुण्ड बने हैं यहाँ अनेक।
जिन मंदिर की जिन प्रतिमाओं को मैं बन्दूँ मस्तक टेक॥७॥
एक हजार वर्ष पहिले का मंदिर बड़ा शिखरशाली।
यहाँ युगल प्राचीन तीर्थ हैं एक गुफा महिमा वाली॥८॥
पूर्ण दिगम्बर सिद्धक्षेत्र है अति पवित्र अति सुखदायी।
जिसने प्रभु की महिमा गाई उसने शिवपदवी पायी॥९॥
मैं भी प्रभु के चरण चिन्ह लख रत्नत्रय पथ पर आऊँ।
जो जो मुनिवर मोक्ष गए हैं उन सबकी महिमा गाऊँ॥१०॥
बौसीग्राम निकट मन्दिर के दर्शन करके हर्षाऊँ।
शुद्ध आत्मा की प्रतीति कर सम्यक्दर्शन प्रगटाऊँ॥११॥

ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तायें अर्घ्य नि.।

सिद्धक्षेत्र मंदारगिरि जो पूंजे धरध्यान।
निज वैभव से मुक्त हो पाते पद निर्वाण॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री मंदारगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः

श्री गुणावा सिद्धक्षेत्र पूजन

मैं प्रभु गुणावा क्षेत्र का पूजन करूँ अर्चन करूँ।
मैं पूज्य गौतम स्वामि गणधर देवपद बंदन करूँ॥
पाया यहाँ से मोक्ष तुमने भाव से दर्शन करूँ।
निज आत्म द्रव्य प्रतीति पाने तत्व का चिंतन करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

निर्मल प्रासुक जल देव चरणों में अर्पण।
भव भ्रान्ति नष्ट हो देव कर निज का चिंतन॥
हे गौतम गणधर देव चरणों में वंदन।
निज का आश्रय ले देव काटूँ भव बंधन॥१॥

ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

Scanned by CamScanner

शुचि शीतल चंदन देव चरणों में अर्पण।
भवताप नष्ट हो देव कर निज का चिंतन॥
हे गौतम गणधर देव चरणों में वंदन।
निज का आश्रय ले देव काटूँ भव बंधन॥२॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।
मुक्ता सम तंदुल देव चरणों में अर्पण।
भव भ्रमण नष्ट हो देव कर निज का चिंतन ॥हे गौतम॥३॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं नि.।
सुरतरु पुष्पांजलि देव चरणों में अर्पण।
कंदर्प दर्प हो नष्ट कर निज का चिंतन ॥हे गौतम.॥४॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं नि.।
नैवेद्य भाव मय देव चरणों में अर्पण।
क्षय वेदनीय हो देव कर निज का चिंतन ॥हे गौतम.५॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
तम नाशक दीपक देव चरणों में अर्पण।
क्षय मोह तिमिर हो देव कर निज का चिंतन॥हे गौतम.॥६॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि.।
शुभ धूप सुगन्धित देव चरणों में अर्पण।
हो सर्व कर्म क्षय देवकर निज का चिंतन॥हे गौतम ७॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकमविध्वंशनाय धूपं नि.।
फल सहज भाव के देव चरणों में अर्पण।
परिपूर्ण मोक्ष हो देव कर निज का चिंतन॥हे गौतम८॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।
यह अर्घ्य भाव मय देव चरणों में अर्पण।
पाऊँ अनर्घ्यपद देव कर निज का चिंतन॥हे गौतम.॥९॥
ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

क्षेत्र गुणावा को नमन गौतम गणधर देव।
मोक्ष गए इस क्षेत्र से सिद्ध हुए स्वयंमेव॥

Scanned by CamScanner

जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र में मगधदेश हैं महा प्रसिद्ध।
नगर नवादा निकट गुणावा सिद्ध क्षेत्र हैं अति सुप्रसिद्ध॥१॥
महावीर के मुख्य सुगणधर गौतम स्वामी का निर्वाण।
इसी भूमि पर हुआ बानवे वर्ष अवस्था में यशगान॥२॥
इन्द्रभूति था नाम आपका चौदह विद्याज्ञान निधान।
वैदिक क्रिया कांड के ज्ञाता शिष्य पांच सौ थे विद्वान॥३॥
महावीर के समवशरण में दिव्य ध्वनि जब नहीं खिरी।
अवधिज्ञान से लखा इन्द्र ने गणधर की है कमीखरी॥४॥
बड़ी युक्ति से विनय पूर्वक इन्द्र आपको है लाया।
मान स्तंभ देखते ही प्रभु मान ही सर्व विघटाया॥५॥
दीक्षित होकर शिष्य पांच सौ सहित मुनीश्वर पद पाया।
हुए मुख्य गणधर सन्मति के ज्ञान मनःपर्यय पाया॥६॥
इसीलिये आषाढ़ पूर्णिमा गुरूपूर्णिमा प्रसिद्ध हुई।
श्रावण कृष्णा एकम के दिन दिव्यध्वनि सुप्रसिद्ध हुई॥७॥
खिरी दिव्य ध्वनि प्रभु की तत्क्षण मिला महान दिव्य उपदेश।
रची एक अंतमहुर्त में द्वादशांग गंगा सविशेष॥८॥
श्री वीर के समवशरण संग तीस वर्ष तक किया विहार।
प्रभु वाणी का सरल अर्थ कर किया सकल जग का उपकार॥९॥
कार्तिक कृष्ण अमावस प्रातः महावीर निर्वाण हुआ।
संध्याकाल आपको स्वामी प्रगटित केवलज्ञान हुआ॥१०॥
पावापुर में दीपमलिका हुई इन्द्र आदिक द्वारा।
चारों दिशि में जय जय गूंजी हुआ धर्म का जयकारा॥११॥
पंचम स्वर्ग छोड़कर आए माता पृथ्वी के उर में।
गौतमपुर वसुभूति ब्राह्मण के सुत जन्मे थे घर में॥१२॥
अग्निभूत अरु वायुभूति दो भ्राता पाये थे विद्वान।
ऋग्वेद और वेदांगों म तुम पारंगत थे हे भगवान॥१३॥
आयु पचास वर्ष में जाकर दीक्षित हुए परमनामी।
बारह वर्ष रहे छद्मस्थ अवस्था में गौतम स्वामी॥१४॥
तीस वर्ष तक रहे केवली फिर पाया पावन निर्वाण।
नाथ वानवे वर्ष आयु में सिद्ध शिला पाई सुमहान॥१५॥

Scanned by CamScanner

धन्य हो गई तुमको पाकर सिद्धपुरी की मुक्तिशिला।
निजस्वभाव पुरूषार्थ शक्ति का उत्तम फल प्रभु सहज मिला॥१६॥
भाग्योदय से तीर्थ गुणावा दर्शन करने आया हूँ।
गौतमस्वामी की वाणी हृदयंगम करने आया हूँ॥१७॥
नाथ सुमति दो नाथ बुद्धि दो तत्वबोधि की महिमा दो।
भेदज्ञान की उत्तमनिधि दो निजस्वभाव की गरिमा दो॥१८॥
गौतम स्वामी चरणाम्बुज में बार-बार मेरा बन्दन।
पाप पुण्य आश्रव अभाव कर नाश करूँ भवदुख क्रन्दन॥१९॥

ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

गौतम प्रभु को जो जपे मन वचकाय संवार।
क्षेत्रगुणावा ध्यान कर हो जावे भवपार॥

इत्याशीर्वाद :पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री गुणावा सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्र पूजन

देश कलिंग पांच सौ दशरथ नृपसुत शिव पद युक्त हुए।
कोटिशिला निर्वाण भूमि से एक कोटि मुनि मुक्त हुये॥
तेरह विधि चारित्र पालकर यथाख्यात चारित पाया।
प्राप्त अनंत चतुष्टय करके सिद्धस्वपद निज प्रगटाया॥
इसीलिये मैं कोटिशिला की पूजन करता हूँ हर्षित।
निज स्वरूप में आश्रय से पाऊँगा सिद्धस्वपद निश्चित॥

ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौष्ट्
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

क्रोध कषाय मिटाने को मैं क्षमाभाव पाने आया।
निज स्वभाव की महिमा के ही शुद्ध गीत गाने आया॥
कोटिशिला से एक कोटि मुनियों ने पाया पद निर्वाण।
शुद्धातम का आश्रय लेकर मै भी बनूँ सिद्ध भगवान॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीकोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

Scanned by CamScanner

मान कषाय मिटाने को मैं मार्दव गुण पाने आया।
निज स्वभाव की महिमा के ही शुद्ध गीत गाने आया।।
कोटिशिला से एक कोटि मुनियों ने पाया पद निर्वाण।
शुद्धातम का आश्रय लेकर मैं भी बनूँ सिद्ध भगवान।।२।।
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।
माया भाव मिटाने को मैं आर्जव गुण पाने आया।
निज स्वभाव की महिमा के ही शुद्ध गीत गाने आया।।कोटि.३।।
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि.।
लोभकषाय मिटाने को मैं शौच सत्य पाने आया।
निज स्वभाव की महिमा के ही शुद्ध गीत गाने आया।।कोटि.४।।
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।
वेदनीय की व्यथा मिटाने संयम तप पाने आया।
निज स्वभाव की महिमा के ही शुद्ध गीत गाने आया।।कोटि.५।।
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
मोहनीय के नाश हेतु मैं बल अनंत पाने आया।
निज स्वभाव की महिमा के ही शुद्ध गीत गाने आया।।कोटि.६।।
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं नि.।
कर्म शत्रु क्षय करने त्याग आकिंचन गुण पाने आया
निज स्वभाव की महिमा के ही शुद्ध गीत गाने आया।।
कोटिशिला से एक कटि मुनियों ने पाया पद निवार्ण।
शुद्धातम का आश्रय लेकर मैं भी बनूँ सिद्ध भगवान।।७।।
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।
महामोक्ष फल प्राप्ति हेतु निज ब्रह्मचर्य पाने आया।
निज स्वभाव की महिमा के ही शुद्ध गीत गाने आया।।कोटि.८।।
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
पद अनर्घ्य लेने को स्वामी रत्नत्रय पाने आया।
निज स्वभाव की महिमा के ही शुद्ध गीत गाने आया।।कोटि.९।।
ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

कोटिशिला की भूमि को सदा झुकाऊँ माथ।
सम्यक्दर्शन प्राप्तकर मैं भी बनूँ सनाथ॥
कोटिशिला पर वीतराग मुनि निज स्वभाव से युक्त हुए।
शुक्लध्यान से कर्म नाशकर भव बंधन से मुक्त हुए॥१॥
प्रथम अवस्था में मिथ्यादर्शन का किया घोर संहार
दूजी में अणुव्रत तीजी में पंच महाव्रत धारे सार॥२॥
चौथी में धर आत्म ध्यान श्रेणी चढ़ शुक्ल ध्यान ध्याया।
पंचम में कर मोह क्षीण अरहंत स्वपद को प्रगटाया॥३॥
छठी अवस्था मोह नाशकर दोष अघाति विनाश किया।
गुणस्थान मार्गणातीत हो सिद्धलोक का वास लिया॥४॥
एक कोटि मुनि सिद्ध हुए हैं कोटिशिला को नमन करूँ।
उनका दर्शन पूजन करके निजस्वरूप चिंतवन करूँ॥५॥
देश कलिंग, कुमारी पर्वत ही कहलाती कोटिशिला।
शुक्ल ध्यान से जिन मुनियों ने पाई पावन सिद्धशिला॥६॥
इसी शिला को नवनारायण अंतरीक्ष में ऊपर कर।
सहज उठा लेते हाथों से इतना बल होता भीतर॥७॥
जिसने निज स्वरूप को जाना उसने शिवपद प्रगटाया।
जिसने पर से मोह किया उसने अब तक भवदुख पाया॥८॥
पर विभाव की मदिरा पीकर मैं भी स्वामी भ्रमित हुआ।
जिन उपदेश ग्रहण करते ही मैं इस भव से थकित हुआ॥९॥
सप्त भयों से रहित बनूँ मैं सम्यक्दर्शन ग्रहण करूँ।
सम्यक्ज्ञान चरित्र धार लूँ फिर न जगत में भ्रमण करूँ॥१०॥
एक यही आशीर्वाद दो मुझको हे अन्तर्यामी।
तुम पथ पर चल पास तुम्हारे आ जाऊँ त्रिभुवन नामी॥११॥
मुनियों की निर्वाण भूमि शुभ कोटिशिला को सतत प्रणाम।
शुद्धभाव से निजस्वरूप का जाप करूँ मैं प्रभु वसु याम॥१२॥

Scanned by CamScanner

सिद्ध क्षेत्र की पूजन का फल यही चाहता हूँ भगवान।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्र पा मै भी करूँ आत्म कल्याण॥१३॥

ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

कोटिशिला को नमन कर रत्नत्रय उरधार।
निज स्वभाव जो साधते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री कोटिशिला सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्रीरेवातट सिद्धक्षेत्र पूजन

रावण के सुत आदिकुमार आदि ने कर निज में विश्राम।
साढ़े पाँच कोटि मुनियों ने पाया सिद्धालय का धाम॥
रेवातट की सिद्धभूमि को मन वच काया सहित प्रणाम।
पूजन कर मैं निज स्वभाव से पाऊँ मुक्तिपुरी अविराम॥

ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्र अत्रमम् सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

रेवा का निर्मल नीर प्रासुक कर लाया।
मिथ्यातम करने क्षीण चरणों में आया॥
रेवातट भव्य विशाल सिद्ध भूमि नामी।
जय साढ़े पांच करोड़ मुनि शिवपुर गामी॥१॥

ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

शीतल चंदन के संग केशर घिस लाया।
यह क्रोध कषाय विनाश करने मैं आया। रेवातट.॥२॥

ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

मुक्तासम तंदुल पुंज चरणों में लाया।
यह मान कषाय विनाश करने मैं आया। रेवातट.॥३॥

ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।

Scanned by CamScanner

सुरतरु के सुमन अनेक भावमयी लाया।
यह माया पूर्ण विनाश करने मैं आया।
रेवातट भव्य विशाल सिद्ध भूमि नामी।
जय साढ़े पांच करोड़ मुनि शिवपुर गामी।।४।।
ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
षटरस व्यंजन नैवेद्य चरणों में लाया।
अब लोभ कषाय विनष्ट करने मैं आया।।रेवातट।।५।।
ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
दीपक का दिव्य प्रकाश चरणों में लाया।
अज्ञान मोह भ्रम नाश करने मैं आया।।रेवातट.।।६।।
ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।
शुचिमय शुभधूप दशांग चरणों में लाया।
कर्मो की प्रकृति विनाश करने मैं आया।।रेवातट.।।७।।
ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।
फल सुरतरु महा मनोज्ञ चरणों में लाया।
शुभ अशुभ विभाव विनाश करने मैं आया।।रेवातट.।।८।।
ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं नि.।
यह अर्घ सजाकर नाथ चरणों में लाया।
भव बंधन सर्व विनाश करने मैं आया।।रेवातट.।।९।।
ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

रेवातट पूजन करूँ श्री मुनियों की आज।
अष्ट कर्म जंजालहर पाऊँ शिवपद राज।।
जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र में मध्य देश है मन भावन।
नदी नर्वदा रेवातट है सिद्धभूमि अति ही पावन।।१।।
पंच महाव्रतधारी मुनियों ने आ कर निज ध्यान किया।
वस्तु स्वरूप चिंतवन करके निर्मल सम्यक्ज्ञान लिया।।२।।

Scanned by CamScanner

छठे सातवें गुणस्थान में सदा झूलते बड़भागी।
धर्मध्यान में रत रहते थे मुक्ति वधू के अनुरागी॥३॥
किया परम पुरुषार्थ ज्ञानमय क्षायिक क्षेणी पर आए।
शुक्लध्यान के प्रथम चरण में घातिकर्म कुछ विनशाए॥४॥
द्वितीय शुक्ल में आते ही घातिया शेष विध्वंस किये।
सैंतालिसघाति क्षयकर सोलह अघाति भी ध्वंसकिये॥५॥
प्रगट अनंत चतुष्टय करके वीतराग अरहंत हुए।
दे उपदेश भव्य जीवों को प्रभु सर्वज्ञ महंत हुए॥६॥
प्रतिमायोग किया धारण फिर योग अभाव किया नामी।
गुणस्थान चौदहवाँ पाया प्रकृति बहात्तर हर स्वामी॥७॥
शेष प्रकृति तेरह भी नाशी देह नाश प्रभु शुद्ध हुए।
एक समय में लोकशिखर जा सिद्धशिला पर सिद्धहुए॥८॥
साढ़े पाँच कोटि मुनियों ने इस तट से शिवपद पाया।
गुण अनंत निज में प्रगटाए सिद्ध दशा को प्रगटाया॥९॥
मैं भी कब यह अपूर्व अवसर पाऊँगा स्वामी बोलो।
मिथ्यादर्शन से अंधा हूँ प्रभु मेरी आँखें खोलो॥१०॥
ज्ञानांजन की एकशलाका नयनों में भर दो स्वामी।
जो अनादि का अंधापन है पलभर में हर दो स्वामी॥११॥
सिद्धक्षेत्र की पूजन का फल यही चाहता हूँ भगवान।
सम्यक्दर्शन मुझे प्राप्त हो मैं अब करूँ आत्म कल्याण॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

रेवातट से जो हुए परम सिद्ध भगवान।
मन वच तन जो पूजते पाते मुक्ति महान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री रेवातट सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री अहारजी सिद्धक्षेत्र पूजन

श्री अहार जी क्षेत्र मनोहर सिद्धक्षेत्र महिमाशाली।
शान्तिनाथ प्रभु की जिन प्रतिमा अतिविशाल वैभवशाली॥

Scanned by CamScanner

यहाँ बहात्तर जिन प्रतिमाऐं त्रय चौवीसी की अति भव्य।
हैं प्राचीन जिनालय सातों कलापूर्ण अतिपावन दिव्य॥
मुक्त हुए दो केवली यहाँ से उनके चरणाम्बुज बंदूँ।
इन सबकी पूजन करके प्रभु निज स्वभाव को अभिनंदूँ॥
ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र अहार जी अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र अहार जी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री सिद्धक्षेत्र अहार जी अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

तत्वज्ञान के पावन जल से प्रभु के चरण पखारूँ मैं।
भेदज्ञान की ज्योति प्राप्त कर अपनी ओर निहारूँ मैं॥
श्री अहार जी की पूजन कर भक्ति सहित हर्षाऊँ मैं।
मुक्त हुए केवली यहाँ दो उनके ही गुण गाऊँ मैं॥१॥
ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।
तत्वज्ञान का अनुपम चंदन ले शीतलता पाऊँ मैं।
भेदज्ञान की ज्योति प्राप्तकर भवआताप नशाऊँ मैं॥श्री॥२॥
ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।
तत्वबोधि के अनुपम पावन अक्षय तंदुल लाऊँ मैं।
भेदज्ञान की ज्योति प्राप्तकर भवका भ्रमण मिटाऊँ मैं।श्री॥३॥
ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि।।
तत्वबोधि के पुष्प सुगंधित निज स्वभाव मय लाऊँ मैं।
भेदज्ञान की ज्योति प्राप्तकर भवका भ्रमण मिटाऊँ मैं॥श्री॥४॥
ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि..।
आत्मज्ञान नैवेद्य भावमय सरस सुपावन लाऊँ मैं।
भेदज्ञान की ज्योति प्राप्तकर क्षुधारोग विनशाऊँ मैं॥श्री॥५॥
ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि..।
आत्मज्ञान दीपक प्रकाश मय निज अंतर में लाऊँ मैं।
भेदज्ञान की ज्योति प्राप्तकर मोह तिमिर विनशाऊँ॥श्री॥६॥
ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि..।
आत्मध्यान की धूप जलाऊँ सम्यक्पथ पर आऊँ मैं।
यथाख्यात चारित्र प्राप्तकर अष्टकर्म विनशाऊँ मैं।श्री.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।

Scanned by CamScanner

योग निरोध शक्ति के द्वारा देह रहित हो जाऊँ मैं।
अंतिम शुक्ल ध्यान के द्वारा महा मोक्षफल पाऊँ मैं॥
श्री अहार जी की पूजन कर भक्ति सहित हर्षाऊँ मैं।
मुक्त हुये केवली यहाँ दो उनके ही गुण गाऊँ मैं॥८॥
ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि.।
गुण अनंत पाने को स्वामी वसुविधि अर्घ्य सजाऊँ मैं।
भाव द्रव्य जो कर्म नाशकर पद अनर्घ्य प्रगटाऊँ मैं॥श्री.९॥
ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

श्री अहार जी क्षेत्र को धर ध्यान वंदूँ।
दर्शन पूजन पाठकर करूँ आत्म कल्याण॥
जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र में मध्यप्रदेश प्रान्त सुन्दर।
श्री अहार जी सिद्धक्षेत्र है अति प्राचीन जैन मंदिर॥१॥
मल्लिनाथ के तीर्थकाल में कामदेव श्री मदनकुमार।
इसी क्षेत्र से मुक्त हो गए पाया सिद्ध स्वपद अविकार॥२॥
महावीर के तीर्थकाल में श्री मुनीश्वर विषकंवल।
अतःकृत केवली हुए अष्टम पाया निर्वाण सबल॥३॥
शान्तिनाथ की पावन प्रतिमा भव्यविशाल मनोहारी।
तीनकाल की श्रीजिन चौबीसी के दर्शन मनहारी॥४॥
पाड़ाशाह सेठ ने बनवाए जिन मंदिर महाविशाल।
मुनि पूजन करके होता है भव्य जनों का हृदय निहाल॥५॥
मानस्तंभ यहाँ दो सुन्दर सिद्ध गुफा है अतिप्राचीन।
छोटे से पर्वत पर जिन मुनिचरण बने हैं अर्वाचीन॥६॥
श्री मुनियों के चरण कमल में शीश झुकाऊँ बारंबार।
जिस पद पर चल मुक्त हुए प्रभु मैं भी चलू त्याग संसार॥७॥
मुनिराजों का प्रचुर स्वसंवेदन है अनुपम वचनातीत।
सर्व कषायों का अभावकर हो जाते है भावातीत॥८॥
परीषहजयी मार्ग संवर के द्वारा क्षपक श्रेणि चढ़ते।
उत्तरोत्तर कर्मों की जड़काट मुक्ति नभ में उड़ते॥९॥

Scanned by CamScanner

संवर हेतु क्षमादि धर्ममय स्वगुण प्राप्ति उत्तमपुरुषार्थ।
धर्म मोक्ष पुरुषार्थ सकल निजअनुभव से होते सत्यार्थ॥१०॥
दुष्ट आचरण से उपार्जित नामकर्म से बना शरीर।
जन्म जरामय मरण नाशकर हो जाता योगी अशरीर॥११॥
कालजयी संसार जयी विध्वंस कषायों का करते।
पूर्ण निर्जरा सिद्धि प्राप्तकर मुक्ति भवन में पग धरते॥१२॥
साता जनित अल्प भवसुख में प्राणी जब होता आसक्त।
अतंकाल में कालग्रास वन होता आर्त्तध्यान संयुक्त॥१३॥
यौवन में परको मदिरा पी होता रौद्रध्यान से युक्त।
जब वृद्धत्व प्राप्त होता है तो रहता है पर का भक्त॥१४॥
निजस्वरूप का ध्यान नहीं हो पाता अंतसमय किंचित।
इसीलिए भव भव दुखपाता और अधोगति भी निश्चित॥१५॥
ज्यों समुद्र में गिरा हुआ मणि पुनः प्राप्त होना दुर्लभ।
त्यों मानव भव मिलना दुर्लभ अरु जिनधर्ममहादुर्लभ॥१६॥
अतः नाथ मैं सम्यक् बोधि महान प्राप्त करने आया।
जिनदर्शन से निजदर्शन करने का भाव उमड़ आया॥१७॥
शांतिनाथ संस्कृत विद्यालय व्रती आश्रम महिलाश्रम।
सरस्वती भंडार मनोरम कई धर्मशाला उत्तम॥१८॥
वन उपवन की हरियाली से सिद्धक्षेत्रयह शोभित है।
सुर किन्नर गंधर्व यक्ष नर मुनियों का मन मोहित है॥१९॥
ऐसा अद्भुत क्षेत्र देखकर ललचाता है अन्तरमन।
मैं भी इसी क्षेत्र पर रहकर करूँ आत्मा का चिंतन॥२०॥

ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

श्री अहार जी क्षेत्र की महिमा अपरम्पार।
निज स्वभाव जो साधते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री अहार जी सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः।

Scanned by CamScanner

श्रीपोदनपुर सिद्धक्षेत्र पूजन

पोदनपुर से बाहुबली ने मोक्ष लक्ष्मी को पाया।
इसीलिये पोदनपुर की पूजन का भाव उमड़ आया॥
अष्ट द्रव्य ले बाहुबली प्रभु पद अर्चन करता सादर।
सकल विभाव भाव को नाशूँ निज स्वभाव को दू आदर।

ॐ ह्रीं श्री पोदनपुर निर्वाण क्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री पोदनपुर निर्वाण क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री पोदनपुर निर्वाण क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्

छंद अवतार

केसरिद्रह से जल लाय पूजूँ नाथ चरण।
दुख जन्म मरण निखार नाशूँ भाव मरण॥
पोदनपुर पति विख्यात बाहुबलि बन्दूँ।
निज आत्म तत्त्व सम्पूर्ण सादर अभिनन्दू॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

पांडुकवन चंदन लाय भव ज्वर नष्ट करूँ।
संसारोदधि क्षय हेतु राग विनष्ट करूँ॥पोदनपुर.॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय जलं नि.।

वनभद्रशाल से शालि अति उत्तम लाऊं।
अक्षयपद पाऊँ देव शिव सुख उपजाऊँ॥पोदनपुर॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

नंदन वन पुष्प प्रसिद्ध प्रभु पद अग्रधरूँ।
दुख कामबाण के नाश भवरज त्वरित हरूँ॥पोदनपुर४॥

ॐ ह्रीं श्रीश्रीपोदनपुर निर्वाणक्षेत्रेभ्योकामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

लाऊँ चरू समय शुद्ध सकल विभाव हरूँ।
नाशूं अतृप्ति का राग पूर्ण स्वराज्य वरूँ॥पोदनपुर॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

गजदंत सुचंदन धूप परम सुगंधमयी।
वसु करूँ प्रभु क्षीण हो संसार जयी॥पोदनपुर॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं नि.।

Scanned by CamScanner

कल्पद्रुम से ले दीप जगमग उजियारूँ।
मिथ्यात्व मोह को नाश विभ्रम निखारूँ॥
पोदनपुर पति विख्यात बाहुबलि बन्दू।
निज आत्म तत्त्व सम्पूर्ण सादर अभिनन्दूँ॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
सौमनस सुवन से दिव्य फल पावन लाऊँ।
मैं महामोक्षफल हेतु निज में रम जाऊँ॥पोदनपुर॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो महामोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
वसु द्रव्य सजाऊँ आज पूजूं भाव सहित।
यह पाऊँ परम अनर्घ्य शुद्ध स्वभाव सहित॥मोदनपुर॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीपोदनपुर निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

जय ऋषभदेव सुत तुम महान। जय बाहुबली बाल में प्रधान।
भ्राता थे भरत चक्रवर्ती। जय किया उन्हें तजदी धरती॥१॥
वैराग्य महा उर में छाया। दीक्षा का भाव उमड़ आया।
भगवती भव्य दीक्षा धारी। हो गए मुनीशवर अविकारी॥२॥
कर घोर तपस्या एक वर्ष। अंतर में छाया परम हर्ष।
कैवलज्ञान को प्रगटाया। अरहंत अवस्था को पा॥३॥
करके बहु देशों में बिहार उपदेश दिया होकर उदार।
होगये अनेकों जीव पार पाया उरमें निज समयसार॥४॥
सिखलाया सबको आत्म धर्म। दुखदायी सादे पुण्य कर्म।
तज पाप पुण्य का करोनाश। उर में लाओ केवल प्रकाश॥५॥
फिर प्रतिमायोग किया गाओ होकर स्वयंमेव तरण तारण।
पोदनपुर से ही मुक्त हुए प्रभु मुक्ति रमा से युक्त हुये॥६॥
अतएव आपको वंदन है। चरणाग्र भावमय चंदन है।
पोदनपुर की महिमा गाओ प्रभु मैं भी शिवपद पर आऐ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री पोदनपुर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि..।

Scanned by CamScanner

पोदनपुर पूजन करूँ भक्ति भाव से आज।
निज स्वभाव की शक्ति से पाऊँ निज पद राज॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री पोदनपुर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो नमः

श्री तीर्थंकर जन्मातिशयक्षेत्र पूजन

भक्ति सहित पूजन करूँ अतिशय क्षेत्र महान।
तीन लोक आनंद प्रद जन्में श्री भगवान॥

वर्तमान जिन तीर्थंकर चौबीसों प्रभुओं की जय जय।
परम पूज्य जिन जन्म भूमि की विनय भाव से करूँ विनय॥
गर्भ जन्म तप ज्ञानभव्य कल्याणक होते जिस भू पर।
वे ही अतिशय क्षेत्र कहाते सारे जग को मंगलकर॥
सोलहकारण भव्य भावना भाकर होते तीर्थंकर।
इनकी पूजन से होता हैं सम्यक्दर्शन तेज प्रखर॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्र अत्रमम् सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

वसुकर्मों के वश में होकर भव प्रांगण में नाच रहा।
जैसा नाच नचाते नचता पर भावों में नाच रहा॥
जन्मजरा दुख हरने को समरस जल पाने आया हूँ।
श्री जिन के अतिशय क्षेत्रों की पूजन करने आया हूँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

सारा ही संसार दुखी है इसमें सुख का नाम नहीं।
नरकनिगोद त्रिर्यन्च मनुज सुर गति में भी आराम नहीं॥
भवतापहारी उपशम चंदन रस पाने आया हूँ।श्रीजिन॥२॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि।

Scanned by CamScanner

रूप गंध रस स्पर्शमयी पुद्गल जड़ तन अपना माना।
बार बार नरभव पाकर भी आत्मस्वरूप न पहचान॥
भवदधितर अक्षयपद हित अक्षत गुण पाने आया।
श्री जिन के अतिशय क्षेत्रों की पूजन करने आया हूँ॥३॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्माततिशयक्षेत्रभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं नि.॥
सदा विभावों में रत रह निज ब्रम्हस्वरूप नहीं जाना।
पर का कर्त्ता भोक्ता बनकर पदनिष्काम न पहचाना॥
कामबाण हर सहजानंदी पुष्प प्राप्तिहित आया हूँ॥श्रीजिन४॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.
कर्म चेतना में रतरहकर कर्म बंध परिणाम किया।
ज्ञानचेतना कभी न साधी कभी न निज का नाम लिया॥
क्षुधारोग हरने को संयम तप चरू पाने आया हूँ।श्रीजिन॥५॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नेवेद्यं. नि।
अब तक मिथ्यादृष्टि रहा प्रभु सम्यक्दृष्टि नहीं पाई।
दर्शनज्ञानमयी स्वभाव की महिमा कभी नहीं भाई॥
मिथ्यातम हरज्ञान दीप को ज्योति करने आया हूँ।श्रीजिन॥६॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं. नि।
आर्त्तरौद्र ध्यानों में रत रह धर्म ध्यान भाया न कभी।
विषय कषायों से विरक्ति का भी विचार आया न कभी॥
कर्म नाशहित क्षायिक धूप स्वरूप जगाने आया हूँ।श्रीजिन.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं नि.।
आधि व्याधि पर की उपाधि में अनगिनती भव नष्ट किये।
निज समाधि के हुए न दर्शन घोर अनंतों कष्ट लिये॥
मोक्ष प्राप्ति हित विमल भावना के फल पाने आया हूँ॥श्री.जिन८॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
रागद्वेष शुभ अशुभ आश्रव पाप पुण्य पर मुग्ध हुआ।
ज्ञान क्रिया से दूर रहा मैं क्रियाकांड से दग्ध हुआ॥
पद अनर्घ्य हित साम्यभाव अर्घ्यावलि पाने आया हूँ॥श्रीजिन.९॥
ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

तीन लोक आनंद प्रद जन्मभूमि भगवान।
भक्ति भाव से मैं जपूं अतिशय क्षेत्र महान॥

वर्तमान जिन तीर्थंकर चौबीस महान प्रभुओं की जय।
जन्म भूमि अतिशय क्षेत्रों की भक्ति भाव से करूँ विनय॥१॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान चार कल्याण कहाते जहाँ महान।
वे ही अतिशय क्षेत्र कहाते उनका मैं गाऊँ यशगान॥२॥
सोलहकारण भव्य भावना भाकर होते तीर्थंकर।
उनकी पूजन से होता है सम्यक्दर्शन तेज प्रखर॥३॥
जयति अयोध्या ऋषभनाथ प्रभु तज सर्वार्थ सिद्धि का यान।
नाभिराय मरुदेवी नंदन वृषभ चिन्ह शोभित भगवान॥४॥
जयति अयोध्या अजितनाथ प्रभु तजकर आए विजय विमान।
नृपजितशत्रु सुविजयामाता गजलक्षण शोभित भगवान॥५॥
जयश्रावस्ती ग्रैवेयक से आए संभव जिन भगवान
जितारि नंदन मात सुसेना अश्व चिन्ह पद में छविमान॥६॥
जयति अयोध्या सुमति नाथ जिन आए त्याग जयंत विमान।
पिता मेघप्रभ मात मंगला चकवा लक्षण पद भगवान॥७॥
जय कौशाम्बी पदमनाथ प्रभु तज ग्रीवक पीतंकर यान।
धरण राजसुतमात सुसीमा कमलचिन्ह शोभित भगवान॥८॥
वाराणसी सुपार्श्व तज मध्यम ग्रेवेयक यान।
सुप्रतिष्ठ नृप माँ पृथ्वी सुत स्वास्तिक चिन्ह चरणा छविमान॥९॥
जय जय चन्द्रपुरी चन्द्रा प्रभु आए तज वैजयन्त यान।
महासेन नृप मात लक्ष्मणा अर्धचंद्र लक्षण भगवान॥१०॥
जय काकंदी पुष्पदंत प्रभु आए तज आरण सुर यान।
पितु सुग्रीव मात जयरामा मगर चिन्ह पद में भगवान॥११॥
जय जय भद्दिलपुर में जन्में शीतलजिन तज अच्युत यान।
दृढ़रथ पिता सुनंदा माता कल्पवृक्ष लक्षण भगवान॥१२॥
जय जय सिंहपुरी जन्में श्रेयांस त्याग पुष्पोत्तर यान।
विष्णुनाथ नृप माता विमला गेंडा चिंह सुपद भगवान॥१३॥

Scanned by CamScanner

जय चंपापुर वासुपूज्य जिन त्यागा महाशुक्र सुरयान।
मां विजया वसुपूज्य पिता श्री महषि चिन्ह पद में भगवान॥१४॥
जयति कंपिलापुरी विमलजिन आए सहस्त्रार तज यान।
नृप कृतवर्मा जयदेवी सुत चिन्ह वराह सुपद भगवान॥१५॥
जयति अयोध्या श्री अनन्त जिन आए तद पुष्पोत्तर यान।
सिंहासन नृप जयश्यामा सुत सेही चिन्ह सुपद भगवान॥१६॥
रत्नपुरी जय धर्मनाथ प्रभु तज़ सर्वार्थ सिद्धि का यान।
मात सुव्रता भानुराज सुत वज्र चिन्ह शोभत भगवान॥१७॥
जयति हस्तिनापुरी शांति जिन तज सर्वार्थ सिद्धि का यान।
विश्वसेन नृप माता ऐरा चरणों में मृग चिन्ह प्रधान॥१८॥
जयति हस्तिनापुरी कुन्थु जिन तज सर्वार्थ सिद्ध शुभयान।
सूर्यसेन नृप श्रीमती माँ अज लक्षण पद में भगवान॥१९॥
जयति हस्तिनापुरी अरह जिन तज अपराजित रत्न विमान।
पिता सुदर्शन मित्रादेवी मीन चिन्ह पद में भगवान॥२०॥
जय जय मिथिलापुरी माल्लेजिन आये तज अपराजित पान।
प्रभावती माँ कुंभराज नृप कलश चिन्ह पद में भगवान॥२१॥
जय जय राजगृही मुनिसुव्रत आयेतज आए सुरयान।
माता सीमा नृप सुमित्र सुत कछवाचिन्ह चरण भगवान॥२२॥
जय जय मिथलापुरी नाथ नमि आए तज अपराजित यान।
विजयराज नृप मात महादेवी पद नीलकमल भगवान॥२३॥
जय जय शौर्यपुरी आए तज नेमिनाथ अपराजित यान।
नृपति समुद्र विजय शिवदेवी, मां, पद शंखचिन्ह भगवान॥२४॥
जय जय वाराणसी पार्श्वजिन आए तज प्राणत सुविमान।
अश्वसेन नृप माँ वामा सुत सर्प चिन्ह पद में भगवान॥२५॥
जय कुन्डलपुर महावीर प्रभु आए तज पुष्पोत्तर यान।
नृपसिद्धार्थ तनय त्रिशला के नंदन सिंह चिन्ह भगवान॥२६॥
यही भूमियाँ गर्भ जन्म तप ज्ञान क्षेत्र हैं महा महान।
थोड़ा सा अंतर है इसमें इसको भी हम लें अब जान॥२७॥
गिरि कैलाश शिखर अष्टापद ऋषभ देव ने ध्याया ध्यान।
शुक्ल ध्यान की पूर्ण शक्ति से पाया केवलज्ञान निधान॥२८॥

Scanned by CamScanner

नेमिनाथ का तप कल्याण सहस्त्राम्र वन हुआ महान।
उर्जयंत गिरि प्राप्त हुआ था प्रभु को केवलज्ञान प्रधान॥२९॥
पार्श्वनाथ ने अहिक्षेत्र पर किया आत्मा का ही ध्यान।
श्रेणी चढ़ उपसर्ग जीतकर पाया केवलज्ञान निधान॥३0॥
महावीर ने ऋजुकूला तट पाया अनुपम केवलज्ञान।
विपुलाचल पर खिरी दिव्यध्वनि जग ने गाया मंगलगान॥३१॥
इस सब क्षेत्रों की पूजन कर पाऊँ स्वपर भेद विज्ञान।
सम्यक्दर्शन सहित ज्ञान चारित्र प्राप्तकर बनूँ महान॥३२॥

ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.

जन्मक्षेत्र जिनराज की महिमा अगम अपार।
जिनपद पूजन जो करे हो जाये भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री जिनेन्द्र जन्मातिशयक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्रीअयोध्या अतिशयक्षेत्र पूजन

शाश्वत तीर्थ अयोध्या नगरी जन्मक्षेत्र तीर्थकर का।
जन्मोत्सव तीनों कालों में होता है श्री जिनवर का॥
हुन्डावसर्पिणी काल में अंतर पड़ जाता है कुछ स्वयंमेव।
वर्तमान में जन्में केवल पांच तीर्थकर जिनदेव॥
ऋषभ अजित अभिनंदन सुमति अनंतनाथ भगवान महान।
इसी भूमि पर जन्में थे प्रभु करूँ वंदना भाव प्रधान॥
जलफलादि वसद्रव्य सज़ाकर पूजन करूँ ह्रदय से नाथ।
निजस्वभाव की महिमा आए आत्मध्यान कर बनू सनाथ॥

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौष्ठ
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्

Scanned by CamScanner

अष्टक

आशा तृष्णा मृगमरीचि का सम अनंत दुख की दाता।
पल भर को भी तृप्ति न पाई कभी न पाई सुख साता॥
ऋषभ जिनेश अजित अभिनंदन सुमति अनंतनाथ भगवन।
गर्भ जन्म तप भूमि अयोध्या को मेरा शत शत वंदन॥१॥
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

पाप पुण्य की ज्वाला में ही भव अनंत बीते स्वामी।
भवाताप से रहित कभी भी हुआ नहीं अंतर्यामी॥ऋषभ.२॥
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चदनं. नि।

घोर कृष्ण लेश्या परिणामों से मैं कभी नहीं ऊबा।
कैसे पार करूँ हे स्वामी भव समुद्र में ही डूबा॥ऋषभ.३॥
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।

कामबाण की महा व्यथा का अब तक अन्त नहीं पाया।
सहज शील तरुवर की मैंने कभी नहीं पायी छाया॥ऋषभ४॥
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं.नि.।

पर द्रव्यों की भूख न अब तक पलभर को भी मिटी नहीं।
विषय कषायों की अभिलाषा लेशमात्र भी घटी नहीं।ऋषभ.५॥
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं. नि।

तीव्र मोहतम के कारण निज पर का भेद नहीं जाना।
सम्यक्ज्ञान बिना मैंने निज को न अभी तक पहचाना॥ऋषभ.६॥
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि।

कर्माष्टक का चक्र भयंकर चारों गतियों का दाता।
एक आंट भी खुली न अबतक पर से ही जोड़ा नाता॥ऋषभ.७॥
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्रेभ्यों अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।

सहज मुक्ति संपदा सुफल की कभी न मैंने अर्चा की।
निजस्वभाव की ओर न देखा कभी न निज की चर्चाकी॥ऋषभ८॥
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि.।

भ्रम के मेघ घिरे अनादि से आत्म द्रव्य भी लखा नहीं।
निश्चयपद अनर्घ्य की महिमा का फल मैंने चखा नहीं॥ऋषभ.९॥
ॐ ह्रीं श्री अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

पंच तीर्थंकर अर्घावलि

कर्म भूमि के आदिकाल में ऋषभ देव ने जन्म लिया।
नाभिराय कुलकर के नंदन मरूदेवी उर धन्य किया॥१॥
सोलह स्वप्न लखे माता ने भव्य गर्भ कल्याण हुआ।
आए प्रभु सर्वार्थ सिद्धि से देवों का जयगान हुआ॥२॥
चैत्र कृष्ण नवमी को जन्में त्रिभुवन ने आनंद लिया।
गिरि सुमेरू अभिषेक महोत्सव इन्द्रों ने संपन्न किया॥३॥
नीलांजना विलय को लखकर तत्क्षण हृदय विराग हुआ।
लौकान्तिक देवों के द्वारा प्रभु का जय जय नाद हुआ॥४॥
अक्षय बट पर दीक्षाधारी केवलज्ञान महान लिया।
गिरि कैलाश शिखर अष्टापद से प्रभु ने निर्वाण लिया॥५॥
ॐ ह्रीं श्री प्रथमतीर्थङ्कर ऋषभदेव जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

अजितनाथ प्रभु ने साकेतपुरी को परम पवित्र किया।
सुरपति सुरदल सहित पधारे जन्म महोत्सव पूर्ण किया॥१॥
जब वैराग्य जगा लौकान्तिक देवों ने जयकार किया।
नृप जितशत्रु सु माता विजया के प्राँगण को धन्य किया॥२॥
बीत गई छद्मस्थ अवस्था केवलज्ञानी हुए महान।
विचरण करके देश देश में किया भव्य जन का कल्याण॥३॥
मुक्त हुये सम्मेदाचल से सिद्धस्वपद से युक्त हुये।
गुण अनंत प्रगटाए प्रभु ने सिद्ध शिला संयुक्त हुये॥४॥
ॐ ह्रीं श्री द्वितिय तीर्थङ्कर अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

अभिनंदन प्रभु का जन्मोत्सव हुआ विनीता में पावन।
पिता स्वयंवर माँ सिद्धार्था के उर से जन्में भगवन॥१॥
अभिनंदन प्रभु से साकेतपुरी की भूमि पवित्र हुई।
गिरि सुमेरू पर इन्द्रों द्वारा सारी क्रिया विचित्र हुई॥२॥
राज्यपाट तज दीक्षाधारी पंच महाव्रत किये ग्रहण।
केवलज्ञान प्राप्तकर स्वामी निजानन्द में हुए मगन॥३॥
पाप पुण्य आश्रव अभाव कर वीतराग अरहंत हुए।
मुक्त हुये सम्मेदशिखर से मुक्ति कंत भगवंत हुये॥४॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्थ तीर्थङ्कर अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

सुमतिनाथ ने नगर अयोध्या के वैभव का किया विकास।
पिता मेघप्रभ मात मंगला के घर जन्में किया प्रकाश।।१।।
देवों ने मंगल उत्सवकर गिरि सुमेरू अभिषेक किया।
ऐरावत पर लाए प्रभु को मात पिता को सौंप दिया।।२।।
राजपाट तज दीक्षाधारी भव भोगों से हुये उदास।
तपके द्वारा यथाख्यात चारित्र प्राप्तकर किया विकास।।३।।
शुक्ल ध्यान धर श्रेणी चढ़कर केवलज्ञान महान लिया।
मोक्ष गए सम्मेदशिखर से पद प्रधान निर्वाण लिया।।४।।
ॐ ह्रीं श्री पंचम तीर्थङ्कर श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

माँ जयश्यामा सिंहसेन नृप के घर गूंजी शहनाई।
प्रभु अनंत के जन्मोत्सव पर बजी बधाई सुखदाय़ी।।१।।
सुरपति ने सुरगिरि लेजाकर किया जन्म अभिषेक महान।
नगर विनीता के घर घर में गूंजे प्रभु के मंगलगान।।२।।
राज्यादिक वैभव को तजकर ले वैराग्य हुये दीक्षित।
केवलज्ञानलब्धि प्रगटाई पूरा विश्व हुआ हर्षित।।३।।
मतिश्रुतअवधि जन्म से ही था त्रिभुवन को मंगलकारी।
दीक्षा लेते ही पाया था ज्ञान मनःपर्यय भारी।।४।।
वीतराग अर्हत अवस्था पाई जग कल्याण किया।
गिरि सम्मेदशिखर पर्वत से प्रभु ने पद निर्वाण लिया।।५।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्दशम तीर्थङ्कर श्री अनंतनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

तीर्थंकर की जन्म भू अति पावन सुखधाम।
है सरयू के तीर पर पुरी अयोध्या नाम।।

ऋषभ अजित अभिनन्दन सुमति अनंतनाथ की जन्म धरा।
पुरी अयोध्या ही तो है साकेत, विनीता नाम खरा।।१।।
इक्ष्वाकु कुल में जन्में श्री रामचन्द्रजी दशरथ पुत्र।
रघुकुल भूषण न्यायवान मर्यादा पुरूषोत्तम सुपवित्र।।२।।
अष्टम थे बलभद्र आप नारायण थे लक्ष्मण भ्राता।
महासती सीतारानी थीं तीन लोक में विख्याता।।३।।

Scanned by CamScanner

प्रिय भ्राता लक्ष्मण का लख देहावसान हो गए उदास।
छह महिने तक मोहभाव से रखा देह को अपने पास॥४॥
देव कृतान्तवक्र सेनापति संबोधन करने आया।
मोह आपका दूर हो गया उर वैराग्य भाव छाया॥५॥
दीक्षा लेकर गए महावन में फिर घोर तपस्या की।
पहिला दूजा शुक्ल ध्यान धर नष्ट विभाव ममस्या की॥६॥
केवलज्ञान प्राप्त कर स्वामी जिन सर्वज्ञ महान हुय।
तुंगीगिरि से मोक्ष प्राप्तकर परम सिद्ध भगवान हुये॥७॥
सीताजी ने राज्य पाट तज दीक्षा ले तप किया महान।
अच्युत स्वर्ग सोलवाँ पाया हुई प्रतीन्द्र महा गुणवान॥८॥
लवकुश सुत भी हुए दीक्षित पावागढ़ से मुक्त हुए।
रघुकुल के कितने ही राजा सिद्ध स्वपद से युक्त हुए॥९॥
जन्म अयोध्या नगरी में ले जिनने सिद्ध स्वपद पाया।
उन सबको मेरा वंदन है सफल हुई मन वच काया॥१०॥
भरत क्षेत्र के सभी तीर्थकर लेते हैं जन्म यहाँ।
पर अवसर्पिणी काल में पड़ता है थोड़ा व्यवधान यहाँ॥११॥
क्षेत्र अयोध्या पूजन करके उरमें छाया है उल्लास।
निज स्वभाव का साधन लेकर सिद्धपुरी में करूँ निवास॥१२॥
कुछ भी नहीं असंभव जग में यदि पुरूषार्थ जागृत हो।
तभी सफलता चरण चूमती जब उद्यम का स्वागत हो॥१३॥
मैं भी तत्वज्ञान का उद्यम करके निज स्वरूप ध्याऊँ।
द्रव्य दृष्टि बन पर्यायों से दृष्टि हटा शिव पद पाऊँ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री अयोध्या, (साकेत, विनीतापुरी) अतिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि।

तीर्थ अयोध्या शाश्वत जिनवर पद उर धार।
श्रमकर जो पद श्रमण ले हो जावेभवपार॥

इत्याशीर्वादःपुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं अयोध्या अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः।

Scanned by CamScanner

श्रीकंपिलापुरी अतिशयक्षेत्र पूजन

विमलनाथ की जन्म भूमि कंपिलापुरी को करूँ प्रणाम।
त्रयोदशम तीर्थंकर स्वामी परमपूज्य पद कमल ललाम॥
गर्भजन्म तपज्ञान महोत्सव यहाँ हुए चारों कल्याण।
मन वच क़ाया से मैं पूजूँ जिनवर विमलनाथ भगवान॥
ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र कंपिलापुरी अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र कंपिलापुरी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः।
ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र कंपिलापुरी अत्र ममसन्निहितो भव भव वषट्।
निर्मल मुनिमनसम अति उज्जवल पावन जल प्रभु लाया हूँ।
जन्म मरण का नाश कराने शरण आपकी आया हूँ॥
विमलनाथ प्रभु चरणाम्बुज को भाव सहित मेरा वंदन।
गर्भ जन्म तप ज्ञान भूमि कंपिलापुरी को करूँ नमन॥१॥
ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।
उत्तम निर्मल शीतल बावन चंदन हे प्रभु लाया हूँ।
यह संसार ताप हरने को शरण आपकी आया हूँ ॥विमल॥२
ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि।
उत्तम निर्मल पावन शुचिमय अक्षत हे प्रभु लाया हूँ।
शाश्वत अक्षय पद पाने को शरण आपकी आया हूँ॥विमल.३॥
ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।
उत्तम निर्मल पावन पुष्प सुगंधित हे प्रभु लाया हूँ।
कामवासना को क्षय करने शरण आपकी आया हूँ। विमल.॥४॥
ॐ ह्रीं श्री कपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
उत्तम निर्मल अति पावन नैवेद्य भाव मय लाया हूँ।
क्षुधा व्याधि संपूर्ण नशाने शरण आपकी आया हूँ। विमल.५॥
ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
उत्तम निर्मल पावन दीपक ज्योतिमयी मैं लाया हूँ।
स्वपर प्रकाशक ज्योतिजगाने शरण आपकी आया हूँ। विमल.६॥
ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं. नि।

Scanned by CamScanner

उत्तम निर्मल पावन धूप सुरभिमय सुन्दर लाया हूँ।
ध्यानधूप में कर्म जलाने शरण आपकी आया हूँ॥
विमलनाथ प्रभु चरणाम्बुज को भाव सहित मेरा वंदन।
गर्भ जन्म तप ज्ञान कंपिलापुरी को करूँ नमन॥७॥
ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्योअष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।
उत्तम निर्मल पावन फल सुरतरू के शुचिमय लाया हूँ।
महा मोक्षफल के पाने को शरण आपकी आया हूँ। विमल॥८॥
ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
उत्तम निर्मल वसु द्रव्यों का अर्घ्य संजोकर लाया हूँ।
निज अनर्घ्य पद्वी पाने को शरण आपकी आया हूँ ॥विमल.९॥
ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

विमलनाथ की जन्म भू पुरी कंपिला क्षेत्र।
दर्शन करके हो गए सफल हमारे नेत्र॥
जम्बूद्वीप सुभरत क्षेत्र में है उत्तर प्रदेश के मध्य।
नगर कंपिलापुरी मनोहर जिन मंदिर से शोभित भव्य॥१॥
सहस्त्रार का स्वर्ग त्यागकर माँ जयदेवी उर आए।
गर्भ पूर्व छह मास जन्म तक रत्न सुरों ने बरसाए॥२॥
राजा श्री कृतवर्मा के गृह जन्में अति आनन्द हुआ।
चारों गति के जीवों का सब दूर शोक दुखद्वंद हुआ॥३॥
इन्द्रादिक ने हर्ष पूर्वक गिरि सुमेरू अभिषेक किया।
मंगल वाद्य बजा देवों ने परम हर्ष अतिरेक लिया॥४॥
राज्यपाट करते करते प्रभु को वैराग्य हुआ उत्पन्न।
लौकान्तिक सुर इन्द्रादिक ने तप कल्याण किया सम्पन्न॥५॥
तीन वर्ष छद्मस्थ अवस्था बीती पाया केवलज्ञान।
इन्द्र सुरों ने समवशरण रच किया आपका मंगलगान॥६॥
गिरि सम्मेद शिखर पर्वत से शुक्ल ध्यान से मुक्त हुये।
पद सिद्धत्व प्रगट कर अपना मुक्ति वधू से युक्त हुये॥७॥

Scanned by CamScanner

हुए करोड़ो वर्ष आज भी होता है प्रभु का जयगान।
पुरी कंपिला में दिव्यध्वनि के स्वर गूंज रहे भगवान॥८॥
यहाँ जन्म ले इस नगरी को त्रिभुवन मध्य प्रसिद्ध किया।
वीतराग अरहंत जिनेश्वर नर भव उत्तम सिद्ध किया॥९॥
नर भव से मोक्ष मार्ग पर कर सकता है जीव प्रयाण।
प्रगटाकर उर सम्यक्दर्शन पा सकता है सम्यक्ज्ञान॥१०॥
निज सम्यक्चारित्र साधना से पा लेता है निर्वाण।
निज पुरूषार्थ सफल करने का ही प्रयत्न है परम महान॥११॥
पुरी कंपिला धन्य हो गई तुमको पाकर हे भगवान।
पूजन करके धन्य हुआ मैं करूँ आपका जय जयगान॥१२॥
यहाँ धर्मशाला विशाल है जिनमंदिर शोभाशाली।
प्रभु प्रतिमा प्राचीन मनोहर वीतराग मुद्रावली॥१३॥
चरण कमल प्रभु के महान हैं उनको सादर नमन करूँ।
सम्यकदर्शन धारण करके मिथ्यातम् को नमन करूँ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

अतिशयक्षेत्र प्रसिद्ध हैं पुरी कंपिला नाम।
निज स्वभाव जो साधते पाते शिवपुर थान॥

इत्याशीर्वादःपुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमन्त्र—ॐ ह्रीं श्री कंपिलापुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः।

श्रीहस्तिनापुर अतिशयक्षेत्र पूजन

अतिशय क्षेत्र हस्तिनापुर की महिमा जग में अपरम्पार।
शांति कुन्थु अर तीर्थकर के हुये दिव्य कल्याणक चार॥
तीर्थकर श्री आदिनाथ के समय हुई रचना मनहार।
त्रय तीर्थकर की यह पावन जन्म भूमि सुन्दर सुखकार॥
जिन प्रभुओं की जन्म भूमि को भाव सहित मैं करूँ नमन।
निज स्वभाव का वैभव पाऊँ मैं भी प्रभु की कर पूजन॥

Scanned by CamScanner

ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशय क्षेत्र अत्र अवतर अवतर
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशय क्षेत्र अत्र तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्
चिदानंद चैतन्य अनाकुल निज स्वभाव जल शांत स्वरूप।
जन्म मरण दुख क्षय करने को तुम्हे चढ़ाऊँ त्रिभुवन भूप॥
शांति कुन्थु अर नाथ जिनेश्वर चरण कमल पूजूँ मनलाय।
तीर्थ हस्तिनापुर को बंदू निज स्वभाव पाऊँ सुखदाय॥१॥
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्म जरामृत्यु विनाशनायजलं नि.।
चिदानंद चैतन्य अनाकुल निजस्वभ.व चंदन सुखरूप।
भव आताप विनाश हेतु पद अग्र चढ़ाऊँ त्रिभुवन भूप॥शांति.२॥
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं.।
चिदानंद चैतन्य अनाकुल निज स्वभाव अक्षत शिवरूप।
अक्षयपद की प्राप्ति हेतु मैं चरणा चढ़ाऊँ त्रिभुवन भूप॥शांति.३॥
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि.।
चिदानंद चैतन्य अनाकुल निज स्वभाव के पुष्प अनूप।
कामबाण विध्वंस हेतु मैं तुम्हे चढ़ाऊँ त्रिभुवन भूप॥शांति.४॥
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।
चिदानंद चैतन्य अनाकुल निज स्वभाव चरू तृप्त स्वरूप।
क्षुधारोग के नाश हेतु मैं चरण चढ़ाऊँ त्रिभुवन भूप ॥शांति.५॥
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.निं.।
चिदानंद चैतन्य अनाकुल निज स्वभाव का दीप अनूप।
मोहतिमिर अज्ञाननाश हित चरण चढ़ाऊँ त्रिभुवन भूप ॥शांति.६॥
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं.निं.।
चिदानंद चैतन्य अनाकुल निज स्वभाव की धूप अनूप।
अष्टकर्म विध्वंस हेतु मैं चरण चढ़ाऊँ त्रिभुवन भूप॥शांति.७॥
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं नि.।
चिदानंद चैतन्य अनाकुल निज स्वभाव फल मोक्ष स्वरूप।
महामोक्षफल प्राप्ति हेतु मैं चरण चढ़ाऊँ त्रिभुवन भूप॥शांति.८॥
ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।

Scanned by CamScanner

चिदानंद चैतन्य अनाकुल निज स्वभाव का अर्घ्य अनूप।
निज अनर्घ्य पदवी पाने को तुम्हे चढाँऊँ त्रिभुवन भूप॥
शांति कुन्थु अर नाथ जिनेश्वर चरण कमल पूजूँ मनलाय।
तीर्थ हस्तिनापुर को बंदू निज स्वभाव पाऊँ सुखदाय ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ पदप्राप्ताय अर्घ्य नि.।

जयमाला

नगर हस्तिनापुर तथा गजपुर नाम सुजान।
शांतिकुन्थु अर नाथ के हुये चार चल्याण॥

जम्बूद्वीप सुभरत क्षेत्र में कुरू जांगल है देश महान।
भव्य राजधानी है सुन्दर नगर हस्तिनापुर छविमान॥१॥
आदिनाथ प्रभु ने अहार लेकर इसको विख्यात किया।
धन्य हुये श्रेयांस नृपति अक्षय सुख का भण्डार लिया॥२॥
यही ऐतिहासिक नगरी है पौराणिक जग में सुप्रसिद्ध।
पांच पांडव यही राज करते थे जिनकी कथा प्रसिद्ध॥३॥
शांति कुन्थु अर नाथ चक्रवर्ती तीर्थकर हुये यहाँ।
कामदेव का पद पाकर भी मुनि पद धारण किया यहाँ॥४॥
गर्भ जन्म तप ज्ञान भूमि हैं यह तीनों तीर्थकर की।
चरणचिन्ह जिनके शोभित हैं गूंज रही जय जिनवर की॥५॥
चक्रवर्ती पद त्यागा तीनों प्रभुओं ने निज ध्यान किया।
सोलह वर्ष रहे छदमस्थ स्वतः फिर केवलज्ञान लिया॥६॥
शांतिनाथ सोलम तीर्थकर सतरहवें श्री कुन्थु जिनेश।
अष्टादशम श्री अर जिनवर जिनकी महिमा परम विशेष॥७॥
पंचमचक्री शांतिनाथ प्रभु षष्टम कुन्थुनाथ स्वामी।
सप्तम चक्री अरहनाथ प्रभु तीनों श्रेष्ठ महानामी॥८॥
कामदेव बारहवें अनुपम शांतिनाथ प्रभु निष्कामी।
तेरहवें श्री कुन्थुनाथ चौदहवें अरहनाथ नामी॥९॥
तीनों ही पद त्याग आत्मा के स्वरूप में लीन हुये।
मुक्त हुये सम्मेदशिखर से स्वतः सिद्ध स्वाधीन हुये॥१०॥
इस नगरी की महिमा अनुपम इस नगरी की कथा अनेक।
इस नगरी के महाभाग्य पर सुर भी देते मस्तक टेक॥११॥

Scanned by CamScanner

यहाँ विशाल बना जिन मंदिर राजा सुगनचंद द्वारा।
भव्य मूर्तियाँ यहाँ अनेकों आईं भक्तों के द्वारा॥१२॥
शांति कुन्थुअर की नसिया जी चरण चिन्ह से युक्त मनोज्ञ।
जलमंदिर श्री महावीर का जो है दर्शन करने योग्य।१३॥
चौबीसों तीर्थकर प्रभु के लघुमंदिर है प्रथक प्रथक।
पंचमेरु नन्दीश्वर मंदिर की शोभा रमणीय प्रथक॥१४॥
यह तेरा पंथी जिनमंदिर अति प्राचीन भव्य भावन।
श्वेताम्बर जिनमंदिर इसके पास बना है मन भावन॥१५॥
बीस पंथ का जंबूद्वीप जिनालय अति विशाल सुन्दर।
जंगल में तीनों नसियाँ हैं चरण चिंह प्रभु के मनहर॥१६॥
ब्रह्मचर्य आश्रम विद्यालय कई धर्मशाला सुविशाल।
उत्तर भारत में प्रसिद्ध ह' मुख्य तीर्थ है यह इसकाल॥१७॥
इसी क्षेत्र पर शांति कुन्थु अर की महिमा गाऊँ पावन।
हुये चार कल्याणक प्रभु के मंगलकारी मन भावन॥१८॥
श्री जिनवर की पूजन करके चरण कमल नित ध्याऊँ मैं।
भेदज्ञान की महिमा पाकर निज स्वभाव में आऊँ मैं॥१९॥
पाप पुण्य आश्रव दुखकारी संवरभाव जगाऊँ मैं।
पूर्ण निर्जरा द्वारा स्वामी आठों कर्म जलाऊँ मैं॥२०॥
जिन प्रभुचरण शरण को पाकर उर में अति आनंद हुआ।
प्रभु पूजन से निमिष मात्र में दूर शोक दुख द्वद हुआ॥२१॥
जिस पथ पर चलकर प्रभु तुमने सिद्ध स्वपद को प्रगटाया।
मैं भी उस पथ पर आ जाऊँ यही चाव उर में लाया॥२२॥

ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

शांति कुन्थुअर नाथ के चरण कमल उरधार।
शुद्धातम जो ध्यावते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री हस्तिनापुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः।

• • • • • • • •

Scanned by CamScanner

श्रीवाराणसी अतिशयक्षेत्र पूजन

सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्व जिन तेईसवें पार्श्व भगवान।
वाराणसी नगर में जन्मे दोनों तीर्थंकर गुणवान॥
गर्भ जन्म तप कल्याणक मंगलमय यहीं हुए भगवंत।
भाव सहित पूजन करता हूँ मुझे सुमति दो हे अरहंत॥

ॐ ह्रीं श्री वारणसी अतिशयक्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

शुचिमय समतानीर सुपावन जन्म मरण क्षय करता है।
समयभाव रस जो पी लेता भव रोगों को हरता है॥
श्री सुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ की जन्मभूमि को करूँ नमन।
भाव सहित जिनवर दर्शन से होता है सम्यक्दर्शन॥१॥
ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.
शुचिमय समताचंदन पावन भव आताप मिटाता है।
ज्ञान भाव रस जो पी लेता भव की तपन बुझाता है ॥श्री.२॥
ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं. नि।
शुचिमय समता अक्षत अनुपम अक्षयपद का दाता है।
शुद्धभाव में जो आता वह भव सागर तर जाता है॥श्री.३॥
ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद अक्षतं नि.।
शुचिमय समता पुष्प सुगंधित कामभाव क्षय करता है।
द्रव्य दृष्टि बनने वाला ही भ्रमण चतुर्गति हरता है॥श्री.४॥
ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं. नि।
शुचिमय समता के चरु उत्तम क्षुधारोग क्षय करते हैं।
जो पर्याय दृष्टि तजते हैं वे ही शिवसुख भरते हैं॥श्री.५॥
ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतियशक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं. नि।
शुचिमय समता दीपज्योति से मोहतिमिर हट जाता है।
शुक्ल ध्यान से ज्ञानावरणी कर्म पूर्ण मिट जाता है॥श्री.६॥
ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं.।नि.।

Scanned by CamScanner

शुचिमय समता धूप सुपावन अष्टकर्म की धाता है।
कर्म आवरण वह क्षय करता जो भी दृष्टा ज्ञाता है॥
श्री सुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ की जन्मभूमि को करूँ नमन।
भाव सहित जिनवर दर्शन से होता है सम्यक्दर्शन॥७॥

ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।

शुचिमय समता का पावन फल महामोक्षफल दाता है।
आत्मध्यान की परमशक्ति से भव संकट कट जाता है॥श्री८॥.

ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि.।

शुचिमय समताभाव अर्घ्य ही पद अनर्घ्य का दाता है।
निज पर भेदज्ञान जो करता वह इस पद को पाता है॥श्री.९॥

ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

प्रभु सुपार्श्व अरू पार्श्व की जन्म भूमि सुविशाल।
चरण कमल प्रभु पूज कर हरूँ कर्मजंजाल॥

काशी नगरी का ही नाम बनारस, वाराणसी प्रसिद्ध।
गंगा तट पर बसी मनोहर सकल जगत में अतिसुप्रसिद्ध॥१॥
श्री सुपार्श्व ने ग्रैवेयक तज माँ पृथ्वी उर धन्य किया।
सुप्रतिष्ठ राजा के घर में श्री जिनवर ने जन्म लिया॥२॥
जब वैराग्य हुआ उर में तो राज्य पाट सब ठुकराया।
केवलज्ञान महान तपस्या निश्चय करके प्रगटाया॥३॥
गिरि सम्मेदप्रभासकूट से महामोक्ष निर्वाण लिया।
पद सिद्धत्व प्रगटकर प्रभु ने ज्ञानानंद महान लिया॥४॥
सप्तम तीर्थकर सुपार्श्व जिन प्रभु उपसर्गजयी भगवान।
विनय भाव से पूजन करके पाऊँ वीतराग विज्ञान॥५॥
इसी नगर में पार्श्वनाथ प्रभु प्राणत स्वर्ग त्याग आए।
माँ वामा के उदर पधारे देवों ने मंगल गाए॥६॥
अश्वसेन नृप के घर जन्में बजी सुरों की शहनाई।
इन्द्रादिक ने गिरि सुमेरू अभिषेक रचा महिमा गाई॥७॥
बालब्रह्मचारी रह प्रभु ने उर वैराग्य किया धारण।
पंच महाव्रत ले निश्चय तप किया मुक्ति का जो कारण॥८॥

Scanned by CamScanner

चार मास छद्मस्थ रहे प्रभु अहिच्छत्र में ध्यान किया।
पूर्व बैर से कमठ जीव ने आ उपसर्ग महान किया॥९॥
जय करके उपसर्ग ध्यान से अनुपम केवलज्ञान लिया।
मुक्त हुये सम्मेदशिखर से पद सिद्धत्व प्रधान लिया॥१०॥
तेईसवें तीर्थकर प्रभु पार्श्वनाथ को करूँ नमन।
नगर बनारस चरण पूज प्रभु के पाऊँ सम्यक्दर्शन॥११॥
हैं अनेक जिनमंदिर इस पावन नगरी में परम विशाल।
वृषभादिक श्री वीरजिनेश्वर की जय जय होती तिहुँकाल॥१२॥
गंगा के तट स्यादवाद विद्यालय विद्या का आगार।
शिखरबंद जिनमन्दिर दो हैं जिनध्वज लहराती मनहार॥१३॥
इस नगरी के दर्शन करके हर्ष हुआ मन में भारी।
प्रभु चरणों की पूजन करके करूँ मुक्ति की तैयारी॥१४॥
पहिले सम्यक्दर्शन पाऊँ फिर पाऊँ सम्यक्दर्शन।
फिर सम्यक्चारित्र प्राप्त कर निश्चय व्रत लूँ महा सघन॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

वाराणसी महान की महिमा अपरम्पार।
निज स्वभाव जो साधते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री वाराणसी अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री कुन्डलपुर (वैशाली) अतिशयक्षेत्र पूजन

कुन्डग्राम कुन्डलपुर वैशाली जनपद का नगर महान।
महावीर के गर्भ जन्म तप यहाँ हुये तीनों कल्याण॥
नृप सिद्धार्थ मात त्रिशला के नंदन वर्धमान भगवान।
धन्य हुई कुन्डलपुर नगरी हुआ विश्व में जय जय गान॥
है बिहार में नालंदा के निकट वीर का जन्मस्थान।
भाव सहित मैं पूजन करके करूँ आत्मा का ही ध्यान॥

Scanned by CamScanner

ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशय अत्र अवतर अवतर
ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुरः अतिशय अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।
स्वपर विवेक नीर ले निज परिणाम विशुद्ध करूँ।
जन्म मरण के नाश हेतु निज अन्तर शुद्ध करूँ॥
कुन्डलपुर की जन्म भूमि को सादर नमन करूँ।
आत्म ज्ञान की परम शक्ति ले प्रभु भव भार हरूँ।१॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं. नि।
स्वपर विवेक सलिल चंदन से भव का कष्ट हरूँ।
भवाताप के नाश हेतु निज अंतर शुद्ध करूँ॥कुन्डलपुर.॥२॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।
स्वपर विवेक सुअक्षत ले भव सागर पार करूँ।
अक्षय पद की प्राप्ति हेतु निज अंतर शुद्ध करूँ॥कुन्डलपुर.॥३॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुरअतिशयक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।
स्वपर विवेक पुष्प के द्वारा कलुषित भाव हरूँ।
कामबाण विध्वंस हेतु निज अंतर शुद्ध करूँ॥कुन्डलपुर.॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीकुन्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
स्वपर विवेक सु पावन चरू ले पर का मान हरूँ।
क्षुधारोग के नाश हेतु निज अंतर शुद्ध करूँ॥कुन्डलपुर.५॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
स्वपर विवेक ज्ञान दीपक ले मिथ्या तिमिर हरूँ।
मोहकर्म के नाश हेतु निज अंतर शुद्ध करूँ॥कुन्डलपुर.६॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं.
स्वपर विवेक धूप के द्वारा कल्मष सकल हरूँ।
अष्टकर्म के नाश हेतु निज अंतर शुद्ध करूँ॥कुन्डलपुर७॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।
स्वपर विवेक ज्ञान फल पाऊँ चहुँगति भ्रमण हरूँ।
महामोक्षफल पाने को निज अंतर शुद्ध करूँ॥कुन्डलपुर॥८॥
ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।

Scanned by CamScanner

स्वपर विवेक अर्घ्य की महिमा से संहार हरूँ।
पदअनर्घ्य पाने को प्रभु निज अंतर शुद्ध करूँ॥
कुन्डलपुर की जन्म भूमि को सादर नमन करूँ।
आत्म ज्ञान की परम शक्ति ले प्रभु भव भार हरूँ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं

जयमाला

वर्धमान अतिवीर को बारम्बार प्रणाम।
रत्नत्रय का वरण कर पाऊँ प्रभु निज धाम॥
ज्ञातृवंश क्षत्रिय कुल काश्यप गोत्री वीर महान।
जन्म क्षेत्र कुन्डलपुर नगरी जग में श्रेष्ठ महान॥१॥
सोलह स्वप्न देख माता ने सहज विचार किया।
स्वप्न फलों का सुनकर मन में हर्ष अपार लिया॥२॥
पंद्रह मास रत्न वर्षा से नगरी धन्य हुई।
स्वर्गलोक सम शोभा पाकर पुरी अनन्य हुई॥३॥
जन्म समय सुरपति ऐरावत गज लेकर आया।
गिरि सुमेरु पर कर अभिषेक हृदय में हर्षाया॥४॥
जब वैराग्य हुआ प्रभु को आये लौकांतिक देव।
धन्य धन्य कह उठे वीर प्रभु दीक्षित हुये स्वमेव॥५॥
तप कर ऋजुकूला तट प्रभु ने केवलज्ञान लिया।
इन्द्रादिक ने समवशरण रच जय जयकार किया॥६॥
दे उपदेश भव्य जीवों को दिया मुक्ति संदेश।
विपुलाचल पर खिरी दिव्यध्वनि पावन परम विशेष॥७॥
तत्वज्ञान की धार प्रवाहित करके वीर सुवीर।
योग निरोध प्राप्ति हित आए पावापुर के तीर॥८॥

Scanned by CamScanner

निज स्वभाव साधन से पाया सिद्ध स्वपद निर्वाण।
जय जयकार किया देवों ने गाए मंगलगान॥९॥
मैं भी जिन उपदेश ग्रहण कर जीवन सफल करूँ।
सर्व विषमताएँ अनादि की मैं प्रभु सकल हरूँ॥१०॥
अनंतानुबंधी के द्वारा अब तक व्यथित हुआ।
क्रोध मान माया लोभादिक से मैं यथकित हुआ॥११॥
दर्शनमोह न जीत सका मिथ्यातम के कारण।
इसीलिये पाए अनादि से भव भव दुख दारुण॥१२॥
अप्रत्याख्यानावरणी का अन्त न कर पाया।
अविरति के द्वारा पापों का तरूवर उपजाया॥१३॥
प्रत्याख्यानावरणी के कारण प्रमाद भाया।
पंच पाप पंद्रह प्रमाद से मैंने दुख पाया॥१४॥
सदा संज्वलन की छाया में चऊ कषाय भायी।
इन कषाय भावों से मैंने दुर्गति उपजायी॥१५॥
योग निरोध नहीं कर पाया चचल भाव रहा।
मन वच तन के द्वारा मैंने भव का कष्ट सहा॥१६॥
अनंताानुबंधी मिथ्यातम हरते ही जाती।
फिर तो तीन चौकड़ी भी स्वयंमेव चली जाती॥१७॥
यह पुरूषार्थ परम हितकारी कभी न कर पाया।
इसीलिये प्रभु आज तुम्हारे द्वारे पर आया॥१८॥
सम्यकदर्शन की निधि दे· दो मिथ्यातम हरलो।
भेदज्ञान का सूर्य प्रकाशित कर निज सम कर लो॥१९॥
यही विनय है यही प्रार्थना सुन लो हे स्वामी।
पूजन का फल मिले यही होऊँ शिवपथ गामी॥२०॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जन्म भूमि कुन्डलपुरी महिमा अपरम्पार।
निज अनुभव को प्राप्त कर हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री कुन्डलपुरवैशाली अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः।

Scanned by CamScanner

श्री खंडगिरि उदयगिरि पूजन

श्री खडगिरि श्री उदयगिरि देश कलिंग मध्य विख्यात।
जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र में अति प्रसिद्ध है उत्कल प्रान्त॥
छोटे बड़े जिनालय पांचों श्री खंडगिरि पर शोभित।
हैं प्राचीन गुफाएं पन्द्रह जिनमें जिन प्रतिमा परिमित॥
उदयगिरि सामने जहाँ प्राचीन गुफाएं अष्टादश।
नीचे जिनमंदिर विशाल है तीन धर्मशाला हैं बस॥
छोटे छोटे दोनों पर्वत लखकर होता हर्ष महान।
श्री जिनेन्द्र दर्शन पूजन से होता है सबका कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो पुष्पांजलि क्षिपामि।

अष्टक

क्षीर समुद्र समान श्वेत जल पावन प्रभु लेकर आऊँ।
त्रिविध ताप की व्याधि हटाऊँ निज स्वरूप दर्शन पाऊँ॥
श्री खंडगिरि श्री उदयगिरि के दर्शन कर हर्षाऊँ।
पूर्णानंदी ज्ञानस्वभावी निज स्वभाव महिमा पाऊँ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्योजन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।
तन ज्वर हरने वाला मलयागिरि पावन चंदन लाऊँ।
भवआतप संपूर्ण विनाशूँ निजस्वभाव दर्शन पाऊँ। श्रीखंडगिरि॥२॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।
धवलोज्ज्वल तन्दुल अखंड मैं भावमयी लेकर आऊँ।
अक्षय पद के प्रगटाने को निजस्वरूप दर्शन पाऊँ॥श्रीखंडगिरि.३॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।
सरस सुगंधित पुष्प अनूठे भावमयी लेकर आऊँ।
कामबाण विध्वंस हेतु अब निजस्वरूप दर्शन पाऊँ। श्रीखंडगिरि॥४॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
दर्शनीय नैवेद्य स्वरसमय भावमयी लेकर आऊँ।
क्षुधारोग संपूर्ण मिटाने निज स्वरूप दर्शन पाऊँ॥श्री खंडगिरि॥५॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

Scanned by CamScanner

तिमिर विनाशक जगमग दीपक भावपूर्ण लेकर आऊँ।
मोहमहातम के विनाशहित निजस्वरूप दर्शन पाऊँ।
श्री खंडगिरि श्री उदयगिरि के दर्शन कर हर्षाऊँ।
पूर्णानंदी ज्ञानस्वभावी निज स्वभाव महिमा पाऊँ।। ६ ।।
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्योमोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
दश प्रकार की धूप सुरभिमय भावपूर्ण लेकर आऊँ।
अष्टकर्म विध्वंश हेतु अब निजस्वरूप दर्शन पाऊँ। श्रीखंडगिरि।।७।।
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं नि.।
कल्पवृक्ष सम उत्तम फल प्रभु भावपूर्ण लेकर आऊँ।
पर मुक्ति काफल पाने को निजस्वभाव दर्शन पाऊँ। श्रीखंडगिरि।।८।।
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
जल फलादि वसु द्रव्य सजाकर भाव अर्घ्य उत्तम लाऊँ।
पदअनर्घ्य अविलंब प्राप्तिहित निजस्वभाव दर्शनपाऊँ। श्रीखंडगिरि।।९।।
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

श्री खंडगिरि उदयगिरि उत्कल प्रान्त महान।
भाव सहित पूजन करूँ मन वच तन धर ध्यान।:
ये दोनों पर्वत अति सुन्दर एक दूसरे के सन्मुख।
परम तपस्या भूमि मुनीश्वर होते निज स्वभाव उन्मुख।।१।।
महाप्रतापी खारवेल सम्राट विश्व में हुए प्रसिद्ध।
जयकर देश अनेकों लेख लिखाये पर्वत पर सुप्रसिद्ध।।२।।
प्रभु कलिंगजिन की प्रतिमा को मगधसम्राट वापस लाए।
जैन धर्म की विजय पताका फहरा मन में हर्षाए।।३।।
यही कुमारी पर्वत भी कहलाता था सुन्दर विख्यात।
हैं प्राचीन गुफाएँ सुन्दर झरते जल के सरस प्रपात।।४।।
पार्श्वनाथ अरु महावीर का समवशरण भी आया था।
भव्य जनों ने दीक्षा लेकर मोक्षमार्ग निज पाया था।।५।।

Scanned by CamScanner

इस पर्वत को सिद्धक्षेत्र भी कहते हैं अनेक विद्वान।
हैं अनेक उत्कीर्ण मूर्तियाँ जिन मुनियों की महा महान।।६।।
भुवनेश्वर के पास खंडगिरि तथा उदयगिरि पर्वत है।
नित्य यात्री शत शत आते दर्शन कर होते नत है।।७।।
भुवनेश्वर की दूजी ओर पुरी है जगन्नाथ अतिख्यात।
दक्षिण द्वार ऋषभदेव की कृष्णवर्ण प्रतिमा विख्यात।।८।।
जो मुनि मुक्त हुए हों उनको बार-बार मेरा वन्दन।
भेदज्ञान की उत्तम निधि ले पाऊँ मैं सम्यक्दर्शन।।९।।
इन सबके दर्शन पूजन कर नित्य आत्म चिंतवन करूँ।
निजस्वभाव की महिमा गाऊँ प्रभु निजका ही मनन करूँ।।१०।।
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

श्री खंडगिरि उदयगिरि भव्यक्षेत्र सुखकार।
भाव सहित जो पूजते पाते सौख्य अपार।।
इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपामि
जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि उदयगिरि क्षेत्रेभ्यो नमः

श्री गोम्मटेश्वर पूजन

जम्बूद्वीप सुभरत क्षेत्र में है सुन्दर कर्नाटक प्रांत।
श्रवण बेलगुलपुरी मनोहर बहुजिन मंदिर शोभित शांत।।
चन्द्रगिरी की भव्य पहाड़ी पर मंदिर है अति प्रचीन।
विंध्यागिरि पर गोम्मटेश्वर प्रतिमा आत्मध्यान में लीन।।
अखिल विश्व में नही दूसरी ऐसी कहीं श्रेष्ठ प्रतिमा।
दशो दिशा में गूंज रही है श्री बाहुबलि की महिमा।।
पूज्य गोम्मटेश्वर दर्शन से हर्षित हृदय अनन्य हुआ।
भक्ति भाव से प्रभु पूजन का अवसर पा मैं धन्य हुआ।।
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर जिन अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर जिन अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर जिन अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

Scanned by CamScanner

मैं शुद्ध प्रासुक नीर की त्रय धार चरणों में करूँ।
यह जन्म मरण अभाव करके मोक्षलक्ष्मी को वरूँ॥
श्री गोम्मटेश्वर बाहुबलि के चरण का पूजन करूँ।
प्रभु अष्टकर्म विनाश हित शुद्धात्म का चिंतन करूँ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
मैं सलिल शीतल मलय चंदन प्रभु चरण आगे धरूँ।
संसारताप अभाव करके मोहलक्ष्मी को वरूँ ॥श्रीगोम्मटे.॥२॥
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।
मैं श्वेत उज्जवल धवल तंदुल पुंज प्रभुपद मैं धरूँ।
अक्षय अनूप अखण्ड पद पा मोक्षलक्ष्मी को वरूँ ॥श्रीगोम्मटे.॥३॥
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर जिनाय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि.।
शुभ भाव पुष्प मनोज्ञ अनुपम सुरभिमय अर्पण करूँ।
यह कामरोग अभाव करके मोक्षलक्ष्मी को वरूँ ॥श्रीगोम्मटे.॥४॥
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वरजिनाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।
शुचिमय सुरम्य स्वभावमय नैवेद्य उर अतर धरूँ।
यह क्षुधाव्याधि अभाव करके मोहलक्ष्मी को वरूँ॥श्रीगोम्मटे.॥५॥
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर जिनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
मिनथ्यात्व मोह अभावकर उर ज्ञान का दीपक धरूँ।
मैं भेदज्ञान अपूर्व पाकर मोक्षलक्ष्मी को वरूँ॥श्रीगोम्मटे.॥६॥
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर जिनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
निज ध्यान अग्नि समूह में वसु कर्म का ईंधन धरूँ।
मैं राग द्वेष अभाव करके मोक्षलक्ष्मी को वरूँ॥श्री गोम्मटे.॥७॥
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर जिनाय अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं नि.।
मैं परम पावन सिद्ध पद की भावना प्रति फल करूँ।
मैं सहज शिवपद प्राप्त करके मोक्षलक्ष्मी को वरूँ॥श्रीगोम्मटे.॥८॥
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर जिनाय मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि।
जल आदि अष्ट प्रकार निर्मित अर्घ्य चरणों में धरूँ।
शाश्वत अनर्घ्य अनंत पद पा मोक्षलक्ष्मी को वरूँ॥श्री गोम्मटे.॥९॥
ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर जिनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.

Scanned by CamScanner

जयमाला

गोम्मटेश्वर नाथ को बारम्बार प्रणाम।
भक्ति भाव से मैं जपूं प्रभु को आठों याम॥
हे गोम्मटेश्वर परमं देव मेरा वंदन स्वीकार करो।
हे ऋषभदेव सुत बाहुबली मेरा अर्चन स्वीकार करो॥१॥
हे मात सुनंदा के नंदन मेरा प्रणाम स्वीकार करो।
हे अनुज भरत चक्रेश्वर मेरी पूजन स्वीकार करो॥२॥
तुम राज संपदा को ठुकरा चल पड़े तपस्या करने को।
प्रभु आदिनाथ से दीक्षा ले चल पड़े कर्म वसु हरने को॥३॥
भीषण उपसर्गों पर जय पा प्रभु आत्म ध्यान में हुये लीन।
शुभअशुभ विभावों को क्षयकर पाया शाश्वत पद निजाधीन॥४॥
तुम राग द्वेष पर जय पाकर हो गये वीतरागी महान।
केवलज्ञानी बनकर तुमने पाया सर्वज्ञ स्वपद महान॥५॥
घातिया कर्म चारों हर कर अर्हंतदेव भगवंत हुये।
फिर क्षय करके अघातिया भी तुम मुक्ति कामिनी कंत हुये॥६॥
तीनों लोकों में गूंज उठी प्रभु विमल कीर्ति की जय गाथा।
युग कोटि-कोटि बीते, चरणों में विश्व झुकाता है माथा॥७॥
यह श्रवणबेलगुल क्षेत्र सातिशय चंद्र विंध्यगिरि मन भावन।
है त्याग तपस्या का प्रतीक विचरण करते निर्ग्रन्थ श्रमण॥८॥
अंतिम श्रुत केवलि भद्रबाहु स्वामी की तपोभूमि पावन।
हो गये दिगंबर चन्द्रगुप्त सम्राट यहाँ तज सिंहासन॥९॥
चामुंडराय की माता ने सपने में किये देव दर्शन।
तब नेमिचन्द्र आचार्य देव ने किया अपूर्व मार्ग दर्शन॥१०॥
गोम्मट चामुंडराय ने फिर गुरू आज्ञा का बहुमान किया।
भारत के श्रेष्ठ कलाकारों ने प्रतिमा का निर्माण किया॥११॥
श्री नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती ने बिम्ब प्रतिष्ठा की।
तब लक्ष-लक्ष जनता ने आ चरणों मे भव्य वंदना की॥१२॥
आश्चर्य चकित हो गये सभी जय जय मंगलध्वनि गूंज उठी।
सारी जगती प्रभु चरणों का पूजन वंदन कर झूम उठी॥१३॥

Scanned by CamScanner

हो गई प्रतिष्ठा तो जल थल नभ में प्रभु जय जयकार हुआ।
मंगल वाद्यों की ध्वनि गूंजी मां का सपना साकार हुआ॥१४॥
यह विंध्यगिरि के पर्वत की ही एक शिला से है निर्मित।
ऊंची विशाल सत्तावन फिट दर्शनकर होता विश्व चकित॥१५॥
नासाग्र द्रष्टि निज ध्यान मयी कायोत्सर्ग मुद्रा महान।
पुलकित हो जाते भव्य जीव सुरगण भी गाते मधुर गान॥१६॥
हैं एक हजार वर्ष बीते प्रभु प्रतिमा का निर्माण हुए।
मंगल अभिषेक महोत्सव के घर-घर में मंगल गान हुये॥१७॥
श्री बाहुबलि का प्रतिष्ठापना सहस्त्राब्दि उत्सव महान।
संदेश दे रहा जगती को है वीतरागता ही प्रधान॥१८॥
यह राग द्वेष अरु क्षोभ क्रोधादि कषायें नाशवान।
जो इन्हें नष्ट कर देता है वह हो जाता मानव महान॥१९॥
हे गोम्मटेश्वर महादेव मैं भी शिव पँथ पर आ जाऊं।
सम्यक्त्व शक्ति को पाकर मैं वैराग्य भावना ही भाऊँ॥२०॥
रत्नत्रय धारी जिन मुनि बन, मैं निज स्वरूप में रम जाऊं।
शुद्धात्म तत्व का आश्रय ले निजशाश्वत सिद्ध स्वपद पाऊँ॥२१॥
मैं शरण आपकी आया हूँ मेरा दुखमय संसार हरो।
चारों गतियों के संकट से है गोम्मटेश उद्धार करो॥२२॥

ॐ ह्रीं गोम्मटेश्वर जिनाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

गोम्मटेश्वर के चरण भाव सहित उर धार।
निज आतम का ध्यान धर हो जाऊं भव पार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री गोम्मटेश्वर बाहुबलिजिनाय नमः

श्री मूडबिद्री अतिशयक्षेत्र पूजन

दक्षिण भारत कर्नाटक में दक्षिण कन्नड़ भाग प्रसिद्ध।
अतिशय क्षेत्र मूडबिद्री है कथित जैन काशी सुप्रसिद्ध॥
क्षेत्र मूल नायक जिन स्वामी पार्श्वनाथ को करूँ नमन।
त्रिभुवन तिलक शीर्ष चूड़ामणि चंद्रनाथ को है वंदन॥

Scanned by CamScanner

वृषभादिक श्रीवीर जिनेश्वर तीर्थङ्कर सब करूँ नमन।
रत्नमयी जिनवर प्रतिमाओं को मैं करता हूँ वंदन॥
धवल जय धवल महाधवल प्राचीन शास्त्रों के दर्शन।
परम पवित्र भावना पूर्वक करता हूँ जिनवर पूजन॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमासमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिनप्रतिमासमूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिनप्रतिमा समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं

अष्टक

शुद्धभाव समरस जल पीकर पर भावों का करूँ विनाश
त्रिविध ताप की पीड़ा नाशूँ पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश॥
अतिशय क्षेत्र मूडबिद्री को भाव सहित मेरा वंदन।
जिन प्रतिमाओं के दर्शनकर पाऊँ मैं सम्यक दर्शन॥१॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

शुद्धभाव चंदन चर्चित कर भव आतप का करूँ विनाश।
निजस्वभाव साधन के द्वारा पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश। अतिशय.॥२॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिनप्रतिमाभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं.

शुद्ध भाव अक्षत अर्पित कर अक्षय पद का करूँ विकास।
तत्वों का सम्यक् निर्णयकर पाऊँ केवलज्ञान प्रकांश॥अतिशय.॥३॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रेस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं.नि.।

शुद्ध भाव पुष्पांजलि द्वारा काम भाव का करूँ विनाश।
सहज स्वभाव साधना करके पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश॥अतिशय॥४॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिनप्रतिमाभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि।

शुद्ध भाव नैवेद्य सरस पा क्षुधा व्याधि का करूँ विनाश।
एकमात्र निज का दर्शनकर पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश॥अतिशय.॥५॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिनप्रतिमाभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नाम नेवैद्यं नि.।

शुद्ध भाव की ज्ञान ज्योति ले मित्यातम का करूँ विनाश
दर्शमोह चारित्र मोह हर पाऊँ केवल ज्ञान प्रकाॐ॥अतिशय॥६॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिनप्रतिमाभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं. नि।

Scanned by CamScanner

शुद्धभाव की ज्ञान धूप ले अष्टकर्म का करूँ विनाश।
सादि अनंत सिद्ध पद पाऊँ, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश
अतिशय क्षेत्र मूडबिद्री को भाव सहित मैं करूँ नमन।
जिन प्रतिमाओं के दर्शन कर पाऊँ मैं सम्यक् दर्शन॥७॥
ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.
शुद्धभाव वैभव फल पाऊँ भव बंधन का करूँ विनाश।
शिवमय परम मोक्षफल पाऊँ, पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश॥अतिशय.॥८॥
ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिनप्रतिमाभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि.।
शुद्धभाव के अर्घ्य चढ़ाऊं नाश करूँ इस भव का त्रास।
पद अनर्घ्य प्रभु प्राप्त करूँ मैं पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश॥अतिशय.९॥
ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिन प्रतिमाभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

विशेष अर्घ्य

हीरा माणिक मरकत नीलम मोती मूंगा दुर्लभ रूप।
पुष्पराज वैडूर्य, स्फटिक नव रत्नों के बिम्ब अनूप॥
महाभाग्य से दर्शन पाये दूर शोक दुख द्वन्द हुआ।
जल फलादि वसुपद्रव्य अर्घ्य अर्पित कर अति आनन्द हुआ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री मूड़बिद्रीक्षेत्रस्थ जिनेन्द्ररत्न प्रतिमाभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।
षटखंडागम धवल जय धवल महाधवल जिन शास्त्र महान।
द्वादशांग श्रुत श्री जिनवाणी भाव सहित बन्दूँ धर ध्यान॥
जल फलादि वसुद्रव्य अर्घ्य ले जिन शास्त्रों को नमन करूँ।
भेद ज्ञान की प्राप्ति हेतु मैं निज श्रद्धा के सुमन धरूँ॥२॥
ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थधवलादिक जिनशास्त्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

अतिशय क्षेत्र महान को बन्दूँ बारम्बार।
निज स्वभाव की शक्ति से करूँ आत्म उद्धार॥
श्री मूडबिद्री की महिमा भारत भर मे है बहुख्यात।
अति प्राचीन दिगम्बर जिनचैत्यों की यह नगरी विख्यात॥१॥
परम पूज्य शुभ तीर्थक्षेत्र यह अष्टादश मंदिर सुन्दर।
कलापूर्ण प्राचीन कला का इसमें है दर्शन सुखकर॥२॥

Scanned by CamScanner

प्रथम नमूं "गुरुवसदि" मनोहर पार्श्वनाथ प्रभु का मंदिर।
संवत् सात शतक के लगभग निर्मित भव्य चैत्य सुन्दर ॥३॥
कृष्ण शिला निर्मित अति ही प्राचीन मूर्ति जिनस्वामी की।
यही मूलनायक प्रभु प्रतिमा पार्श्वनाथ जगनामी को॥४॥
नव रत्नों के दुर्लभ अनुपम अति प्राचीन विम्ब पावन।
आधे अंगुल से नौ अंगुल की प्रतिमायें मन भावन॥५॥
हीरा मोती माणिक पन्ना नीलम पुष्पराज वैडूर्य।
मूंगा स्फटिक रत्न प्रतिमायें स्वयं प्रकशित हैं ज्यों सूर्य॥६॥
धवल जय धवल महाधवल सिद्धांत ग्रन्थ अति ही प्राचीन।
यहाँ सुरक्षित परमागम के दर्शन से होते अघ क्षीण॥७॥
इसीलिये "गुरु वसदि" कहाता है मंदिर सिद्धांत महान।
जिन शास्त्रों के भाव ग्रहण से कट जाता अनादि अज्ञान॥८॥
"होसवसदि" त्रिभुवनतिलक सुचूड़ामणि मंदिर सुविशाल।
एक सहसविशाल स्तम्भों का मंदिर नगरी का भाल॥९॥
चंद्रनाथ जिन प्रभु की प्रतिमा पंचधातुमय महा मनोज्ञ।
और अनेक वेदियों पर भी है अलभ्य जिन मूर्ति मनोज्ञ॥१०॥
संवत् पंद्रहसौ का निर्मित तीन खण्ड का यह मंदिर।
ऊँचा मान स्तम्भ सुशोभित प्रांगण में उन्नत सुन्दर॥११॥
शिल्पकला नैपुण्य शिल्पियों का अद्भुत पुरूषार्थ सफल।
तीर्थङ्कर आदिक छह मंड़प भव्य चित्र शोभित उज्जवल॥१२॥
"वडग वसदि" में चंद्रनाथ स्वामी की है प्रतिमा प्राचीन।
ऊंचा मान स्तम्भ यहाँ भी दर्शनीय जो अर्वाचीन॥१३॥
"शेट्ट वसदि" श्री जिन स्वामी महावीर प्रभु की प्रतिमा।
चौबीसों तीर्थङ्कर प्रभु की प्रतिमाओं की है महिमा॥१४॥
"हिरेवसदि" में शांतिनाथ स्वामी का श्रेष्ठ मूल विग्रह।
चौबीसों जिनवर प्रतिमाएँ बार-बार बन्दूँ जिनगृह॥१५॥
वसदि वेटकेरी में पल्यंकासन महावीर स्वामी।
"कोटि वसदि" में नेमिनाथ प्रभु की प्रतिमा है अभिरामी॥१६॥
"विक्रम शेट्टि वसदि" में पल्लंकासन आदिनाथ भगवान।
चौबीसों जिनराज मूर्तियाँ, उन्नत मान स्तम्भ महान॥१७॥

Scanned by CamScanner

"कल्लु वसदि" में चन्द्रनाथ अरू शीतलनाथ विराजित है।
"लेप्प वसदि" में चंदा प्रभु हैं मान स्तंभ सुशोभित हैं॥१८॥
"देरम शेट्टि वसदि" में जिनवर अरह मल्लि मुनि सुव्रतनाथ।
श्वेत शिलामय चौबीसो जिन ऊपर मल्लिनाथ जगनाथ॥१९॥
"चोल शेट्टिवसदि" में जिन प्रभु सुमति पद्म सुपार्श्वजिनेश।
पल्यकासन तीर्थङ्कर चौबीसों की हैं मूर्ति विशेष॥२०॥
"महादेव शेट्टिवसदि" में ऋषभदेव तीर्थङ्कर मूर्ति।
कृष्णवर्ण की प्रभावलय में चौबीसों जिन की अनुमूर्ति॥२१॥
"बेंकि वसदि" में श्री अनंत जिन कायोत्सर्ग रूप शोभित।
प्रभावलय में तीर्थङ्कर चौबीस देख मन है मोहित॥२२॥
"केरे वसदि" सरोवर तट पर मल्लिनाथ प्रभु का मंदिर।
"पड्डु वसदि" में विमल अनंत सुधर्मनाथ जिनबिम्ब प्रवर॥२३॥
श्री जैन मठ में तीर्थङ्कर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिमा।
सर्व मंदिरों की सुव्यवस्था से ही है मठ की गरिमा॥२४॥
"जैन पाठशालेय वसदि" में मुनिसुव्रत जिन तीर्थङ्कर।
अमृत शिलामयी निर्मित है अति प्राचीन बिम्ब सुन्दर॥२५॥
यही अठारह जिन मंदिर कन्नड़ में वसदि कहाते हैं।
इनके दर्शन करने को प्रति मास सहस्त्रों आते हैं॥२६॥
"रमा शोध संस्थान" आदि संस्थाएँ करती कार्य महान।
ताड़ पत्र पर लिखित सुदुर्लभ चार सहस ग्रंथ विज्ञान॥२७॥
संवत् बारह सौ सतहत्तर में स्थापित गुरूपीठ हुई।
भट्टारक श्री चारूकीर्ति नामावलि पीठासीन हुई॥२८॥
रत्न मूर्ति अरू धवल जयधवल महाधवल के दर्शनकर।
भव्य जीव पुलकित होते हैं पाते हैं आनन्द मधुर॥२९॥
सारे भारत से यात्रीगण लाखों आते हैं प्रतिवर्ष।
जिन वैभव के साक्षात् दर्शन कर होता सबको हर्ष॥३०॥
सर्व व्यवस्था चारूकीर्ति भट्टारक जी करते उत्तम।
नया सुरक्षा भवन बनाया अद्वितीय सुन्दर अनुपम॥३१॥
षटखंडागम की जय ध्वनि के यहाँ गूंजते हैं जयगान।
जिन अभिषेक देव पूजन कर आता है निज का बहुमान॥३२॥

Scanned by CamScanner

यह अनमोल महान सुनिधि देती है उर को शांति अपार।
हर्षपूर्ण उल्लास जगाती श्री जिन धर्म परम सुखकार॥३३॥
धवल जयधवल महाधवल का सार श्रेष्ठ रत्नत्रय धर्म।
इसे प्राप्तकर हे प्रभु मैं भी नाश करूँ दुखमय वसुकर्म॥३४॥
मूडबिद्री के निकट "कार्कल" क्षेत्र सुदर्शनीय प्राचीन।
श्री बाहुबलि की ऊंची प्रतिमा पर्वत पर है आसीन॥३५॥
संवत् पंद्रहसौ के लगभग निर्मित बहु वैभवशाली।
अष्टादश जिन मंदिर अनुपम नीचे हैं शोभाशाली॥३६॥
है "वरांग" में तीन जिनालय बाहुबली का बिम्ब महान।
सलिल सरोवर में जिन मंदिर जिसकी अलग निरालीशान॥३७॥
है "वेणूर" क्षेत्र में स्वामी बाहुबली की मूर्ति प्रधान।
श्री जिनवर के आठ जिनालय जिनमें होते मंगल गान॥३८॥
"धर्मस्थल" में चंद्रनाथ आदिक के दो मंदिर पावन।
नूतन विग्रह बाहुबली का लघु पर्वत पर मन भावन॥३९॥
श्री हेंगड़े जी के द्वारा दिव्य मूर्ति निर्मापित है।
बाहुबली विहार मनोरम लख जन मन आकर्षित है॥४0॥
"हुमचा" अतिशय क्षेत्र मनोहर छोटा सा पर्वत सुन्दर।
ऊपर नीचे आठ जिनालय हैं शोभायमान सुखकर॥४१॥
"श्रवण वेलगुल" "चंद्रगिरी" पर हैं जिन मंदिर अति सुविशाल।
शिलालेख हैं चंद्रगुप्त के भद्रबाहु के चरण विशाल॥४२॥
"विन्ध्यगिरी" पर गोम्मटेश्वर की प्रतिमा संसार प्रसिद्ध।
हैं बत्तीस जिनालय अद्भुत नाम जैनबद्री सुप्रसिद्ध॥४३॥
दक्षिण में शत शत जिन मंदिर दिव्य पुरातन मन भावन।
"गिरि कुन्द्रादि" "हलेविडु" "गोम्मटगिरि" आदिक हैं अतिपावन॥४४॥
"पोन्नूर हिल" कुन्द कुन्द की भव्य तपस्या भूमि प्रधान।
इन सबके दर्शन पूजन से होता अतिशय पुण्य महान॥४५॥
भाव सहित दर्शन पूजन कर कर जीवन सफल करूँ स्वामी।
तत्व भावना पूर्वक निज का ध्यान करूँ अन्तर्यामी॥४६॥
जब तक नहीं स्वभाव दृष्टि है तब तक नहीं स्वरूप विकास।
शांत धर्म मय होने को प्रभु प्रतिदिन करूँ तत्व अभ्यास॥४७॥

Scanned by CamScanner

जब तक पर्यायों में मोहित तब तक ही मैं मिथ्यादृष्टि।
पर से आत्म बुद्धि हटते ही हो जाऊँगा सम्यक्दृष्टि॥४८॥
मूडबिद्री के श्री जिन मंदिर जिन .प्रतिमा जिनशास्त्र महान।
सबको अर्घ्य समर्पण करके मैं प्रभु करूँ आत्म कल्याण॥४९॥

ॐ ह्रीं श्री मूडबिद्रीक्षेत्रस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि.।

मूडबिद्री के क्षेत्र की महिमा महा महान।
जिन पूजन से प्राप्त हो वीतराग विज्ञान॥

इत्याशीर्वादःपुष्पांजलि क्षिपामि्

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री मुड़बिद्री अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ अतिशयक्षेत्र पूजन

अन्तरीक्ष प्रभु पार्श्वनाथ को नित प्रति बारम्बार प्रणाम।
नग्न दिगंबर भव्य मूर्ति जिन प्रतिमा शोभनीय अभिराम॥
है नासाग्र दृष्टि अति पावन परम पवित्र अपूर्व ललाम।
अंतरीक्ष प्रभु सदा विराजित ध्यानलीन त्रिभुवन में नाम॥
आज आपके चरणो की पूजन का भाव ह्रदय जागा।
दर्शन करते ही संचित पापों का पुंज दूर भागा॥
भाव द्रव्य से पूजन करके आत्मतत्व का ज्ञान करूँ।
महिमा मय प्रभु चरण शरण पा नाथ आत्म कल्याण करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ट तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रमम् सन्निहितो भव भव वषट्।

उज्जवल शीतल जल का तो प्रभु सेवन किया अनंतो बार।
किन्तु आत्मरस के सेवन का यत्न किया न एक भी बार॥
अंतरीक्ष प्रभु पार्श्वनाथ को भाव सहित मेरा वन्दन।
भव दुख हर्ताशिव सुख कर्ता परम पूज्य संकट मोचन॥१॥

ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.

Scanned by CamScanner

मलयागिरि चंदन से तन का ताप मिटाया है हर बार।
भवका ताप मिटाने को मैं आया आज तुम्हारे द्वार ॥
अंतरीक्ष प्रभु पार्श्वनाथ को भाव सहित मेरा वंदन।
भव दुख हर्ता शिव सुख कर्ता परम पूज्य संकट मोचन ॥२॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।।
इस अनंत संसार सिन्धु में डूबा अब तक बारम्बार।
अक्षयपद पाने आया हूँ निज अक्षत का दो आधार ।अंतरीक्ष.॥३॥
ॐ ह्रीं श्री अंतरीक्षपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि.।
कल्पवृक्ष के मधुमय पुष्पों का भी भोग किया बहुबार।
किन्तु न कामबाण की पीड़ा का मैं कर पाया संहार।अंतरीक्ष.॥४॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।।
विविधभांति के व्यंजन खाए मिटी न उर ज्वाला दुखकार।
शुद्धभाव नैवेद्य प्राप्त करने आया हूँ शिव सुखकार ।अंतरीक्ष.॥५॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।
है अनादि से मोह तिमिर भ्रम मेरे उर में भरा अपार।
इसे नाश करने को स्वामी ज्ञानदीप दे दो तमहार ॥अंतरीक्ष.६॥
ॐ ह्रीं श्री अंतरीक्षपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।।
अष्ट कर्म के चक्रव्यूह में पड़कर पाये कष्ट अपार।
शुक्ल ध्यानकी दिव्यधूप दो अष्टकर्म सबकर दूं क्षार ॥अंतरीक्ष.७॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि.।
सुरतरू के फल पाकर भी तो सदा बढ़ाया है संसार।
महामोक्ष फल की अभिलाषा लेकर आया स्वामी द्वार।अंतरीक्ष.॥८॥
ॐ ह्रीं श्री अंतरीक्षपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
नश्वर राज्य आदि सुर पद भी पाए हैं अनगिनती बार।
पद अनर्घ्य पाने प्रभु चरणों का है एकमात्र आधार॥अंतरीक्ष.॥९॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

पंचकल्याणक

प्रभु वैसाख कृष्ण द्वितीया को माता वामा उर आए।
दिक्कुमारियों ने हर्षित हो सेवाकर मंगल गाए॥

Scanned by CamScanner

गर्भ पूर्व छह मास जन्म तक रत्न सुरों ने वर्षाए।
तीर्थकर प्रभु पार्श्वनाथ के चरण पूज हम हर्षाए॥१॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय वैशाखकृष्णद्वितीयां गर्भमंगल प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

पौष कृष्ण एकादशमी को जन्म हुआ आनन्द छाए।
क्षीरोदधि से गिरि सुमेरु पर इन्द्र नव्हन कर मुस्काए॥
वाराणसी नगर के राजा अश्वसेन ने सुख पाए।
तीर्थकर प्रभु पार्श्वनाथ के चरण पूज हम हर्षाए॥२॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पौषकृष्णएकादश्यां जन्ममंगल प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जन्म दिवस पर प्रभु के उर में जब वैराग्य भाव आए।
लौकान्तिक देवों के मुख से जय जय के स्वर गुंजाए॥
पंच मुष्टि कच लोच किया प्रभु धार महाव्रत मुसकाए।
तीर्थकर प्रभु पार्श्वनाथ के चरण पूज हम हर्षाए॥३॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौष कृष्णएकादश्यांतपोमंगल प्राप्ताय अर्घ्यं नि।

कमठ मूढ़ ने किया घोर उपसर्ग न प्रभु जी डिग पाए।
निज स्वरूप में लीन हुए प्रभु क्षपक श्रेणि ऊपर आए।
चैत्र कृष्ण की चौथ घातिया कर्मनाश केवल लाए।
तीर्थकर प्रभु पार्श्वनाथ के चरण पूज हम हर्षाए॥४॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चैत्र कृष्ण चतुर्थ्यां ज्ञान सम्राज्य प्राप्ताय अर्घ्यं नि।

श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन अंतिम शुक्ल ध्यान ध्याए।
स्वर्ण भद्र सम्मेद शिखर से अरि अघातिया विनशाए॥
मुक्ति शिला पर नाथ विराजे मुक्ति वधू मंगल गाए।
तीर्थकर प्रभु पार्श्वनाथ के चरण पूंज हम हर्षाए॥५॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्ष मंगल प्राप्ताय अर्घ्यं नि।

जयमाला

अंतरीक्ष प्रभु पार्श्व का बंदू बारम्बार।
भव बाधा के नाशहित आया स्वामी द्वार॥

Scanned by CamScanner

जम्बू द्वीप सुभरत क्षेत्र में महाराष्ट्र है प्रान्त महान।
वाशिम नगरी के दक्षिण दिशि में है शिवपुर ग्राम प्रधान॥१॥
पार्श्वनाथ प्रभु का जिन मंदिर भारत भर में है विख्यात।
अंतरीक्ष पद्मासन प्रभु प्रतिमा है नग्न दिगम्बर ख्यात॥२॥
कृष्ण वर्ण पाषाण मनोहर अति प्राचीन दिव्य प्रतिमा।
जो भी दर्शन करता जीवन भर गाता प्रभु की महिमा॥३॥
भक्ति पूर्वक दर्शन से हो जाते सभी पाप अवसान।
पुण्यों की धारा बहती है करते ही प्रभु का गुणगान॥४॥
अन्य वेदियों पर जिन प्रतिमा सभी दिगम्बर महा महान।
जिन अभिषेक पाठ पूजन से होता है सबका कल्याण॥५॥
प्रभु के अतिशय की प्रसिद्धियाँ किम्बदन्तियाँ सुन-सुनकर।
दूर-दूर से यात्री आते हर्षाते जिन दर्शन कर॥६॥
वृषभादिक श्री वीर जिनेश्वर की प्रतिमाओं को बंदन।
भाव पूर्वक जिन दर्शन से होता है सम्यक्दर्शन॥७॥
पवली मंदिर अति प्राचीन दिगम्बर प्रतिमाओं से युक्त।
हैं सुन्दर प्राचीन वेदियाँ भव्य मूर्तियों से संयुक्त॥९॥
एक नया जिन मंदिर भी पवली मंदिर के निकट ललाम।
पार्श्वनाथ की जिन प्रतिमा है यहाँ मूल नायक अभिराम॥१०॥
अंतरीक्ष प्रभु पार्श्वनाथ की सदा गूंजती जय-जयकार।
प्रभु की जीवन गाथा सुनकर होता उर में मोद अपार॥११॥
तत्वों की जिज्ञासा पूर्वक जो भी करते तत्व विचार।
भेद ज्ञान की निधि पाते हैं करते व्रत संयम स्वीकार॥१२॥
हे प्रभु मैं भी भेद ज्ञान का वैभव पाने आया हूँ।
उर में सम्यक्ज्ञान ज्योति का दीप जलाने आया हूँ॥१३॥
आत्म तत्व श्रद्धान पूर्वक मोक्ष मार्ग पर आ जाऊँ।
आत्मज्ञान की विमल ज्योति से सम्यक् चारित्र उर लाऊं॥१४॥
प्रथम स्वरूपाचरण अन्त में यथाख्यात चारित पाऊँ।
तुम समान अरहंत स्वपद पा सिद्धस्वपद भी प्रगटाऊँ॥१५॥
जय जय जय श्री अंतरीक्ष प्रभु पार्श्वनाथ स्वामी की जय।
सप्त भयों से रहित अवस्था पाकर मैं भी बनूँ अभय॥१६॥

Scanned by CamScanner

सर्प चिन्ह चरणों में शोभित पार्श्वनाथ जिन मन भावन।
फणावली से युक्त मनोहर वीतराग प्रतिमा पावन॥१७॥
बार बार फिर विषय कषायों में ही हो जाता हूँ लीन।
देवसुमति दो बोधि प्राप्तकर मैं भी करूँ पाप सब क्षीण॥१८॥
ॐ ह्रीं श्री अन्तरीक्षपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि.।

अंतरीक्ष प्रभु पार्श्व को भाव सहित उर धार।
मन वच तन जो पूजते पाते सौख्य अपार॥
जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री अंतरीक्ष पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्रीअहिक्षेत्र अतिशयक्षेत्रपार्श्वनाथपूजन

अतिशय क्षेत्र महान जगत में अहिक्षेत्र मंगलकारी।
तपो भूमि प्रभु पार्श्वनाथ की भव्यजनों को सुखकारी॥
यह उपसर्ग भूमि जिसको लखकर विराग उर में आता।
ज्ञान तीर्थ केवल्य भूमि के दर्शन कर मन हर्षाता॥
प्रथम देशना भूमि यही है पार्श्वनाथ प्रभु की जय जय।
भक्ति विनय से प्रभु पूजन का भाव हृदय में हुआ उदय॥
पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में सादर शीश झुकाऊँ मैं।
अविनश्वर लक्ष्मी पाने को चरण शरण में आऊँ मैं॥
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः,
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रममसन्निहितो भवभव वषट्।
शुद्ध भाव जल के बिन स्वामी चारों गति में भरमाया।
जन्म मरण पर जय पाने को शरण आपकी मैं आया॥
अहिक्षेत्र प्रभु पार्श्वनाथ के दर्शन करके हर्षाया।
तपो भूमि कैवल्य भूमि को बन्दन कर अति सुख पाया॥१॥
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
शुद्ध भाव चन्दन बिन स्वामी भवाताप में झुलसाया।
यह संसार ताप हरने को शरण आपकी मैं आया॥अहि.॥२॥
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.

Scanned by CamScanner

शुद्ध भाव अक्षत बिन स्वामी भव अटवी में दुःख पाया।
अक्षय पद पाने को प्रभुवर शरण आपकी मैं आया।।
अहिक्षेत्र प्रभु पार्श्वनाथ के दर्शनं करके हर्षायां।
तपो भूमि केवल्य भूमि को बन्दन कर अति सुख पाया।।३।।
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं नि।
शुद्ध भाव के सुमन बिना प्रभु शील स्वभाव नही पाया।
काम वाण की व्यथा मिटाने शरण आपकी मैं आया।।अहि.।।४।।
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि।
शुद्ध भाव नैवेद्य बिना प्रभु कभी तृप्त न हो पाया।
क्षुधा रोग की व्याधि हटाने शरण आपकी मैं आया ।।अहि.।।५।।
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्रपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि।
शुद्ध भाव दीपक बिन स्वामी मोह तिमिर न हटा पाया।
मिथ्याभ्रम अज्ञान हटाने शरण आपकी मैं आया ।।अहि.६।।
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्रपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि।
शुद्ध भाव की धूप बिना प्रभु कर्म जाल में उलझाया।
अष्टकर्म विध्वंस कराने शरण आपकी मैं आया ।अहि.।।७।।
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं। नि।
शुद्ध भाव फल बिना नाथ मैं सदा बन्ध करता आया।
महामोक्ष फल पाने को प्रभु शरण आपकी मैं आया ।।अहि.।।८।।
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि।
शुद्ध भाव के अर्घ बिना मैं पाप पुण्य में अटकाया।
निज अनर्घ पदवी पाने को शरण आपकी मैं आया।।अहि.९।।
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं नि।

पंच कल्याणक

शुभ बैशाख कृष्ण द्वितिया गर्भोत्सव मंगल हुआ प्रधान।
पन्द्रह मास रत्न वर्षा कर हुआ इन्द्र को हर्ष महान।।
प्राणत स्वर्ग त्याग तुम आये बंधे स्वर्ग में बन्दनवार।
सोलह स्वप्न लखे माता ने घर घर गूँजे मंगलाचार।।१।।
ॐ ह्रीं श्री अहिक्षेत्र पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय बैसाख कृष्ण द्वितियां गर्भमंगलप्राप्ताय अर्घ्यं नि।

Scanned by CamScanner

बाराणसी नगर के अधिपति अश्वसेन गृह जन्म लिया।
माता वामा अति हर्षायी तिहुँ जग ने आनन्द किया॥
जन्म समय सुरपति ने सुमेरु गिरि पर ले जा अभिषेक किया।
पौष कृष्ण एकादशी को जन्मोत्सव पर नृत्य किया॥२॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्ण एकादशयां जन्ममंगलमण्डिताय पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि।
भव तन भोगों से विरक्तिमय जब तुमको वैराग्य हुआ।
लौकान्तिक देवों के द्वारा धन्य धन्य जयनाद हुआ॥
तीस वर्ष की अल्पायु में जन्म दिवस दीक्षा धारी।
पंच महाव्रत धारे वन में हे प्रभु! बाल ब्रम्हचारी॥३॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णएकादशयां तपो मंगलमण्डिताय पार्श्वनाथजनेन्द्राय अर्घं नि।
हुए तपस्या लीन लिये उपवास षष्ट मंगलकारी।
गुल्मखेट में धन्य नृपति गृह किया पारणा तप धारी॥
अहिक्षेत्र की पुण्य धरा पर तुमने केवलज्ञान लिया।
चैत्र कृष्ण की भव्य चतुर्थी को प्रभु पद भगवान् लिया॥४॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थयां ज्ञानसाम्राज्यप्राप्ताय पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घं नि।
देश देश में कर विहार प्रभु फिर सम्मेदशिखर आये।
कूटसुवर्णभद्र से तुमने चउ अघातिया विनशाये॥
हुए निरन्जन निर्विकार पावन मंगल निर्वाण हुआ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन परम मोक्ष कल्याण हुआ॥५॥
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तमी मोक्षमंगलमण्डिताय पार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घं नि

जयमाला

अहिक्षेत्र की पावन भू पर पूजन का सुअवसर पाऊँ।
पार्श्वनाथ की पवित्र जीवन गाथा भाव सहित गाऊँ॥१॥
मति श्रुति अवधि ज्ञान के धारी तीन लोक के रखवारे।
आठ वर्ष की लघु वय में ही तुमने अणुव्रत स्वीकारे॥२॥
ठुकराये तुमने विवाह के मोदमयी प्रस्ताव अनेक।
राज्य मोह वस्त्राभूषण तज तुमने तप धारा सविवेक॥३॥
भव्य भावना द्वादश भाई उर में दृढ़ वैराग्य किया।
नमः सिद्ध कहकर हे स्वामी पंच मुष्टि कचलोच किया॥४॥

Scanned by CamScanner

इन केशों को रत्न पिटारे में रख हुआ इन्द्र हर्षित।
पंचम क्षीरोदधि सागर में किया प्रवाहित विनय सहित॥५॥
अट्ठाईस मूल गुण धारे उत्तर गुण चौरासी लाख।
पंचाचार त्रयोदश विधि चारित्र परम पावन विख्यात॥६॥
विचरण करते एक दिवस आ पहुँचे अहिक्षेत्र वन में ।
आत्म ध्यान में लीन हुए प्रभु निज स्वभाव भजते मन में॥७॥
पूर्व जन्म का बैरी कमठ ज्योतिषी सुर संवर आया।
देख तपस्या लीन आपको पूर्व बैर उर में छाया॥८॥
पूरब बैर नहीं छोड़ा यह क्रोध कषाय महादुःखमय।
पर तुमने उर में समता धर पाया अनुपम पद सुखमय॥९॥
पहले भव मरुभूति हुए तुम कमठ भ्रात ने प्राण लिये।
दूजे में हो वज्रघोष गज श्रावक के व्रत धार लिये॥१०॥
कुक्कुट सर्प कमठ बन आया डसकर पंचम नर्क गया।
तीजे भव तुम सहस्त्रार पाया साता का श्रोत नया॥११॥
चौथे भव तुम रश्मिवेग विद्याधर बन व्रत ग्रहण करे।
कमठ क्रूर ने अजगर होकर बैर किया फिर प्राण हरे॥१२॥
अच्युत स्वर्ग गये पंचम भव उसको षष्टम नर्क तपन।
तुम षष्टम भव बज्रनाभि चक्री हो मुनि पद किया ग्रहण॥१३॥
कमठ कुरंग भील बन आया बहु उपसर्ग किये आकर।
नर्क सातवां मिला उसे पाये दुःख अति तैंतीस सागर॥१४॥
सप्तम भव मध्यम ग्रैवेयक में जा तुम अहिमेन्द्र हुए।
अष्टम भव में नगर अयोध्या के राजा आनन्द हुए॥१५॥
भव भोगों से हो विरक्त तुमने मुनि पद स्वीकार किया।
गोत्र तीर्थकर प्रभु बाँधा तप संयम साकार किया॥१६॥
सिंह हुआ वह आया तुमको क्रोधित होकर खा डाला।
प्राणत स्वर्ग गये उसको पाँचवे नर्क विधि ने डाला॥१७॥
दशवें भव तुम पार्श्वकुँवर वह तपसी महीपाल नाना।
अग्नि जला तप करता था उपदेश न एक प्रभो माना॥१८॥
ज्वाला में जलते दिखलाये नाग नागिनी अर्ध जले।
सुन उपदेश हुए मर कर पद्मावती और धरणेन्द्र भले॥१९॥

Scanned by CamScanner

खोटा तप कर कमठ जीव संवर ज्योतिषी हुआ जाकर।
आग बैर की बुझी नहीं उपसर्ग किये फिर से आकर॥२८॥
किये उपद्रव घोर कमठ ने प्रभु के ध्यान विदारण को।
पद्मावती धरणेन्द्र शीघ्र आये उपसर्ग निवारण को॥२१॥
फण मण्डप पर प्रभु को ले धरणेन्द्र मुदित अपने मन में।
पद्मादेवी छत्र तानकर खड़ी हो गई उस वन में॥२२॥
शुभ भावों ने इन दोनों ने पुण्य उपार्जन किया अपार।
लीन रहे प्रभु आत्म ध्यान में गूँजी नभ में जय-जयकार॥२३॥
सात दिवस तक किया उपद्रव अग्नि ज्वाल जल वर्षा की।
भीषण झंझावात चलाया पाषाणों की वर्षा की॥२४॥
क्षेणी क्षपक चढ़े प्रभु तत्क्षण कर्म घातिया नाश किया।
मोह शत्रु पर विजय प्राप्तकर केवलज्ञान प्रकाश लिया॥२५॥
तत्क्षण ही उपसर्ग विलय हो गया हुआ सुर दुन्दुभि नाद।
समवशरण की रचना सुन्दर जगती में छाया आह्लाद॥२६॥
खिरी दिव्य ध्वनि भव्य देशना अहिक्षेत्र में पहिली बार।
दश गणधर में मुख्य स्वयंभू गणधर ने झेली श्रुत धार॥२७॥
मुख्य आर्यिका सुलोचना थी श्रोता महासेन नृपवर।
ओंकार ध्वनि प्रभु की खिरती चार समय शाश्वत सुखकर॥२८॥
पापी कमठ शरण में आया उसका भी कल्याण किया।
जग जीवों को मोक्ष मार्ग का शुभ सन्देश महान दिया॥२९॥
अहिक्षेत्र की पुण्य धरा यह प्रभु के गीत सुनाती है।
तपोभूमि उपसर्ग भूमि केवल्य भूमि यश गाती है॥३०॥
जो भी प्रभु का ध्यान लगाता उसके संकट कटते हैं।
विषयमयी वासना नष्ट होती भव के घन हरते हैं॥३१॥
मैं भी निज का ध्यान लगाकर शुद्धातम को अपनाऊँ॥
पाप पुण्य आश्रव विनाश कर मैं भी पंचम गति पाऊँ॥३२॥
प्रभु की पावन मूर्ति निरख कर भेद ज्ञान वैभव पाऊँ।
जो अनादि से मिला न अब तक वह सम्यक्दर्शन पाऊँ॥३३॥
जय जय पार्श्वनाथ तीर्थङ्कर तेईसवें जिनेश महान।
जब तक मोक्षस्वपद न पाऊँ तब तक गाऊँ तव गुणगान॥३४॥

Scanned by CamScanner

सर्प चिन्ह चरणों में शोभित पार्श्वनाथ को करूँ नमन।
जन्म जन्म के पातकक्षय हों अनुक्रम से हो मुक्ति सदन॥३५॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूणार्घ्यम् नि..।

ज्ञान तीर्थ अहिक्षेत्र को बारम्बार प्रणाम।
पार्श्वनाथ प्रभु को जपूँ विनय सहित बसुयाम॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः।

श्रीमक्सी पार्श्वनाथ अतिशयक्षेत्र पूजन

जंबूद्वीप सुभरत क्षेत्र में, मध्यप्रदेश प्रान्त सुन्दर।
मक्सीजी के तीर्थ मनोहर, परशोभित हैं जिनमंदिर॥
पार्श्वनाथ जिन प्रभु की प्रतिमा, दर्शनीय अति महामहान।
भव्य सातिशय जिन प्रतिमा के, दर्शन से होता कल्याण॥
वृषभादिक प्रभु पार्श्वनाथ श्री, वीर जिनेश्वर को वन्दन।
भाव सहित प्रभु पूजन करके, नाश करूँ भवदुख क्रन्दन॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथ जिनेन्द्र अत्रममसन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

मिथ्या भ्रम की जलन बुझाने, भावों का जल लाया हूँ।
जन्म मरण भव रोग मिटाने, शरण आपकी आया हूँ॥
अतिशय क्षेत्र श्री मक्सी के, पार्श्वनाथ को करूँ नमन।
भेदज्ञान को ज्योति जलाऊँ, पाऊँ मैं सम्यक् दर्शन॥१॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

हिंसादिक अविरति क्षय, हित भावों का चंदन लाया हूँ।
भवआतप की तपन बुझाने, शरण आपकी आया हूँ॥अतिशय.२॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

पंच प्रमाद नाशकरने, भावों के अक्षत लाया हूँ।
अनुपमेय अक्षय पद पाने, शरण आपकी आया हूँ॥अतिशय.३॥

ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि.।

Scanned by CamScanner

महाक्रोध की अग्नि बुझाने, भाव पुष्प मैं लाया हूँ।
काम भाव का दर्प मिटाने, शरण आपकी आया हूँ॥
अतिशय क्षेत्र श्री मक्सी के, पार्श्वनाथ को करूँ नमन।
भेदज्ञान की ज्योति जलाऊँ पाऊँ मैं सम्यक्दर्शन॥४॥
ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।
मान कषाय नष्ट करने को, विनय भाव चरु लाया हूँ।
क्षुधावेदनी रोग मिटाने, शरण आया आपकी हूँ।अतिशय.॥५॥
ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि0।
माया भाव नष्ट करने को, भाव दीप प्रभु लाया हूँ।
मोह तिमिर संपूर्ण हटाने, शरण आपकी आया हूँ॥अतिशय.६॥
ॐ ह्रीं श्री मक्सी पार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि.।
लोभ कषाय नष्ट करने को, भाव धूप मैं लाया हूँ।
अष्ट कर्म रिपु को क्षय करने, शरण आपकी आया हूँ॥अतिशय.७॥
ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि0।
मन वच काय त्रियोग नाश हित, भावों के फल लाया हूँ।
महा मोक्षफल पाने को मैं, शरण आपकी आया हूँ॥अतिशय.८॥
ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
आश्रव बंध पूर्ण क्षय करने, भाव अर्घ प्रभु लाया हूँ।
सिद्धों सा अनर्घपद पाने, शरण आपकी आया हूँ॥अतिशय.९॥
ॐ ह्रीं श्री मक्सीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

पंच कल्याणक

वाराणसी नगर की रचना, देवों द्वारा हुई महान।
कृष्ण दूज बैशाख मनोरम, अनुपम हुआ गर्भ कल्याण॥
सोलह स्वप्न दिखे माता को, हुई रत्न वर्षा अमलान।
विश्वसेन की रानी वामा, के उर आए भगवान॥१॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय बैशाख कृष्णद्वितीयां गर्भमंगल प्राप्ताया अर्घ्यं नि.।
पौष कृष्ण एकादशमी, को जन्मे पार्श्वनाथ भगवान।
मंगल वाद्य नृत्य गीतों से, हुआ मनोज्ञ जन्म कल्याण॥

Scanned by CamScanner

जन्मोत्सव पर इन्द्रों द्वारा, हुआ लोक में जय जय गान।
क्षीरोदधि से स्वर्ण मेरु पर, हुआ कलश अभिषेक महान॥२॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्ण एकादश्यां गर्भमंगलप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।
जन्मदिवस पर ही जिन प्रभु के, अन्तर में विराग छाया।
तप कल्याण हुआ सर्वोत्तम, इन्द्रों ने मंगल गया॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, धन्य धन्य ध्वनि उच्चारी।
बालब्रह्मचारी योगीश्वर, लघु वय में दीक्षाधारी॥३॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय पौषकृष्णएकादश्यां तपोमंगलप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।
कमठजीव ने पूर्व बैर से जब उपसर्ग किया घनघोर।
ज्ञाता दृष्टा रहे आप प्रभु आए निज स्वभाव की ओर॥
उपसर्गों से डिगे न तिलभर निजस्वरूप का ध्यान किया।
कृष्ण चतुर्थी चैत्र मास को निर्मल केवलज्ञान लिया॥४॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथजिनेन्द्राय चैत्र कृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानसाम्राज्य प्राप्ताय अर्घ्यं नि।.
समवशरण में दिव्यध्वनि द्वारा उपदेश महान दिया।
द्रव्यदृष्टि से सभी जीव हैं शुद्ध सिद्धसम ज्ञान दिया॥
श्री सम्मेदशिखर पर्वत पर स्वर्णभद्र शुभ कूट प्रधान।
श्रावण शुक्ल सप्तमी को प्रभु पाया शिवपद मोक्ष महान॥५॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल सप्तम्यां मोक्षमंगल प्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

जयमाला

पार्श्वनाथ भगवान को बारम्बार प्रणाम।
दृष्टि मुक्त हो मैं करूँ, प्रभु निज में विश्राम॥
तीर्थक्षेत्र मक्सी की महिमा भारत भर में है विख्यात।
अतिशय क्षेत्र मनोहर पावन अतिशय होते हैं दिनरात॥१॥
कलापूर्ण ऊँचा जिन मन्दिर नभ से बातें करता है।
भव्य शिखरयुत दूर दूर से हर्ष हृदय में भरता है॥२॥
मन्दिर के परकोटे में हैं बयालीस लघु जिन मन्दिर।
भव्य दिगम्बर जिन प्रतिमाएँ यहाँ विराजित है सुन्दर॥३॥
संवत् नौ सौ से सोलह सौ तक की मूर्ति यहाँ शोभित।
जैन दिगम्बर जीवराज पापड़ीवाल आदिक निर्मित॥४॥

Scanned by CamScanner

नंदीश्वर रचना में बावन मूर्ति दिगम्बर हैं उत्कीर्ण।
उस युग में मन्दिर निर्माता कलाकार थे महा प्रवीण॥५॥
अति उत्तुंग जिनालय दर्शन से होता निर्मल अन्तर।
नग्न दिगम्बर खडगासन पद्मासन प्रतिमाएँ सुन्दर॥६॥
भव्य मूलनायक प्रभु प्रतिमा पार्श्वनाथ जिनस्वामी की।
वीतराग अरहंत महाप्रभु तीर्थकर अभिरामी की॥७॥
ध्यानपूर्ण नासाग्र दृष्टि जिनमुद्रा महा पूज्य पावन।
परम दिगम्बर राग रहित निर्ग्रन्थ मूर्ति अति मन भावन॥८॥
कृष्ण वर्ण की पद्मासन प्रभु की प्रतिमा कल्याणमयी।
जिन दर्शन सम्यक्दर्शन का कारण है श्रद्धानमयी॥९॥
संवत् नौ सौ से भी पहिले प्रतिमा का निर्माण हुआ।
संवत् चौदह सौ में फिर से यह मंदिर निर्माण हुआ॥१०॥
स्वर्ण कलश ध्वज दंड प्रभामय प्रभु की यश गाथा गाते।
नील गगन से होड़ लगाते, जन गण मन को हर्षाते॥११॥
जो भी दुखिया भक्ति भाव से, प्रभु निर्मल गुण गाते।
सुत वैभव सुख सम्पति पाते, सारे संकट कट जाते॥१२॥
भाव पूर्वक जिन मुद्रा लखते ही, होता हर्ष महान।
निजस्वरूप के दर्शन होते, होता है निज पर का भान॥१३॥
तत्वों के सम्यक् निर्णय से, मिट जाते सारे दूषण।
घोर तिमिर मिथ्यात्वमोह का, हो जाता है क्षय तत्क्षण॥१४॥
मैं प्रभु दीन हीन संसारी भवसागर दुःख से आकुल।
चारों गति के विषम चक्र से देव हुआ हूँ अति व्याकुल॥१५॥
जो भी चरणों में आता है उसके दुःख मिट जाते हैं।
भव्य जीव उपदेश मूक पा मोक्षमार्ग पर आते हैं॥१६॥
मैं भी यही भावना लेकर दर्शन करता हूँ भगवान।
विनय पूर्वक पूजन करके मैं चाहूँ अपना कल्याण॥१७॥
मोक्षमार्ग की ज्योतिर्मय किरणों का नव प्रकाश छाए।
महिमामय सम्यक्दर्शन जब प्रकट हृदय में हो जाए॥१८॥
छोटा मंदिर श्री सुपार्श्व सप्तम तीर्थकर का मनहर।
पार्श्वनाथ की नूतन प्रतिमा यहाँ सशोभित है सुखकर॥१९॥

Scanned by CamScanner

यहाँ अठारहसौ संवत् की विविध वर्ण की मूर्ति अनेक।
भव्य दिगम्बर जिन प्रतिमा दर्शन से जगता स्व पर विवेक॥२०॥
भक्ति भाव से भक्त जनों ने जिन प्रतिमाएँ पधराई।
दर्शन से होता प्रसन्न मन भव्य जनों के उर भाई॥२१॥
जामनेर पिपलोन सखेड़ी शाजापुर पचोर उज्जैन।
आसपास के सब क्षेत्रों में मन्दिर रहे दिगम्बर जैन॥२२॥
आतं प्राचीन मूर्तियाँ दुर्लभ अब भी मिलती भूतल से।
इनका जीर्णोद्धार परम आश्यक तन मन धन बल से॥२३॥
किंवदन्तियाँ प्रभु के अतिशय की प्रसिद्ध हैं यहाँ अनेक।
बादशाह ने भी बनवाए पांच कंगूरे मस्तक टेक॥२४॥
अत्याचारी अभिमानी का मान गलित हो जाता है।
दर्शन करते ही कुमार्ग तज कर सुमार्ग पर आता है॥२५॥
जब निष्काम भावना होती पुण्य सातिशय होता है।
विषय कषाय मंद होते ही पाप दूर हो रोता है॥२६॥
धन वैभव स्वर्गादि न चाहूँ, चाहूँ स्व पर भेद विज्ञान।
महामोक्ष कल्याण प्राप्त हो यही विनय है हे भगवान॥२७॥
पाप पुण्य आश्रव विनाश कर कर्मबंध का नाश करूँ।
निज स्वभाव के साधन द्वारा केवलज्ञान प्रकाश करूँ॥२८॥
महा चमत्कारी प्रभु प्रतिमा हृदय चमत्कृत करती है।
वोतराग संदेश सुनाती सबको उपकृत करती है॥२९॥
तेइसवें तीर्थकर प्रभु श्री पार्श्वनाथ स्वामी की जय।
सम्यक्दर्शन मुझे प्राप्त हो सप्त भयों से बनूँ अभय॥३०॥
सर्वअरिष्ट निवारक स्वामी भव अरिष्ट का करो अभाव।
नाथ आपके पथ पर चलकर मैं भी पाऊँ शुद्ध स्वभाव॥३१॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामिति स्वाहा।

मक्सी जी के क्षेत्र की महिमा लोक प्रसिद्ध।
निज स्वभाव में जो रहे हो जाएँ शिव सिद्ध॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री अतिशयक्षेत्र श्री मक्सी पार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः।नि.।

Scanned by CamScanner

श्रीश्रावस्ती अतिशयक्षेत्र पूजन

अतिशय संभव निजकी जन्मभू, श्रावस्तीअति दिव्य।
विनय सहित वन्दन करूँ, तीर्थंकर पद भव्य॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्र अत्र अवतर अवतर सवौषट्
ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्र अत्रमम् सन्निहितो भवभववषट्

छंद राधिका

पद्मद्रह से अत्युत्तम जल मैं लाऊँ।
जन्मादि रोग की पीड़ा पूर्ण मिटाऊँ॥
संभव जिनेश श्रावस्ती नगरी वासी।
हो गए सिद्ध पर जाकर प्रभु अविनाशी॥१॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरा मृत्यु विनाशनायजलं नि.।

नंदनवन के उपवन से चंदन लाऊँ।
संसार ताप क्षय करने चरण चढ़ाऊँ॥संभव.॥२॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दंन नि.।

वनभद्रशाल से शालि अखंडित लाऊँ।
अपना अक्षय पद नाथ आज प्रगटाऊँ॥संभव.॥३॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

पांडुकवन से मैं पुष्प अनेक मगाऊँ।
प्रभु कामबाण की पीड़ा पूर्ण मिटाऊं॥संभव.॥४॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वसनाय पुष्पं नि.।

मैं भोजनांग कल्पद्रुम से चरू लाऊँ।
था परम तृप्ति हे नाथ महासुख पाऊँ॥ संभव५॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

दीपांगकल्पद्रुम से सुदीपही लाऊँ।
मिथ्यात्व मोह का अंधकार विनशाऊँ ॥संभव ६॥

ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।

Scanned by CamScanner

सौमनस सुवन से चंदन धूप मंगाऊँ।
वसु कर्मो को क्षय करूँ सिद्ध पद पाऊँ॥
संभव जिनेश श्रावस्ती नगरी वासी।
हो गए सिद्धपर जकर प्रभु अविनाशी॥७॥
ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि.।
सुरकल्पवृक्ष के फल अपूर्व मैं लाऊँ।
निज अंतरंग को ध्याऊँ शिव फल पाऊँ॥संभव॥८॥
ॐ ह्रीं श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
वसु द्रव्य अर्घ्य मैं महा मनोज्ञ बनाऊँ।
अपना अनर्घ्य पद नाथ अभी प्रगटाऊँ॥ संभव९॥
ॐ ह्री श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि.

जयमाला

श्रावस्ती नगरी है प्यारी देवों द्वारा निर्मित सारी॥
नव बारह योजन विस्तृत थी। धर्म भावना से सुस्थित थी॥१॥
नृप जितारि नंदन गुणशाली। देवि सुसेना मंगलधारी॥
फागुन शुक्ल षष्टमी आई। सोलह स्वप्न लखे हर्षाई॥२॥
सुफल स्वप्न का जान सुन्दर। उर में आए सभव जिन्वर॥
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा के दिन। जन्में उरसे श्रीसंभवजिन॥३॥
इन्द्रोंने अभिषेक कर पाया। क्षीरोदधि कर सुजल चढ़ाया॥
राज्य भोग भोगे जिनराजा ले वैराग्य महातप कर जा॥४॥
मगसिर शुक्ल पूर्णिमा आई। जिनदीक्षा ही हृदय सुहाई॥
चौदह वर्ष रहे छद्मस्था। पाई तब अरहंत अवस्था॥५॥
कार्तिक कृष्ण चतुर्थी पास। केवलज्ञान लिया मन भावन॥
दियादिव्य जग को संदेशा। आत्मज्ञान का ही उपदेशा॥६॥
सम्मेदाचल गिरि पर आए। धवलदत्त शुभ कूट सजाय।
अंतिम शुक्ल ध्यान को ध्याया। ध्रुव सिद्धत्वस्वपद प्रगटाया॥७॥
घाति अघाति सर्व विनशाए। त्रिलोकाग्र के शीर्ष सुहाए॥
भाव सहित वन्दन करता हूँ। श्रावस्ती पूजन करता हूं॥८॥
ॐ ह्री श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घ्य निर्वपामिति स्वाहा

Scanned by CamScanner

श्रावस्ती की वन्दना दर्शन अति सुखदाय।
संभव जिनवर जन्म भू अनुपम शान्ति प्रदाय॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्य मंत्र—श्री श्रावस्ती अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्र पूजन

शुभ कोशाम्बी जन्म भू पदम् प्रभ जिन राज।
गर्भ जन्म तप ज्ञान तू पूजूँ निजहित काज॥

ॐ ह्री श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्र अवतर अवतर सवौषट्
ॐ ह्री श्री कौशम्बी अतिशय क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्री श्री कौशम्बी अतिशय क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्

छंद अवतार

संवररूपी जललाय, भावसहित ध्याऊँ।
आश्रव संपूर्ण नशाय निर्मलता पाऊँ॥
श्री पद्मप्रभ भगवान चरणाम्बुज वन्दूँ।
कौशाम्बी भूमि महान सादर अभिनन्दूँ॥१॥

ॐ ह्री श्री कौशाम्बी अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.

संवरमय चंदनलाय शीतलता पाऊँ।
भवताप सकल मिट जाय अघतम विनशाऊँ॥श्री॥२॥

ॐ ह्री श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाम चंदनं नि.

संवर के अक्षतलाय अक्षय पदपाऊँ।
भवसागर पूर्ण सुखाय निज में रम जाऊँ॥श्री३॥

ॐ ह्री श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्रेभ्योः अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

संवर के पुष्प मनोज्ञ स्वामी भेटकरूँ।
तज काम भाव कारोग शील स्वभाव वरूँ॥श्री.४॥

ॐ ह्री श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्रेभ्योः कामबाण विध्वन्सनाय पुष्पं नि.।

संवर नैवेद्य चढ़ाय भवदुख विनशाऊँ।
पाऊँ निज तृप्ति अपूर्व ध्रुव शिवपद पाऊँ॥श्री.५॥

ॐ ह्री श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्रेभ्योः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

Scanned by CamScanner

संवर मय दीप उजार भ्रमतम विनशाऊँ
मिथ्यात्व मोह निरवार केवल रवि पाऊँ॥
श्री पद्मप्रभ भगवान चरणाम्बुज वन्दूँ।
कौशाम्बी भूमि महान सादर अभिनन्दूँ॥६॥
ॐ ह्री श्री कौशाम्बी अतिशयक्षेत्रेभ्योः मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
संवर मय धूपं बनाय धर्म ध्यान ध्यायें।
कर्मो की शक्ति मिटाय सिद्धस्वपद पाऊँ॥श्री.७॥
ॐ ह्री श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्रेभ्योः अष्टकर्म विध्वन्सनाय धूपं नि.।
संवर फल मोक्ष महान हे प्रभु प्रगटाऊँ।
चढ़ सिद्धलोक का मान सिद्ध शिला पाऊँ॥श्री.८॥
ॐ ह्रीश्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
संवर के अर्घ्य अपूर्व भावसहित लाऊँ।
पाऊं अनर्घ्य पद देव फिर न लौट आये॥श्री.९॥
ॐ ह्रीं श्री कौशम्बी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्य नि.।

जयमाला

मध्य लोक कौशाम्बी नगरी भारत में विख्याता।
धरण राज नृप महाप्रतापी देवी सुसीमा ख्याता॥१॥
माघकृष्ण पष्ठी को अनुपम देखे सौलह सपने।
स्वप्नों का फल जाना तीर्थकर सुत होंगे अपने॥२॥
प्रीतंकर ग्रैवेयक तज प्रभुमात गर्भ में आए।
गर्भ पूर्व छह मास जन्म तक रत्न स्वतः बरसाए॥३॥
कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को जन्मे जिन तीर्थकर।
इन्द्रो ने सुरगिर पर जिन अभिषेक किया अति सुन्दर॥४॥
जन्म दिवस पर राज्य अवस्था में वैराग्य जगाउर।
भव्य भगवती दीक्षाधारी मनहर व न में जाकर॥५॥
घोर तपस्या करके प्रभु ने ध्याया निज को सत्वर।
चैत्र शुल्क पूनम को पाया केवलज्ञान प्रभाकर॥६॥
दिव्य ध्वनि द्वारा भव्यों को मुक्ति मार्ग बतलाया।
सम्यक दर्शन ज्ञान चरित्रमय मोक्षसुपथ जतलाया॥७॥

Scanned by CamScanner

गिरि सम्मेदाचलपर आया मोहनकूट सुहाया।
शुक्ल ध्यान अंतिम को ध्याया महामोक्ष पद पाया॥८॥
अष्टकर्म एक सिद्ध हुए प्रभु जा लोकाग्र विराजे।
महामोक्ष कल्याण प्राप्तकर निजानंद से साजे॥९॥
कौशाम्बी पति हुये साधुपति बने सिद्धपति स्वामी।
मेरा भी दुख मेरो जिन जी तुम हो अंतर्यामी॥१०॥
कौशाम्बी के दर्शन करके अंतरमना हुलासित।
भावसहित जिन पूजन करके अंतरंग पुलकित है॥११॥

ॐ ह्रीं श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि.।

दोहा— कौशाम्बी की भूमि को बन्दूँ बारंबार।
प्रभु पद पर निर्भीक चलूँ हरूँ संसार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाजलि क्षिपामि

जाप्यमन्त्र—ॐ ह्रीं श्री कौशाम्बी अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री चंद्रपुरी अतिशय क्षेत्र पूजन

चंद्रप्रभ भगवान की चंद्रपुरी छविवंत।
जन्मभूमि जिनराज की सुरनिर्मित श्रीमंत॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशयअत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

अष्टक

नीरनिर्जरा महिमा लाऊँ गौरवशाली।
जन्मजरा दिक व्याधि मिटाऊँ भव दुखवाली॥
चंदा प्रभु के चरण चित्त धर निज को ध्याऊँ।
चंद्रपुरी शुभ जन्म भूमि को शीष झुकाऊँ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि

गंध निर्जरासुरभित पावन मैं लाया हूँ।
भव सागर दुख क्षयहित चरणोंमें आया हूँ॥ चंदा॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन नि.

Scanned by CamScanner

धवलनिर्जरा अक्षत प्रभु मैंने अब पाए।
भव समुद्र से पार उतरने के दिन आए॥
चंदा प्रभु के चरण चित्त धर निज को ध्याऊँ।
चंद्रपुरी शुभ जन्म भूमि को शीश झुकाऊँ॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.
पुष्प निर्जरा की सुगंध मुझको आई है।
काम भावक्षय करने की बेला पाई है॥चंदा॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.
लाया मैं नैवेद्य निर्जरा मयी रस भरे।
लौकिक चरु तो दुखदायी है सदाविष भरे में॥चंदा.॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।
शुद्ध निर्जरा दीप जलाऊँ भेद ज्ञानहित।
मोहतिमिर सर्वथा मिटाऊँ पूर्ण ज्ञान हित॥चंदा॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
महा निर्जरा धूप ध्यान मय मैनं पायी।
अष्टकर्म क्षय की सौगंध हृदय को भायी॥चंदा॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निं.।
शुद्ध निर्जरा का उत्तम फल मैं लाऊँगा।
कर्म रहित हो महा मोक्षफल मैं पाऊँगा॥चंदा८॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो महामोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
अर्घ्य निर्जरा भाव द्रव्य मय मैंने पाया।
पदअनर्घ्य पाने का पावन अवसर आया॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निं.।

जयमाला

है मध्य लोक भारत प्रसिद्ध। तीर्थंकर जन्म स्थान सिद्ध॥
यह चंद्रपुरी नगरी प्रधान। उत्तर प्रदेश में है महान॥१॥

Scanned by CamScanner

नृप महासेन राजा उदार। लक्ष्मना सती रानी विचार।
दिनचैत्र कृष्ण पंचमी जाना। सोलह सपने देखे महान॥२॥
फल स्वप्न नृपति से सुना आय। अंतर में बहुआनंद छाये।
तजवैजयंत कर शुभ विमान। उर चंदाप्रभु आए महान॥३॥
एकादशि पौषकृष्ण पावन। प्रभु जन्म हुआ जन मन भावन।
इन्द्रादिक हर्षित हुए नाथ। हो गए चंद्र छवि लख सनाथ॥४॥
सुरगिरि पर प्रभु अभिषेक दिव्य। क्षीरोदधि जल से नव्हन भव्य।
प्रभु बड़ेहुए तोकिया राज्य। इकदिन सब वैभव त्याग दिया॥५॥
एकादशी पौष कृष्ण उत्तम। संसार त्याग धारा संयम।
छद्मस्थ रहे प्रभु तीन मास। पाया केवल्य महा प्रकाश॥६॥
जिन समवशरण रचकर सुदेव। दिव्य ध्वनि सुनते थे सदैव।
भारत भर में करके विहार संदेश धर्म कादे उदार॥७॥
आए सम्मेद शिखर प्रसिद्ध। निज ध्यान शक्ति से हुए सिद्ध।
फागुन शुक्ला सप्तम महान। पाया प्रभु निर्वाण थान॥८॥
मैं भी पाऊँ सम्यक्त्वनाथ। तुव कृपा बनूँ मैं भी सनाथ।
तुव पथ चिन्हों पर चलूँ देव। पाऊँ अनंत सुख मैं अमेव॥९॥
मैं चंद्रपुरी आया सहर्ष। मन मैं उमगाहै पूर्ण हर्ष।
नितनमन करूँ मैं चंद्रनाथ छोड़ूँ न कभी तुम चरण साथ॥१०॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

चंद्रपुरी को महिमा गाये चंद्रनाथ को नमन करूँ।
पाप पुण्प परभाव नाश हित। सम्यक् दर्शन ग्रहण करूँ॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—श्री चन्द्रपुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः

श्रीभद्दिलपुर अतिशयक्षेत्र पूजन

भद्दिलपुरी महान है त्रिभुवन में विख्यात।
शीतलनाथ जिनेश की जन्म भूमि प्रख्यात

ॐ ह्रीं श्री भद्दिलपुर अतिशय क्षेत्र अत्र अवतर अवतर सवौष्ट्
ॐ ह्रीं श्री भद्दिलपुर अतिशय क्षेत्र अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री भद्दिलपुर अतिशय क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्

Scanned by CamScanner

छन्द सखी

जलसम्यक् दर्शन लाऊँ। जन्मादिक रोग मिटाऊँ
शीतल प्रभु के गुण गाऊँ। भद्दिलपुर शीश झुकाऊँ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्दिलपुर अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.
सम्यक् दर्शन मय चंदन। दुखमय भवताप निकंदन॥शीतल॥२॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि
सम्यक्दर्शन भय अक्षत। अक्षय पद दाता जिनमत॥शीतल॥३॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.
सम्यक्स्वज्ञान पुष्पांजलि। कामादि विकार तिलांजलि॥शीतल॥४॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.। चरु
सम्यक् ज्ञान सुपाऊं। चिरक्षुधारोग विनशाऊँ॥शीतल॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि..। दीपक
ज्योतिर्मयलाऊँ। उर सम्यक् ज्ञान उपाऊँ॥शीतल॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।
चारित्र स्वरूप बनाऊँ। कर्मो की पीर मिटाऊँ॥शीतल॥७॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपं नि.।
चारित्र महाफल लाऊँ। प्रभु शुद्ध मोक्षफल पाऊँ॥शीतल॥८॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि.।
रत्नत्रय अर्घ्य बनाऊँ। पदवी अनर्घ्य प्रगटाऊँ॥शीतल॥९॥
ॐ ह्रीं श्रीभद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि।

जयमाला

नगर भद्दिलपुर श्रेष्ठ प्रधान। नृपति दृढ़ रथ महाराज महान।
सुनंदा रानी जगत प्रसिद्ध। लखे सोलह सपने सुप्रसिद्ध॥१॥
चैत्रवदि अष्टम् को जिनराज। तजे अच्युत स्वर्गो के साज।
रत्न की वर्षा हुई सुदिव्य। हुये हर्षित नगरी के भव्य॥२॥
हुआ शीतल जिनवर का जन्म। माघवदी द्वादश हुई सुधन्य।
विवाहित होकर भोगे भोग। राज्य का पाया शुभ संयोग॥३॥

Scanned by CamScanner

एक दिन छाया उर वैराग्य। सहेतुक वन का जागा भाग्य।
माघवदि द्वादश तप उरधार। तजा सारा छलिया संसार।।४।।
महाव्रत धारे पद्म पवित्र। देखकर शुद्धातम के चित्र।
क्षपक श्रेणी पर चढ़ें जिनेश। घातिया चार किये निःशेष।।५।।
हुए सर्वज्ञ देव जिन राज हुये अरहंत महा प्रभु आज।
पौष वदि चौदस हुई महान। समवशरण रचनासुरकृत जान।।६।।
दिया उपदेश सभी को दिव्य। अनेकों पार हो गये भव्य।
किया भारत में महा विहार। किया कल्याण अनंत अपार।।७।।
शिखर सम्मेदाचल के शीष योगहर आप हुये जगदीश।
कूट विद्युत को किया पवित्र।चरण चिन्हों से किया सचित्र।।८।।
अष्टमी आश्विन सुदी प्रसिद्ध। हुए शीतलजिन का शाश्वत सिद्ध।
ज्ञान की महिमा अपरम्पार। सभी जीवों को करती पार।।९।।
नगर भद्दिलपुर के महाराज हो गये त्रिभुन पति जिनराज।
नगर भद्दिलपुर करूँ प्रणाम। जपूँ शीतल जिनवर वसुयाम।।१०।।
विचारों के बंधन को तोड़। दृष्टि अपने स्वभाव से जोड़।
चलूँ मैं मुक्ति मार्ग पद नाथ सदा ही रहे आप का साथ।।११।।
ॐ ह्रीं श्री भद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा

भद्दिलपुर का नाम है भारत में विख्यात
भाव सहित वन्दन करूँ पाऊँ समकित प्राप्त।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र— ॐ ह्रीं श्री भद्दिलपुर अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः

श्रीसिंहपुरी अतिशयक्षेत्र पूजन

सिंहपुरी का नगर है सुन्दर दिव्य महान।
श्री श्रेयांस जिनेश का यह है जन्म स्थान।।

ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र अवतर अवतर सवौषट्
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र मम सन्निहिता भव भव वषट्

Scanned by CamScanner

क्षमामार्दव आर्जव जल लाया प्रभो।
त्रिविध व्याधियों क्षय करने आया विभो॥
हुये नाथ श्रेयांस सुंदर विभाव से।
सिंहपुरी पति हुये सिद्धपति भाव से ॥१॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि.।
सत्यशौच संयम का चंदन भा गया।
ज्वर संसार नाश का अवसर आ गया॥२॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.
तप त्यागाकिंचन की महिमा अब मिली।
भव समुद्र तरने की क्षमता उर झिली ॥हुये३॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.
दशधर्मो के चरू मैंने पाए प्रभो।
क्षुधा व्याधि क्षय के अवसर आए प्रभो ॥हुये४॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.
भाव भासना रूपी दीपक मिल गया।
दर्शमोह जयकर समकित रवि खिल गया॥हुये५॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.
शुक्ल ध्यान की धूप शुद्ध पायी प्रभो।
वसुकर्मो की क्षीण दशा आयी विभो॥हुये.६॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोहान्धार विनाशनाय दीपं नि.
ब्रह्मचर्य की पावन महिमा मिल गई।
महाशील पा कली हृदय की खिल गई॥हुये७॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टक्रम विध्वंसनाय धूपं नि
फलशुद्धोपयोग का उत्तम मोक्ष है।
रे प्रत्यक्ष आपको मुझे परोक्ष है॥हुये८॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अति शय क्षेत्र महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि.
आत्मसिद्ध का अर्घ्य बनाऊँगा प्रभो।
यह अनर्घ्य अविनश्वर पाऊँगा विभो॥हुये॥९॥
ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.

Scanned by CamScanner

जयमाला

मध्यलोक में है अतिपावन। भारत वर्ष महा मनभावन॥
सिंहपुरी आनंद दायिनी। तीर्थंकर जन्म दायिनी॥१॥
विष्णु नृपति हैं इसके राजा। विमला रानी है सुखकाजा।
जेठबदी दशमी शुभ सुन्दर। सोलह सपने देखे मनहर॥२॥
स्वप्न सुफल सुनमुदित हो गई। तीर्थंकर छवि अमिट हो गई।
सुदि एकादशमी फागुन की। छवि निरखीआगत पाहुन की॥३॥
इन्द्रों ने गिरि सुमेरू लाकर। जिन अभिषेक किया हर्षाकर।
नाम दिया श्रेयांस नाथ जिन। जन्मोत्सव संपूर्ण किया गिन॥४॥
राज्य अवस्था प्रभु ने पाई। महामोह पूर्वक सुखदाई।
जब वैराग्य हृदय में जागा। भवतन भोगों से मन भागा॥५॥
फागुन वदि एकादशमी को। पाया संयम की तरणी को।
वन में जाकर दीक्षाधारी स्वयंबुद्ध होकर अविकारी॥६॥
कुछ दिन महा तपस्या कीनी। सकल समस्याएं हर दीनी।
माघ कृष्ण अम्मावास हर तम। पाया केवलज्ञान सुअनुपम॥७॥
कर विहार उपदेश का दिया प्रचुर मोक्ष मार्ग संदेश दिया प्रभु।
भव्यों ने कल्याण किया निजध्रुव रत्नभय यान लिया निज॥८॥
प्रभु आये फिर सम्मेदाचल। ध्यानलीन प्रभु हुये सुअविचल।
कर्मों को सम्पूर्ण विनाशा। निज सिद्धत्व स्वरूप प्रकाशा॥९॥
सावन सुदि पूनम सुखदायी। ध्रुवनिर्वाण लिया सुखदायी।
सिंहपुरी को धन्य कर दिया। उरआनंद अनन्य भर दिया॥१०॥
सिंहपुरी की मैं जय बोलूँ। अपने बन्द नयन मैं खोलूँ॥
समकितले शिवपथ पर आऊँ। प्रभुके चरणों को नित ध्याऊं॥११॥

ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि।

सिंहपुरी का नाम त्रिभुवन में विख्यात है।
पाऊँ शिवपुर धाम यही विनय मेरी सुनो॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री सिंहपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः

Scanned by CamScanner

श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्र पूजन

धर्मनाथ की जन्मभू रत्नपुरी छविमान।
विनय सहित पूजन करूँ जय धर्मेश महान॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र अवतर अवतर सवौषट्
ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्

छंद गीतिका

ज्ञान दर्शन भाव जल प्रभु पद कमल अर्पण करूँ।
जन्म मृत्यु जरा हटाऊँ विनय से वंदन करूँ॥
नगर रत्नपुरी मनोहर जन्म भू भगवान की।
धर्मनाथ जिनेन्द्र पूंजूँ सुविधि ध्याऊँ ध्यान की॥१॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं नि।.

ज्ञानदर्शन गंध लाऊँ भवातप को क्षय करूँ।
भक्ति रत्नत्रय बढ़ाऊं कर्म आठों जय करूँ॥नगर२॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं नि.

ज्ञान दर्शन अक्षतों से हृदय को लूँ अब सिंगार।
स्वपद अक्षय आज पाऊँ कर्मअरि पूरे निवार॥नगर.३॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

ज्ञानदर्शन पुष्प की पावन सुगंध हृदय धरूँ।
कामबाण प्रसिद्ध की पीड़ा त्वरा से मैं हरूँ॥नगर४॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

ज्ञानदर्शन सुचरू लाऊँ। तृप्ति पाऊँ पूर्णतः।
क्षुधारोग विनाश करके सौख्य पाऊँ पूर्णतः॥नगर ५॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

ज्ञानदर्शन दीपलाऊँ ज्योति जगमग हो प्रभो।
मोह मिथ्या तिमिर नाशूँ सरल शिव पथ हो विभो॥नगर६॥

ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.।

Scanned by CamScanner

ज्ञानदर्शन धूप लाऊँ अष्टकर्म विनाश हित।
नित्य पद पाऊँ निरंजन निज स्वरूप प्रकाश हित॥
नगर रत्नपुरी मनोहर जन्म भू भगवान की।
धर्मनाथ जिनेन्द्र पूजूँ सुविधि ध्याऊँ ध्यान की॥७॥
ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं नि.
ज्ञानदर्शन फल चढ़ाऊँ शाश्वत फल प्राप्ति हित।
मोक्षफल अविलंब पाऊँ पूर्ण सुखं की व्याप्ति हित॥नगर८॥
ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो महामोक्ष फल प्राप्ताय फलं नि.
ज्ञानदर्शन अर्घ्य लाऊँ पद अनर्घ्य प्रगट करूं।
सकल भव कल्मष विनाशूँ पापपुण्य विघट करूँ॥नगर९॥
ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं

जयमाला

गर्भ जन्मतप ज्ञान भूमि है धर्मनाथ की रत्नपुरी।
यहीं जन्म ले धर्मनाथ ने पायी अनुपम मुक्तिपुरी॥१॥
रत्नपुरी के भानुराज नृप देवी सुव्रता रानी थीं।
परम सुन्दरी सुप्रिय दर्शना जन जन को कल्याणी थीं॥२॥
त्रयोदशी बैशाख शुक्ल को सोलह स्वप्न लखे मनहर।
फल को जान हुई प्रभुदित बीत गए नवमास प्रखर॥३॥
माघ शुक्ल की त्रयोदशी को जन्में धर्मनाथ भगवान।
इन्द्रों ने अभिषेक किया गिरिवर सुमेरू पांडुक वन आया॥४॥
बड़े हुये तब राज्य सभाँला जनता के प्रिय नृपति हुये।
एक दिवस वैराग्य भावना जागी तो प्रभु सुयति हुये॥५॥
शुक्ल माघ की त्रयोदशी को वन में जा दीक्षाधारी।
पंच महा व्रत पंच समिति त्रयगुप्ति धारली हितकारी॥६॥
गहन तपस्या करते करते पौष शुक्ल पूनम आई।
चार घातिया को विनाश कर कैवल्य ज्ञान लक्ष्मी पाई॥७॥
दे उपदेश कर भव्य जीवों को इस जग का कल्याण किया।
सम्मेदाचल के पर्वत पर ध्यान लगा निर्वाण लिया॥८॥

Scanned by CamScanner

ज्येष्ठ शुक्ल की दिव्य चतुर्थी कूटसुदत्त हुआ पावन।
हुआ मोक्ष कल्याण महोत्सव जानो आया हो सावन।।९।।
रत्नपुरी पति हुये सिद्धपति घर घर में मंगलछाया।
रत्नपुरी की पूजन करने मैं प्रभुचरणों में आया।।१.0।।
मुझको भी प्रभु आत्म ज्ञान हो शुद्ध स्वभाव भाव ध्याऊँ।
तुव पद चिन्ह सदा ही पूजूँ शाश्वत् ध्रुव शिवसुख पाऊं।।११।।
ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्योअर्घ्यं नि.

रत्नपुरी की वंदना करूँ हृदय से आज।
स्व पर भेद विज्ञान पर बन जाऊँ जिनराज।।
इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि
जाप्यमंत्र— ॐ ह्रीं श्री रत्नपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्र पूजन

मल्लिनाथ नमिनाथ की जन्मभूमि सुख कार।
मिथिलापुरी महान है त्रिभुवन मंगलकार।।
ॐ ह्रीं श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्र अत्र अवतर अवतर सवौषट्
ॐ ह्रीं श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भवभव वषट्

छन्द-सार (जोगीरासा)

ध्यानमयी उत्तम जल लाऊँ श्री जिन चरण पखारूँ।
रत्नत्रय के गीत सुनाऊँ निजकी ओर निहारूँ।।
मल्लिनाथ नमिनाथजिनेश्वर सबको मंगलकारी।
जन्मनगर मिथिला भू पूजूँ पाऊँ पद अविकारी।।१।।
ॐ ह्रीं श्री मिथिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निं।
ध्यान सभी चंदन की महिमा मेरे मन को भाई।
भवाताप क्षय करने को प्रभु मैंने सुमति जगाई।।मल्लि.२।।
ॐ ह्रीं श्री मिथिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

Scanned by CamScanner

ध्यान मयी अक्षत की गरिमा अक्षय पद दाता है।
भव समुद्र तरने का निश्चय ही उसको भाता है॥
मल्लिनाथ नमिनाथजिनेश्वर सबको मंगलकारी।
जन्मनगर मिथिला भू पूजूँ पाऊँ पद अविकारी॥३॥
ॐ ह्री श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि.
ध्यान मयी पुष्पों की माला पायी मैंने मनहर।
कामबाण विध्वंस करूँगा पाऊँ पद शिवकर॥मल्लि४॥
ॐ ह्री श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.
ध्यान मयी नैवेद्य सुपावन क्षुधाव्याधि हर्ता है।
एक मात्र शुद्धात्म तत्तव ध्रुव शिवसुख का कर्ता है॥मल्लि.५॥
ॐ ह्री श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नेवेद्यं नि.
ध्यानमयी दीपक उजियारा मिथ्याभ्रम हरता है।
केवलज्ञान प्रकाश अनूठा अंतर में भरता है॥मल्लि.६॥
ॐ ह्री श्री मिथिलापुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.
ध्यान धूप की शक्ति अनोखी भव दुखक्षय करती है।
अष्टकर्म की वृत्ति नष्टकर उरशिव सुख भरती है॥मल्लि७॥
ॐ ह्री श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निं.
ध्यानमयी फल शुक्ल ध्यान के शुद्ध निर्जरा कारी।
महामोक्षफल दाता निरूपम सादि अनंत सुखारी॥मल्लि.८॥
ॐ ह्री श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो महामोक्ष फलप्राप्ताय फलं नि.
ध्यानमयी अर्घ्यों के पावन पुंज चढ़ाऊँ स्वामी।
पद अनर्घ्य प्रभु मैं भी पाऊँ शाश्वत त्रिभुवननामी॥मल्लि.९॥
ॐ ह्री श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि.

जयमाला

जय मिथिला जन्म पुरी महान है मध्यलोक भारत प्रधान।
जयमल्लिनाथ नमिनाथ देव। वंदनकरता विनमित अभेव॥१॥
नृप कुम्भराज उत्तम नरेश है प्रभावती पति दिव्य वेश।
है चैत्र कृष्णा एकम् पवित्र। सोलह स्वप्न देखे सचित्र॥२॥

Scanned by CamScanner

तीर्थकर आए मात गर्भ। आनंद हुये चहुँ ओर सर्वज्ञ।
मगसिर सुदि ग्यारस जन्म जान। सुरगिरिपर प्रभु का नव्हनभान॥३॥
इन्द्रादि झुकाते तुम्हें शीश। तुमतीन लोकपति परमईश।
प्रभु जन्म दिवस वैराग्य जान। वन में धारी दीक्षा महान॥४॥
छह दिन छद्मस्थ रहे जिनेश फिर पाया प्रभु अरहंत वेश।
सुदि पौष द्वितीया घाति नाश पाया केवल रवि का प्रकाश॥५॥
फागुन शुक्ला पंचमी जाना सम्मेदाचल निर्वाण थान।
प्रभु अष्ट कर्म से हुये मुक्त त्रेलोक्यशिखर से हुये युक्त॥६॥
मिथिला पति विजय राज उत्तम है प्रिया महादेवी निरूपम।
सोलह सपने देखे महान। आश्विन वदि द्वितिया को प्रधान॥७॥
सपनों का फल जाना पवित्र। तीर्थकर आए हैं सचित्र।
आषाढ़ कृष्ण दशमी प्रसिद्ध। नमिनाथ जन्म हो गया सिद्ध॥८॥
नमि जिनवर ने वैराग्य पाया भगवती दीक्षा ली सुखाय।
प्रभु जन्मदिवस जग में प्रसिद्ध। तपधारा प्रभु ने हेतु सिद्ध॥९॥
फिर शुक्ल ध्यान ध्याया महान। श्रेणी चढ़ पाया ज्ञान भान।
मगसर सुदिग्यारस घातिनाश। पाया अद्भुत केवल ज्ञान प्रकाश॥१०॥
उपदेश दिया जग को महान। सर्वोच्च आत्मा निज प्रधान।
सम्मेदाचल पर चढ़ नाथ ले शुक्ल ध्यान कर भव्य साथ॥११॥
वैशाख कृष्ण चौदस महान। पाया सिद्धत्व महा महान॥
जयजय ध्वनि गूंजी सभी ओर।प्रभुमुक्त हुये मच गयाशोर॥१२॥
मैं भाव सहित बन्दूँ त्रिकाल। मिथिला भू पूजूँ हो निहाल॥
निजआत्म द्रव्य का करो ज्ञान।अपने स्वरूप का करो भान॥१३॥

ॐ ह्रीं श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः।

मल्लिनाथ नमिनाथ की मिथिलापुरी महान।
बारंबार वंदन करूँ द्वय प्रभु जन्मस्थान॥
वीतराग विज्ञान ही एक जगत में सार।
गुरुप्रसाद से प्रगटहो आत्मधर्म शिवकार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री मिथिलापुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः।

Scanned by CamScanner

श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्र पूजन

शौर्यपुरी नगरी हुआ नेमिनाथ अवतार।
तीर्थंकर निजराज की गूंजी जय जय कार।।

ॐ ह्रीं श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्

छन्द-विजात

भाव श्रुत ज्ञान जल आया हृदय में अब समाई है।
सभी ऋषिराज मुनियों को इसी की छवि सुहाई है।।
नेमिजिनराज जन्मस्थल शौर्यपुर श्रेष्ठ है अनुपम।
जिनालय भाव से पूंजूँ भावना मोक्ष ले उत्तम।।१।।

ॐ ह्रीं श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं.नि

भावश्रुत ज्ञान का चंदन नष्ट संसार ज्वर करता।
सभी ऋषिराज मुनियों के हृदय आनंद है भरता।।नेमि.२।।

ॐ ह्रीं श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

भाव श्रुत ज्ञान के अक्षत मुझे भव पार कर देंगे।
स्वपद अक्षय मुझे देकर हृदय में मोद भर देंगे।।नेमि.३।।

ॐ ह्री श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि.

भाव श्रुत ज्ञान कुसुमांजलि सुगंधित नाथ मैं लाया।
काम की वेदना नाशूँ यही निश्चय मुझे भाया।।नेमि.४।।

ॐ ह्री श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.

भावस्रुत ज्ञान के नैवेद्य क्षुधादुख नाश करते हैं।
मोक्षपद प्राप्त करते जो स्वयं में वास करते हैं।।नेमि.५।।

ॐ ह्री श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्योक्षुधारोग विनाशनाय नेवेद्यं नि.

भावश्रुत ज्ञान के दीपक उजाला श्रेष्ठ करते हैं।
ज्ञान की ज्योति देते हैं मोह मिथ्यात्व हरते हैं।।नेमि.६।।

ॐ ह्री श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपंनि.

Scanned by CamScanner

भावश्रुत ज्ञान की ही धूप शुक्ल मय ध्यान दाता है।
कर्म अरि अष्ट क्षय के हित यही शिवसुख विधाता है॥
नेमिराज जन्मस्थल शौर्यपुर श्रेष्ठ है अनुपम।
जिनालय भाव से पूंजूँ भावना मोक्ष ले उत्तम ॥७॥
ॐ ह्रीं श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं नि.।।
भाव श्रुत ज्ञान फल लाऊं विकारी भावक्षय कर लूँ।
मोक्षफल पूर्ण मैं पाऊँ सकल भव भाव जय कर लूँ॥नेमि.८॥
ॐ ह्रीं श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो महामोक्षफल प्राप्ताय फलं नि
भाव श्रुत ज्ञान के ही अर्घ्य अंतर में सजाऊंगा।
स्वपद उत्तम अनर्घ्य अभी प्रभो मैं उर में लाऊँगा॥नेमि.९॥
ॐ ह्रीं श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि.

जयमाला

नेमिनाथ जिनेश की शुभ जन्म भूमि नमन करूँ।
निरख शोभा शौर्य पुर की विनय से वंदन करूँ॥१॥
नृप समुद्रविजय सुमाता शिवादेवी धन्य है।
नाथ जन्मोत्सव मनाकर हर्षपूर्ण अनन्य है॥२॥
शुक्ल कार्तिक षष्ठमी को स्वप्न सोलह देखकर।
स्वप्न फल सुन हुई पुलकित हृदय में आनंद भर॥३॥
शुक्ल श्रावण षष्ठमी को जन्म जिन प्रभु का हुआ।
इन्द्र सुरगिरि रचाकर अभिषेक अति प्रमुदित हुआ॥४॥
नेमि प्रभु की सुछवि लखकर सकल जग पुलकित हुआ।
नृपति जूनागढ़ सुताराजुल हृदय हर्षित हुआ॥५॥
किन्तु प्रभुकरूणामयी वैराग्य संप्रेरित हुए।
गए सह सावन त्वरित संयम लिया तप युतहुये॥६॥
अश्विन की शुक्ल एकम उर्जयंत सुगिरि चढ़े।
शुक्ल ध्यान अपूर्व धर श्रेणी चढ़े ऊपर बढ़े॥७॥
ज्ञान रवि कैवल्य पाया हो गये सर्वज्ञ प्रभु।
सकल लोकालोक झलका ज्ञान मैं सर्वज्ञ विभु॥८॥

Scanned by CamScanner

समवशरण की हुई रचना दिव्य ध्वनि पावन खिरी।
भव्य जीवों ने सहज पाई परम शिवमय नगरी॥९॥
जगत में आषाढ़ शुक्ला सप्तमी भव्य क्षणं।
हुई गिरिनारी सुपावनं यही है निर्वाण दिन॥१०॥
शोर्यपुर वासी प्रभो द्वारिका वासी प्रभो।
पूर्ण है आनंद घन है सिद्ध पुर वासी विभो॥११॥
मैं हृदय से भाव पूर्वक विनय से वन्दन करूँ।
शौर्यपुर की भूमिपूजूँ राग के बंधन हरूँ॥१२॥
ॐ ह्री श्री शौर्यपुरी अतिशय क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि.।

शौर्यपुरी का शौर्य निज अंतर में हो प्रगट।
नेमिनाथ की जन्म भू हो जग को कल्याणमय॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्री श्री शौर्यपुरी अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्रीऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्र पूजन

ऋजुकूला तट वीर ने पाया के बल ज्ञान।
ज्ञान भूमि को नमन करू करूँ आत्म कल्याण॥
ॐ ह्रीं श्री ऋजुकूलातट अतिशय क्षेत्र अत्र अवतर अवतर
ॐ ह्रीं श्री ऋजुकूलातट अतिशय क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्
ॐ ह्री श्री ऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्र अत्र मम् सन्निहितोभव भव वषट्
बावद्रव्य निर्जरा का नीर लाऊँगा।
त्रिविध रोग नाश हेतु मैं चढ़ाऊंगा॥
भूमि ऋजुकूलातट नमन करूँगा।
महावीर चरणों में शीश धरूँग ा॥१॥
ॐ ह्रीं श्री ऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलंनिं.
भाव द्रव्य निर्जरा की गंधलाऊंगा।
नाश संसारताप सौरव्य पाऊंगा॥भूमि.२॥
ॐ ह्री श्रीऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदन नि.।

Scanned by CamScanner

पूर्ण निर्जरा के अक्षतों के पुंज ले।
अक्षय पद प्राप्त करूँ आत्मकुंज ले।।
भूमि ऋजुकूलातट नमन करूँगा।
महावीर चरणों में शीश धरूँगा।।।३।।

ॐ ह्रीं श्रीऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.। भावद्रव्य निर्जरा के पुष्प लाऊँगा।
काम भव नाश महाशील पाऊँगा।।भूमि४।।

ॐ ह्रीं श्रीऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

भाव द्रव्य निर्जरा के चरू चढ़ाऊंगा।
पूर्ण तृप्ति हेतु आत्मा को ध्याऊंगा।।भूमि.।।५।।

ॐ ह्रीं श्रीऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

भाव द्रव्य निर्जरा के दीप लाऊंगा।
मोह मिथ्यात्व नाश ज्ञान पाऊंगा।।भूमि.६।।

ॐ ह्रीं श्रीऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

भाव द्रव्य निर्जरा की धूप लाऊंगा।
अष्टकर्म नाका सिद्धत्व पाऊंगा।।भूमि।।७।।

ॐ ह्रीं श्रीऋजुकूलातट अतिशय क्षेत्रेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपंनि.।

भाव द्रव्य निर्जरा के चढ़ॉऊंगा।
मोक्षफल महान आज अभी पाऊँगा।।भूमि.।।८।।

ॐ ह्रीं श्रीऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।

भाव द्रव्य निर्जरा के अर्घ्य लाऊंगा।
पद अनर्घ्य की स्वभावना सजाऊँगा।।भूमि.।।९।।

ॐ ह्रीं श्रीऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि..।

जयमाला

ऋजुकूलातट चलो साथियों महावीर महिमा गाए।
तीर्थंकर सर्वज्ञ जिनेश्वर की पूजन कर हर्षाए।।१।।

Scanned by CamScanner

तपस्या वर्ष द्वादश कर सहे उपसर्ग दुखदायी।
कर्म उदयावली जानी किया निज ध्यान सुखदायी॥२॥
सरिता ऋजुकूला के तट पर प्रभो ने आकर किया चिंतन।
लक्ष्य शुद्धात्म को लेकर किया निज रूप का मंथन॥३॥
चढ़े श्रेणी क्षपक स्वामी ध्यान धर शुक्ल अतिपावन।
लिया अंतमुहूर्त में ही ज्ञान केवल्य मन भावन॥४॥
गगन से पुष्प वर्षा की झड़ी जैसी लगी मनहर।
इन्द्र सुर आदि सब आए हृदय में मोह अति भरकर॥५॥
हुई जय कार जिनवर की मिला अरंहत पद उत्तम।
समवसृत की हुई रचना जगत में श्रेष्ठ सर्वोतम॥६॥
सरिता ऋजकूला के तट पर हुआ उत्सव महा भारी।
अनेकों भव्य जीवों ने सहज की तप की तैयारी॥७॥
वीर तीर्थकर अंतिम हमारे महावीर स्वामी।
नमन ऋजुकूला के तट को हुए प्रभु ज्ञानपति नामी॥८॥

ॐ ह्रीं श्री ऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं नि.।

ऋजुकूला तट वंद्यकर करूँ आत्म कल्याण।
मुझको तारेंगे प्रभो महावीर भगवान॥
पोदनप्रभु पति विख्यात बाहुबली बन्दूँ।
निज आत्म तत्व संपूर्ण सादर अभिनन्दूँ॥
इत्याशीर्वाद पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं श्री ऋजुकूलातट अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः।

श्री सहस्त्रकूट जिन चैत्यालय पूजन

जयति सहस्त्रकूट चैत्यालय परम पूज्य अति मन भावन।
एक सहस्त्र अष्ट जिन प्रतिमाओं से शोभित हैं अतिपावन॥
एक सहस्त्र अष्ट लक्षणयुत जिन प्रभु पूर्ण ज्ञान सुखरूप।
अमल अनंतगुणों के स्वामी दर्शज्ञानयुत त्रिभुवन भूप॥

Scanned by CamScanner

एक सहस्त्र दिव्य नेत्रों से लखा इन्द्र ने प्रभु का रूप।
फिर भी तृप्ति नहीं हो पाई ऐसा जिनवर बालस्वरूप॥
एक सहस्त्र अष्ट नामों से समवशरण में स्तुति की।
प्रभु के नाम अनंत, किन्तु थी शक्ति नहीं लघु विनती की॥
दर्शन करते ही प्रभु चरणों की पूजन का भाव हुआ।
शुभ भावों की अष्ट द्रव्य लेते ही पाप अभाव हुआ॥
मैं लघु दीन कर्म वसु पीड़ित प्रभु पूजन करने आया।
भेदज्ञान संपदा प्राप्त करने को चरण शरण आया॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूटचैत्यालयस्थ जिनबिम्बसमूह अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूटचैत्यालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र तिष्ठतिष्ठ ठः ठः

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूटचैत्यालयस्थजिनबिम्बसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ज्ञान स्वभावी निर्मल जल का सागर उर में लहराता।
फिर भी भव सागर भंवरों में जन्म मरण के दुख पाता॥
भव्य महान सहस्त्रकूट चैत्यालय को सादर वंदन।
एक सहस्त्र अष्ट जिन प्रतिमाओं को सविनय करूँ नमन॥१॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूट चैत्यालयस्थ जिनविम्बेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

ज्ञान स्वरूपी शीतलतामय निज स्वभाव चंदन अविकार।
फिर भी भव की भीषण ज्वाला में जलपाया कष्ट अपार॥भव्य.२॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूट चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

ज्ञान स्वरूपी उज्ज्वल अक्षत पुंज हृदय में भरे अटूट।
फिर भी अविनाशीअखंड मै पान सका निजअक्षयकूट॥भव्य३॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूटचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपदप्राप्तयेअक्षतं नि.।

ज्ञानस्वरूपी परम सुगंधित पुष्पों का निज में उपवन।
फिर भी मैं निष्काम नहीं बन पाया अब तक हे भगवंन॥ भव्य४॥

ॐ ह्रीं श्रीसहस्त्रकूटचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

Scanned by CamScanner

ज्ञानस्वरूपी सरस मनोरम तृप्तिपूर्ण नैवेद्य स्वयम्।
फिर भी क्षुधारोग से पीड़ित आश्चर्य अद्भुत अनुपम॥
भव्य महान सहस्त्रकूट चैत्यालय को सादर वंदन।
एक सहस्त्र अष्ट जिन प्रतिमाओव को सविनय करूँ नमन॥५॥
ॐ ह्रीं श्रीसहस्त्रकूटचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवैद्य नि.।
ज्ञानस्वरूपी स्वपर प्रकाशी ज्ञान सूर्य निज अंतर में।
फिर भी भ्रमतम के कारण प्रभुभटक रहा दुखसागर में।भव्य॥६॥
ॐ ह्रीं श्रीसहस्त्रकूटचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।
ज्ञानस्वरूपी सहजानंदी विमल धूप से हूँ परिपूर्ण।
फिर भी दुखी नहीं कर पाया अब तक अष्टकर्म अरिचूर्ण॥भव्य७॥
ॐ ह्रीं श्रीसहस्त्रकूटचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं नि.।
ज्ञानस्वरूपी शिवफलधारी अविकारी हूँ सिद्धस्वरूप।
फिर भी भवअटवी में अटका होकर तीनलोक का भूप।भव्य॥८॥
ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूट चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।
ज्ञान स्वरूपी चिदानंद चैतन्य अनंत गुणों से पूर।
पद अनर्घ्य कैसे पा सकता जब तक निज परिणति से दूर॥९॥
ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूट चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि.।

जयमाला

कूट सहस्त्र महान का चैत्यालय जिनधाम।
जिन बिम्बों में स्वयं का बिम्ब लखूँ अभिराम॥
जय जय जय जयं श्री जिनेन्द्र जय वीतराग अरिहंत महान।
जय जय जय सर्वज्ञ जिनेश्वर परम पूज्य पावन भगवान॥१॥
कमल प्रभा सम प्रभा आपकी शुक्ल लेश्या के धारी।
परमौदारिक देह आपकी कोटिक सूर्य प्रभा हारी ॥२॥
पद्म राग मणि प्रभा दुग्ध में ज्यों होती है पूरी व्याप्त।
समवशरण में दीप्ति आपकी व्यापित हरती भव संताप॥३॥

Scanned by CamScanner

मोह चक्र को तुमने जीता परम समाधि भाव द्वारा।
धर्म चक्र का किया प्रवर्त्तन कर्म चक्र तुमसे हारा॥४॥
अष्ट कर्म अरि चक्र तोड़कर पावन सिद्ध चक्र पाया।
चढ़ लोकाग्र शिखर पर स्वामी तुम प्रभु सिद्ध हुये भगवान्॥५॥
गुण अनंत से भूषित स्वामी अष्ट स्वगुण हैं श्रेष्ठ प्रधान।
ऐसा सिद्ध स्वरूप विमल कब मैं पाऊँ अतंर्यामी॥६॥
एक शुद्ध ज्ञायक स्वरूप कब प्रगटाऊँगा हे स्वामी।
भक्ति भाव से पूजन करके निज स्वरूप का भान करूँ॥७॥
सम्यक्दर्शन सहज प्राप्तकर परम मोक्ष कल्याण वरूँ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूट चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि.।

कूट सहस्त्र महान का चैत्यालय सुखकार।
मन वच तन जो पूजते हो जाते भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाजंलिक्षिपामि

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री सहस्त्रकूट चैत्यालयेभ्यो नमः।

श्री समवशरण पूजन

तीर्थंकर प्रभु मोह क्षीणकर जब प्रगटाते केवलज्ञान।
इन्द्र आज्ञा से कुबेर रचना करता स्वर्गों से आन॥
बारह सभा जहाँ जुड़ती हैं होता है प्रभु का उपदेश।
ओंकारमय दिव्य ध्वनि का पाते सभी जीव संदेश॥
पुण्योदय से समवशरण अरु जिन मंदिर मैंने पाया।
अष्ट द्रव्य ले विनय भाव से पूजन करने मैं आया॥
श्री जिनवर के समवशरण को भाव सहित मैं करूँ प्रणाम।
वीतराग पावन मुद्रा दर्शनकर ध्याऊँ आठों याम॥

ॐ ह्रीं समवशरण मध्यविराजमान जिनेन्द्रदेव अत्र अवतर संवौषटः।
ॐ ह्रीं समवशरण मध्यविराजमान जिनेन्द्रदेव अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापना।
ॐ ह्रीं समवशरण मध्यविराजमान जिनेन्द्रदेव अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्।

Scanned by CamScanner

अष्टक

अष्टादश दोषों से विरहित अरहंतों को नमन करूँ।
अनुभव रस अमृत जल पीकर त्रिविधताप को शमन करूँ॥
जिन तीर्थंकर समवशरण को भाव सहित मैं नमन करूँ।
पूर्ण शुद्ध ज्ञायक स्वरूप मैं मोक्षमार्ग अनुसरण करूँ॥१॥
ॐ ह्रीं समवशरणमध्य विराजमान जिनेन्द्रदेवाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

छयालीस गुण मंडित प्रभुवर अर्हंतों को नमन करूँ।
अनुभव रस चंदन शीतल पा भवआतप का हरण करूँ॥२॥
ॐ ह्रीं समवशरणमध्य विराजमान जिनेन्द्रदेवाय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

चार अनंत चतुष्टय धारी अर्हंतों को नमन करूँ।
अनुभव रस मय अक्षत पाकर भवसमुद्र हरण करूँ। जिन॥३॥
ॐ ह्रीं समवशरणमध्य विराजमान जिनेन्द्रदेवाय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

जन्म समयदश ज्ञान समय दश अतिशययुत प्रभु नमन करूँ।
अनुभव रस के पुष्प प्राप्तकर कामबाण का हनन करूँ।जिन॥४॥
ॐ ह्रीं समवशरणमध्य विराजमान जिनेन्द्रदेवाय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

देवोपम चौदह अतिशय संयुक्त देव को नमन करूँ।
अनुभव रस नैवेद्य प्राप्तकर क्षुधारोग का हरण करूँ॥जिन.५॥
ॐ ह्रीं समवशरणमध्य विराजमान जिनेन्द्रदेवाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवद्यं नि.।

अष्ट प्रातिहार्यों से शोभित अर्हंतों को नमन करूँ।
अनुभव रसमय दीपज्योति पा मोहतिमिर को हनन करूँ॥जिन.६॥
ॐ ह्रीं समवशरणमध्य विराजमान जिनेन्द्रदेवायमोहांधकारविनाशनाय दीपं नि.।

नव क्षायिक लब्धियाँ प्राप्तजिनवर देवों को नमन करूँ।
अनुभव रसकी धूप बनाकर अष्टकर्म को हरण करूँ॥जिन७॥
ॐ ह्रीं समवशरणमध्य विराजमान जिनेन्द्रदेवाय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

वसु मंगल द्रव्यों से शोभित गंध कुटी को नमन करूँ।
अनुभव रस के फल मैं पाऊँ मोक्षस्वपद का वरण करूँ।जिन॥८॥
ॐ ह्रीं समवशरणमध्य विराजमान जिनेन्द्रदेवाय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि.।

परमौदारिक देह प्राप्त श्री अर्हंतों को नमन करूँ।
अनुभव रस के अर्घ बनाऊँ मैं अनर्घ पदवरण करूँ॥जिन.९॥
ॐ ह्रीं समवशरणमध्य विराजमान जिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्ताय अर्घ्यं नि.।

Scanned by CamScanner

जयमाला

समवशरण जिनराज का महापूज्य द्युतिवान।
भव्य जीव उपदेश सुन करते निज कल्याण॥

ऋषभदेव के समवशरण का बारह योजन का विस्तार।
अर्ध अर्ध घटते सन्मति तक रहा एक योजन विस्तार॥१॥
शत इन्द्रों से वंदित श्री जिनवर का समवशरण सुन्दर।
तीन लोक का सारा वैभव प्रभुचरणों में न्यौछावर॥२॥
सौ योजन तक नहीं कहीं दुर्भिक्ष दृष्टि में है आता।
भूमि स्वच्छ दर्पणवत होती गंधोदक नभ बरसाता॥३॥
गोलाकार समवसृत रचना होती है उन्नत आकाश।
चारों दिशि में बीस सहस्त्र सीढ़ियां होती भू आकाश॥४॥
चार कोट और पाँच वेदि के बीच भूमि होती हैं आठ।
चारों ओर वीथियाँ होती गंधकुटी तक अनुपम ठाठ॥५॥
पार्श्व पीथियों में दो दो वेदी होती है रत्नमयी।
सभी भूमियों के पथ होते सुन्दर तोरण द्वार मयी॥६॥
द्वारों पर नवनिधि व धूप घट मंगल द्रव्य सजे होते।
साढ़े बारह कोटि वाद्य देवों द्वारा बजते होते॥७॥
द्वार द्वार के दोनों बाजू एक एक नाटक शाला।
जहाँ देव कन्याएँ करती नृत्य हृदय हरने वाला॥८॥
प्रथम कोटि की चारों दिशि में धर्म चक्र होते है चार।
धूलि शाल है नाम मनोहर मानस्तंभ बने है चार॥९॥
प्रथम भूमि चैत्यालय की है मन्दिर चारों ओर बने।
फिर श्वातिका बनी शुभ सुन्दर जो जल से परिपूर्ण घने॥१०॥
द्वितीय कोट फिर पुष्प वाटिकाओं की पंक्ति महान विशाल।
फिर वनभूमि अशोकआम्र चंपक अरु सप्तपर्ण तरु माल॥११॥
तृतीय कोट में कल्पभूमि वेदी अरु बनी नृत्यशाला।
भवन भूमि स्तूप मनोहर ध्वजा पंक्तियों की माला॥१२॥
यही महोदय मंडप अनुपम श्रुतकेवलि करते व्याख्यान।
केवलज्ञानलब्धि के धारी भी देते उपदेश महान॥१३॥

Scanned by CamScanner

चौथा कोट साल अतिसुन्दर कल्पवासि द्वारा रक्षित।
आगे चलकर श्री मंडप है महाविभूतियों से भूषित॥१४॥
भूमि आठवीं गंधकुटी है तीन पीठ पर सिंहासन।
तरू अशोक शिर तीन छत्र हैं भामंडल द्युतिमय दर्पण॥१५॥
चारों दिशि में जिनप्रभु के मुख दिखते मानों मुख हों चार।
अंतरीक्ष जिनदेव विराजे खिरे दिव्य ध्वनि मंगलकार॥१६॥
तीन लोक की सकल संपदा चरणों में करती वंदन।
इन्द्रादिक सुर नर मुनि पशु भी चरणों में होते अर्पण॥१७॥
द्वादश सभा महान बनी हैं दिव्य ध्वनि का मोद अपार।
नभ से पुष्पवृष्टि सुर करते होता जय ध्वनि का उच्चार॥१८॥
द्वादश कोठे हैं पहिले में गणधर ऋषिमुनि रहे विराज।
दूजे कल्पवासि देवियाँ तीजे रही आर्यिका साज॥१९॥
चौथे में ज्योतिषी देवियाँ पंचम व्यंतर देवि अमेव।
षष्टम भवनवासी की देवी सप्तम भवनवासि के देव॥२०॥
अष्टम व्यंतर देव बैठते नवमें ज्योतिषी देव प्रसिद्ध।
दसवें कल्पवासि सुर होते ग्यारहवें में मनुज प्रसिद्ध॥२१॥
बारहवें कोठ में बैठे हैं तिर्यच जीव चुपचाप।
तीर्थकर की ध्वनि सुन सब हर लेते है मन का संताप॥२२॥
प्रभु महात्म्य से रोगमरण आपत्ति बैर तृष्णा न कहीं।
काम क्षुधा मय पीड़ा दुख आतंक यहाँ पर कहीं नहीं॥२३॥
पंचमेरु के क्षेत्र विदेहों में है समवशरण प्रख्यात।
विद्यमान तीर्थकर बीस विराजित हैं शाश्वत विख्यात॥२४॥
प्रभु की अमृत वाणी सुनकर कर्ण तृप्त हो जाते हैं।
जन्म जन्म के पातक क्षण में शीघ्र विलयहो जाते हैं॥२५॥
जब बिहार होता है प्रभुका सुर रचते हैं स्वर्ण कमल।
जहाँ जहाँ प्रभु जाते होती समवशरण रचना अविकल॥२६॥
समवशरण रचना का वर्णन करने की प्रभु शक्ति नही।
सोलहकारण भव्यभावना भाए बिन प्रभु भक्ति नहीं॥२७॥
ऐसी निर्मल बुद्धि मुझे दो निज आतम का ज्ञान करूँ।
समवशरण की पूजन करके शुद्धातम का ध्यान करूँ॥२८॥

Scanned by CamScanner

पाप पुण्य आश्रव विनाशकर रागद्वेष पर जय पाऊँ।
कर्म प्रकृतियों पर जय पाकर सिद्धलोक में आ जाऊँ॥२९॥
ॐ ह्रीं समवशरण मध्यविराजमान जिनेन्द्रदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तयेअर्घ्यं नि.।

समवशरण दर्शन करूँ गाऊँ मंगल चार।
भेदज्ञान की शक्ति से हो जाऊँ भवपार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं श्री समवशरण मध्यविराजमान अर्हन्तदेवाय नमः।

श्रीमानस्तंभ पूजन

श्री जिनवर तीर्थंकर प्रभु के समवशरण में मानस्तंभ।
एक एक हैं चारों दिशि में उत्तम ऊंचे मानस्तंभ॥
सुरकिन्नर, गंधर्व, यक्ष, व्यंतर नर सब पूजन करते।
इन्द्रादिक अति भक्ति भाव से विनय सहित वंदन करते॥
जिनवर मानस्तंभ देखकर मान स्वयं गल जाता है।
आत्मज्ञान की ज्योति जगाती विनय भाव उर आता है॥
मानस्तंभ महान पूजन का शुभ भाव हृदय आया।
मान भाव पर जय पाने का आज स्वर्ण अवसर पाया॥
ॐ ह्रीं श्रीमानस्तंभ विराजित जिनप्रतिमासमूह अत्रअवतर अवतर संवौषट्
ॐ ह्रीं श्रीमानस्तंभ विराजित जिनप्रतिमासमूह अत्रतिष्ठ तिष्ठ ठःठः.
ॐ ह्रीं श्रीमानस्तंभ विराजित जिनप्रतिमासमूह अत्रमम सन्निहितो भव भव वषट्।
भेदज्ञान के निर्मल जल से मिथ्यामल क्षय हो भगवन।
आत्मतत्व श्रद्धानपूर्वक हो निश्चय सम्यक्दर्शन॥
मानस्तंभ विराजित जिन प्रतिमाओं को मैं करूँ नमन।
वसु मद मान कषाय नाशकर परमविनय का करूँ वरण॥१॥
ॐ ह्रीं श्री मानस्तंभ विराजित जिनविम्बेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनायजलंनि.।
आत्मज्ञान के शीतल चंदन से भव भय हर लूँ भगवन।
सम्यक्ज्ञान प्राप्तकर स्वामी सफल करूँ यह नरजीवन ॥मान.२॥
ॐ ह्रीं श्रीमानस्तंभ विराजित जिनबिम्बेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं. नि.।

Scanned by CamScanner

साम्यभाव के पावन अक्षत से अक्षय पद लूँ भगवन।
मैं सम्यक्चारित्र धार कर पाऊँ सिद्ध स्वपद दर्शन।
मानस्तंभ विराजित जिन प्रतिमाओं को मैं करूँ नमन।
वसुमद मान कषाय नाशकर परम विनय का करूँ वरण।।३ ।।
ॐ ह्रीं श्रीमानस्तंभ विराजित जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तायअक्षतं नि.।
कामव्याधि हर महाशील के परम पुष्प पाऊँ भगवन।
अष्टादश सहस्त्रभेद युत लाख चौरासी उत्तर गुण।।मान.४ ।।
ॐ ह्रीं श्रीमानस्तंभविरजित जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं. निं.
संतोषामृत के चरु पाकर क्षुधारोग हर लूं भगवन.
चिरतृष्णा पर विजय प्राप्तकर पाऊँ पूर्णतृप्त जीवन।।मान.५ ।।
ॐ ह्रीं श्रीमानस्तंभ विराजित जिनबिम्बेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.
ज्ञानकिरण की दिव्य ज्योति से भ्रमतम मोह हरूँ भगवन।
केवलज्ञान सूर्य प्रगटाऊँ परम विनय का करूँ वरण।।मान. ।।६ ।।
ॐ ह्रीं श्रीमानस्तंभ विराजित जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं. नि.
शुक्ल ध्यान की विमल अग्नि में आठों कर्म जलें भगवन।
पूर्ण निर्जरा भाव शक्ति से काटूँ सभी कर्म बंधन।।मान.७ ।।
ॐ ह्रीमानस्तंभ विराजित जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं.नि.
परम समरसी भावों का फल शीघ्र प्राप्तकर लूँ भगवन।
सादि अनंत मोक्षपद पाऊँ निजानंद में रहूँ मगन।।८ ।।
ॐ ह्रींश्रीमानस्तंभ विराजित जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं नि.
रत्नत्रय का अर्घ्य मनोहर शुद्ध भावमय लूँ भगवन।
शाश्वत निज अनर्घ्य पद पाऊँ मुक्ति वधू का करूँ वरण।।९ ।।
ॐ ह्रीं श्रीमानस्तंभ विराजित जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं. निं.।

जयमाला

मानस्तंभ महान को मैं बंदू कर जोड़।
पर पदार्थ से दृष्टि निज अब लूँ हे प्रभु मोड़।।
जिनवर समवशरण की चारों दिशि में मानस्तंभ विशाल।
धूल शालि के निकट सुशोभित नीलगगन में उन्नत भाल।।१ ।।
उच्च शिखर पर चारों दिशि में जिनप्रतिमाएँ बनी महान।
क्षुद्र घंटिकाओं की मृदुध्वनि गाती है प्रभु का यशगान।।२ ।।

Scanned by CamScanner

मूल भाग में चारों दिशि में प्रतिमाएँ शोभित सुन्दर।
इन्द्र क्षीर सागर जल से करते अभिषेक विनय उर धर।।३।।
तीन कोट के बाद तीन पीठों से शोभित होता है।
बीच बीच में ध्वजा पंक्तियाँ लख मन मोहित होता है।।४।।
चार चार वापिका चार दिशि में अतिसुन्दर होती है।
चार वीथिकाएं अतिसुन्दर महानिराली होती है।।५।।
भव्य वीथिका नीर कुन्ड में शोभित कमल पंक्ति मनहार।
देवों द्वारा जय ध्वनि होती होता नभ में जय जयकार।।६।।
वज्रद्वारमय मध्य भाग में होते हैं ये वृत्ताकार।
ऊपर चमर घंटिका ध्वज से शोभित सुन्दर दिव्य अपार।।७।।
तीर्थंकर की ऊंचाई से बारह गुणी दिव्य ऊंचान।
मूल भाग में रत्न पिटारों में जिनपर आभरण महान।।८।।
समवशरण सम जिन मंदिर के प्राँगण में भी मानस्तंभ।
तीन लोक के कृत्रिम अकीर्तम जिन भवनों में मानस्तंभ।।९।।
परम विनय से पूजन करके नष्ट करूँ भव का विषकुंभ।
रागद्वेष का सर्वनाशकर पाऊँ शिवसुख अमृतकुंभ।।१०।।
आत्म प्रतीति जगे प्रभु मन में विनयशील जीवन पाऊँ।
चार घातिया कर्म विनाशूँ मैं अर्हन्त स्वपद पाऊँ।।११।।
यही भावना लेकर स्वामी विनय भाव से आया हूँ।
भवसागर से पार करो प्रभु मैं भव से घबराया हूँ।।१२।।
क्रोधमान माया लोभादिक चार कषाय विनाश करूँ।
वीतराग सर्वज्ञ बन केवलज्ञान प्रकाश करूँ।।१३।।

ॐ ह्रीं मानस्तंभ विराजित जिनबिम्बेभ्यो पूर्णार्घ्यं नि.।

मानस्तंभ जिनेन्द्र का देता यंह संदेश।
विनय भाव जो धारते बनते सिद्ध महेश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र—ॐ ह्रीं मानस्तंभ विराजित जिनबिम्बेभ्यो नमः।

Scanned by CamScanner

महा अर्घ

श्री अरहंत देव को पूंजूँ श्री सिद्ध प्रभु को पूंजूँ।
आचार्यों केचरणाम्बुज, श्री उपाध्याय के पद पूंजूँ॥१॥
सर्व साधु पद पूजूँ, श्री जिन द्वादशांग वाणी पूजूँ।
तीस चौबीसी बीस विदेही, जिनवर सीमंधर पूजूँ॥२॥
कृत्रिम अकृत्रिम तीन लोक के जिनगृह जिन प्रतिमा पूजूँ।
पंचमेरु नन्दीश्वर पूजूँ तेरह दीप चैत्य पूजूँ॥३॥
सोलह कारण दशलक्षण रत्नत्रय धर्म सदा पूजूँ।
भूत भविष्यत् वर्तमान की त्रय जिन चौबीसी पूजूँ॥४॥
श्रीवृषभादिक वीर जिनेश्वर ऋषि गणधर स्वामी पूजूँ।
श्री जिनराज सहस्त्रनाम श्री मोक्षशास्त्र आदि पूजूँ॥५॥
श्री पंचकल्याणक पूजूँ विधि विधान महा पूजूँ।
गौतम स्वामी, कुन्दकुन्द आचार्य सुसमयसार पूजूँ॥६॥
चम्पापुर पावापुर गिरनार कैलाश शिखर पूजूँ।
श्री सम्मेदशिखर पर्वत जिनवर निर्वाण क्षेत्र पूँजूँ॥७॥
तीर्थकर की जन्मभूमि अतिशय अरू सिद्ध क्षेत्र पूजूँ।
श्री जिन धर्म श्रेष्ठ मंगलमय महाअर्घ दे पूजूँ॥८॥

ॐ ह्री भावपूजा, भाव बन्दना त्रिकाल पूजा, त्रिकाल बन्दना, करवी करावी, भावना भावी, श्रीअरहंत जी, सिद्ध जी, आचार्य जी, उपाध्याय जी, सर्व साधु जी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग, द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडसकारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यक्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र रत्नत्रयेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे आकाशविषे गुफाविषे, पहाड़विषे नगर नगरी विषे कृत्रिम अकृत्रिम जिन बिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र स्थित विद्यमान बीस तीर्थङ्करेभ्यो नमः। पांच भरत पांच एरावत दश क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस तीर्थङ्करेभ्यो नमः।नन्दीश्वर द्वीप स्थित बावन जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर, कैलाशगिरि, चंपापुर पावापुर गिरनार तीर्थङ्कर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः। पावागढ़, तुंगीगिरी, गजपंथ, मुक्तागिर सिद्धवर कूट, ऊन बड़वानी पावागिरि कुण्डलपुर सोनागिर राजगृही मन्दारगिरी, द्रोणगिरी अहार जी आदि समस्त सिद्धक्षेत्रेभ्यो

Scanned by CamScanner

नमः। जैनबिद्री मूलबिद्री मक्सी, अयोध्या कम्पिलापुरी आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। समस्त तीर्थंकर पंचकल्याणतीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री गौतम स्वामी कुन्दुकुन्दाचार्य एवं चारणाऋद्धिधारी सात परम ऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्त सर्वेभ्यो अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इति शुभम् भूयात्

शांति पाठ

इन्द्र नरेन्द्र सुरों से पूजित वृषभादिक श्री वीर महान।
साधु मुनीश्वर ऋषियों द्वारा वन्दित तीर्थंकर विभुवान॥१॥
गणधर भी स्तुति कर हारे जिनवर महिमा महामहान।
अष्ट प्रातिहार्यों से शोभित समवशरण में विराजमान॥२॥
चौतीसों अतिशय से शोभित छयालीस गुण के धारी।
दोष अठारह रहित जिनेश्वर श्री अरहंत देव भारी॥३॥
तरु अशोक सिंहासन भामंडल सुर पुष्पवृष्टि त्रयछत्र।
चौसठ चमर दिव्य ध्वनि पावन दुन्दुभि देवोपम सर्वत्र॥४॥
मति श्रुति अवधि ज्ञान के धारी जन्म समय से हे तीर्थेश।
निज स्वभाव साधन के द्वारा आप हुये सर्वज्ञ जिनेश॥५॥
केवलज्ञान लब्धि के धारी परम पूज्य सुख के सागर।
महा पंचकल्याण विभूषित गुण अनन्त के हो आगर॥६॥
सकल जगत में पूर्णशांति हो, शासन हो धार्मिक बलवान।
देश राष्ट्र पुर ग्राम लोक में सतत् शांति हो हे भगवान॥७॥
उचित समय पर वर्षा हो दुर्भिक्ष न चोरी मारी हो।
सर्व जगत के जीव सुखी हो सभी धर्म के धारी हों॥८॥
रोग शोक भय व्याधि न होवे ईति भीति का नाम नहीं।
परम अहिंसा सत्य धर्म हो लेश पाप का काम नहीं॥९॥
आत्म ज्ञान की महाशक्ति से परम शांति सुखकारी हो।
ज्ञानी ध्यानी महा तपस्वी स्वामी मंगलकारी हो॥१०॥
धर्म ध्यान में लीन रहूँ मैं प्रभु के पावन चरण गहूँ।
जब तक सिद्ध स्वपद ना पाऊँ सदा आपकी शरण लहूँ॥११॥

Scanned by CamScanner

श्री जिनेन्द्र के धर्मचक्र से प्राणि मात्र का हो कल्याण।
परम शांति हो, परम शांति हो हे परमशांति हो हे भगवान॥१२॥

शांतिधारा

(कायोत्सर्ग नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य करें)

क्षमापन पाठ

जो भी भूल हुई प्रभु मुझ से उसकी क्षमा याचना है।
द्रव्य भाव की भूल न हो अब ऐसी सदा कामना है॥१॥
तुम प्रसाद से परम सौख्य हो ऐसी विनय भावना है।
जिन गुण सम्पत्ति का स्वामी हो जाऊँ यही साधना है॥२॥
शुद्धातम का आश्रय लेकर तुम समान प्रभु बन जाऊँ।
सिद्ध स्वपद पाकर हे स्वामी फिर न लौट भव में आऊँ॥३॥
ज्ञान हीन हूँ क्रिया हीन हूँ द्रव्य हीन हूँ हे जिनदेव।
भाव सुमन अर्पित हैं हे प्रभु पाऊँ परम शांति स्वयंमेव॥४॥
पूजन शांति विसर्जन करके निज आतम का ध्यान धरूँ।
जिन पूजन का यह फल पाऊँ शाश्वत निज कल्याण करूँ॥५॥
मंगलमय भगवान वीर प्रभु मंगलमय गौतम गणधर।
मंगलमय श्री कुन्द कुन्द मुनि मंगल जिनवाणी सुखकर॥६॥
सर्व मंगलों में उत्तम है णमोकार का मंत्र महान।
श्री जिनधर्म श्रेष्ठ मंगलमय अनुपम वीतराग विज्ञान॥७॥

ॐ शांतिः शांतिः शांतिः

निज अनुभव रसपान करेंगे

निज अनुभव रसपान करेंगे तो निज गुण चंदन महकेगा।
निज का रूप संवार सकेंगे तो निज नंदनवन चहकेगा॥१॥
निज स्वभाव टंकोत्कीर्ण है इसकी महिमा का कहना क्या।
सदा सौख्य सागर से पूरित फिर परभावों में बहना क्या॥२॥
परमानंद स्वरूप स्वयं जब भव भव के दुख का सहना क्या।
भाव भासना एक बार हो फिर न आत्मा यह बहकेगा॥३॥
निज अनुभव .....

Scanned by CamScanner

भौतिक सुख की चकाचौंध में पाप पुण्य भावों में लथपथ।
काल अनंत व्यर्थ ही खोया किन्तु नहीं पाया सम्यक्पथ॥४॥
ज्ञान ज्योति ले रत्नत्रय पथ पर आ जाये यह जीवनरथ।
निज स्वभाव की ध्यान अग्नि में कर्मकलंक काष्ठ दहकेगा॥५॥
निज अनुभव.....
संवर की शुचिमय सुगंध महकेगी पूर्ण महाव्रत होगा।
अतर तप मय पूर्ण निर्जरा से शिवपथ आलोकित होगा॥६॥
मुक्ति वधू की रुनझुन रुनझुन पग ध्वनि से उर पुलकित होगा।
जग के बाद विवाद मिटेंगे सिद्धस्वपद सादर लहकेगा॥७॥
निज अनुभव रसपान करेंगे तो निजगुण चंदन महकेगा।

जब तक निज पर भेद न जाना

जब तक निज पर भेद न जाना तब तक ही अज्ञानी।
जिस क्षण निज पर भेद जान ले उस क्षण हीतू ज्ञानी॥१॥
मोहकर्म के हो अधीन निज को अनादि से भूला।
पर से भिन्न स्वरूप न जाना पर भावों में झूला॥२॥
निज स्वभाव को छोड़ सुहाई पुण्य पाप की धूला।
अब तो संभल संभल ओ स्याने जीवन वारि बबूला॥३॥
अंत समय तू पछताएगा कहती श्री जिनवाणी।
जब तक निज पर भेद न जाना तब तक ही अज्ञानी॥४॥
जीव अजीव आस्रव संवर बंध निर्जरा क्या है।
मोक्ष तत्व का क्या स्वरूप है पाप पुण्य का क्या है॥५॥
रागद्वेष मद काम लोभ माया की छलना क्या है।
मंदकषायी बनकर भूला फल विभाग का क्या है॥६॥
पूर्ण ज्ञान चैतन्य पुंज तू नहीं शुद्धता जानी।
जब तक निज पर भेद न जाना तब तक ही अज्ञानी॥७॥
जिस क्षण निज पर भेद जान ले उस क्षण ही तू ज्ञानी।
जब तक निज पर भेद न जाना तब तक ही अज्ञानी॥८॥
तीन लोक पंचास्तिकाय छह द्रव्य जगत में जाने।
नव पदार्थ षटकाय जीव छह लेश्याएँ पहचाने॥९॥

Scanned by CamScanner

सात तत्व का निर्णय करके अष्टकर्म जड़ माने।
निश्चय शुद्ध स्वरूप स्वयं का रत्नत्रय उर ठाने॥१०॥
पर विभाव से भिन्न, सुखद निर्वाण प्राप्तकर प्राणी।
जब तक निज पर भेद न जाना तब तक ही अज्ञानी॥११॥

पुण्यों की जब तक मिठास है

पुण्यों की जब तक मिठास है वीतरागता नहीं सुहाती।
जड़ की रुचि में चिन्मूरति चिन्मूरति की रुचि कभी न भाती॥१॥
चेतन के प्रति अकर्मण्य है और अचेतन के प्रति कर्मठ।
निजभावों से है विरक्तता परभावों की चिरपरिचित हठ॥२॥
इन्द्रिय सुख में अरे अतीन्द्रिय सुख की व्यर्थ कल्पना करता।
अनुभवगोचर वस्तु सहज है रागातीत विराग न वरता॥३॥
सहजभाव संपदा रक्त है तो भी इस पर दृष्टि न जाती।
पुण्यों की जब तक मिठास है वीतरागता नहीं सुहाती॥४॥
पर ममत्व की मादकता से तत्वाभ्यास नहीं हो पाता।
पर में जागरूक रहता है निज में स्वयं नहीं खो पाता॥५॥
ज्ञायक होकर ज्ञान न जाना और ज्ञेय में ही उलझा है।
ध्याता ध्यान ध्येय ना समझा अतः न अब तक यह सुलझा है॥६॥
तर्क कुतर्क मान्यता मिथ्या भव भव में है इसे रुलाती।
पुण्यों की जब तक मिठास है वीतरागता नहीं सुहाती॥७॥
महावीर का अनुयायी है महावीर को कभी न माना।
राग वीर ने हेय बताया इसने उपादेय ही जाना॥८॥
पाप हेय है यह तो कहता किन्तु पुण्य में लाभ मानता।
मोक्षमार्ग में दोनों बाधक यह सम्यक् निर्णय न जानता॥९॥
मूल भूल ही इस चेतन को भव अटवी में है अटकाती।
पुण्यों की जब तक मिठास है वीतरागता नहीं सुहाती॥१०॥
साधक साध्य साधना साधन का विपरीत रूप है माना।
स्वंय साध्य साधन सब कुछ है इसे भूल भटका अनजाना॥११॥

Scanned by CamScanner

चिदानंद निर्द्वंद निजातम का आश्रय ले अगर बढ़े यह।
तो निश्चय पुरुषार्थ सफल हो मुक्ति भवन सोपान चढ़े यह॥१२॥
ज्ञान पृथक है राग पृथक है ऐसी निर्मल सुमति न आती।
पुण्यों की जब तक मिठास है वीतरागता नहीं सुहाती॥१३॥
वीतराग विज्ञान ज्ञान का अनुभव ज्ञान चेतना लाता।
कर्म चेतना उड़ जाती है निज चैतन्य परम पद पाता॥१४॥
वीतराग जिन मार्ग यही है केवल लो अपना अवलंबन।
रागमात्र को हेय जान निज भावों से काटो भवबंधन॥१५॥
तत्वों की सम्यक् श्रद्धा से मोक्ष संपदा है मिल जाती।
पुण्यों की जब तक मिठास है वीतरागता नहीं सुहाती॥१६॥

यदि भव सागर दुख से भय है

यदि भवसागर दुख से भय है तो तज दो पर भाव को।
करो चिंतवन शुद्धातम को पा लो सहज स्वभाव को॥१॥

नरपशु देव नरकगतियों में बीता कितना काल है।
फिर भी नहीं समझ पाए यह भव वन अति विकराल है॥२॥
तजो शुभाशुभ भाव यही शुद्धोपयोग की ढाल है।
किया तत्व निर्णय जिसने वह जिनवाणी का लाल है॥३॥
द्रव्य दृष्टि से समकित निधि पा कर लो दूर अभाव को।
यदि भवसागर दुख से भय है तो तज दो पर भाव को।४॥

पाप पुण्य दोनों जग सृष्टा इन में दुख भरपूर है।
इनकी उलझन सुलझ न पाई तो फिर सुख अतिदूर है॥५॥
इस प्रकार परभावों में अब तक प्राणी चकचूर है।
पर विभाव को नष्ट करे जो वह ही सच्चा शूर है॥६॥
समकित औषधि से अच्छा कर लो अनादि के घाव को।
यदि भवसागर दुख से भय है तो तज दो पर भाव को॥७॥

Scanned by CamScanner

बीती रात प्रभात हो गया जिनवाणी का सूर्य बजा।
जिसने दिव्य ध्वनि हृदयंगम की उसके उर सूर्य सजा॥८॥
आत्मज्ञान का देख उजाला भाग रहे परभाव लजा।
चिदानंद चैतन्य आत्मा का अंतर में नाद गजा॥९॥
भक्ति की सुगंध महकी है देखो ज्ञायक भाव को।
करो चिंतवन शुद्धातम को पा लो सहज स्वभाव को॥१०॥

मैं तो सर्वज्ञ स्वरूपी हूँ

मैं अपने भावों का कर्ता
अपने वैभव का स्वामी हूँ।
शुभ अशुभ विभाव नहीं मुझमें
निर्मल अनंत गुणधामी हूँ॥१॥

मैं ज्योति पुंज चिच्चमत्कार
चैतन्य पूर्ण सुखरूपी हूँ।
मैं तो सर्वज्ञ स्वरूपी हूँ॥२॥

मैं ज्ञानानंदी ज्ञानमात्र
अविचल दर्शन बलधारी हूँ।
मैं शाश्वत चेतन मंगलमय
अविनाशी हूँ अविकारी हूँ॥३॥

मैं परमसत्य शिव सुन्दर हूँ।
मैं एक अखंड अरूपी हूँ।
मैं तो सर्वज्ञ स्वरूपी हूँ॥४॥

Scanned by CamScanner

अब मुझे समकित मिला है

अब मुझे समकित मिला है।
मन नवोदित कमल सम जिन रवि किरण पाकर खिला है॥
सो रहा था मोह निद्रावश अरे मैं आज जागा।
ज्ञान ज्योति प्रगट हुई अज्ञान तम है दूर भागा॥
राग पर परिणाम भाव ममत्व मैंने आज त्यागा।
धन्य यह जीवन हुआ रे जो रहा अब तक अभागा॥
तत्व पर श्रद्धा हुई है ज्ञान निज पर झिलमिता है।
अब मुझे समकित मिला है॥१॥
मोह के बादल हटे रे शुद्ध चेतन चंद्र चमका।
पाप पुण्याश्रव घनेरे रोक संवर रूप दमका॥
निर्जरा की चांदनी पा शुद्ध सौरभ स्वयं गमका।
श्रुत कृपा से आज पाया अंत मैंने हृदय तम का॥
भव भवों के पातकों का आज निर्मित गढ़ हिला है।
अब मुझे समकित मिला है॥२॥
मैं स्वयं चैतन्य रूपी शुद्ध द्रव्य अखंड हूँ मैं।
अमल अतुल स्वभावमय हूँ भव्य सूर्य प्रचंड हूँ मैं॥
ज्ञानदर्शन वीर्य सुखमय ज्योति पुंज स्वमंड हूँ मैं।
चिदानंद निशंक हूँ निर्द्वंद शक्ति अदंड हूँ मैं॥
जड़ अचेतन से प्रथक हूँ आज निज आंचल छिला हैं।
अब मुझे समकित मिला है॥३॥
स्वयं निज की शक्ति के बल से स्वपद निर्वाण लूँगा।
स्वयं निज पुरूषार्थ से सर्वज्ञ रूप महान लूँगा॥
स्वयं निज का आश्रय ले स्वयं केवलज्ञान लूँगा।
शुद्ध बुद्ध अनंत गुणमय सिद्धरूप प्रधान लूँगा॥
मिल गई निज रूप रमणी मुक्ति का यह सिलसिला है
अब मुझे समकित मिला है॥४॥

Scanned by CamScanner

परिणामों बंधों परिणामों मोक्खो

परिणाम बंध का कारण है
परिणाम मोक्ष का कारण है॥
परिणाम पाप का होता तो नरकादिक दुख मिल जाता है।
परिणाम पुण्य काहोता तो स्वर्गादिक सुख मिल जाता है॥
संसार मार्ग तो एक मात्र परिणाम शुभाशुभ धारण है।
परिणाम बंध का कारण है।
परिणाम मोक्ष का कारण है॥१॥
दिनरात निरंतर तत्वों का चिंतन जब मनको भाता है।
शुद्धात्मतत्व चैतन्य स्वयं निज परिणति को पा जाता है॥
परिणाम शुद्ध हो जाता है जो भवदुख सागर तारण है।
परिणाम बंध का कारण है।
परिणाम मोक्ष का कारण है॥२॥
संकल्प विकल्प रहित चेतन निज सिद्ध स्वपद पा जाता है।
अंतर्जल्पों में जो उलझा निज पद न प्राप्त कर पाता है॥
पर पद में लीन स्वपद भूला पर परिणति भव दुख दारूण है।
परिणाम बंध का कारण है।
परिणाम मोक्ष का कारण है॥३॥

अगर जगत में सुख होता तो

अगर जगत में सुख होता तो तीर्थकर क्यों इसको तजते।
पुण्यो का आनंद छोड़कर निजस्वभाव चेतन क्यों भजते॥१॥

अथिर जगत की माया ममता पर परिणति भवदुखमय जानी।
आत्मध्यान तल्लीन हो गये और हो गये केवल ज्ञानी॥२॥

आश्रव को भवरूप जानकर बंधत्याग संवर को धारा।
भाव निर्जरा तप के द्वरा चार घातिया कक्ट निवारा॥३॥

Scanned by CamScanner

यह संसार महादुख सागर जन्ममरण की लहरें इसमें।
चारों गतियों काबंधन है रागद्वेष की डगरें इसमें॥४॥

इस प्रकार जगती को प्रभु ने सिद्ध किया महादुखमयी।
चेतनरूप अनंत गुणमयी सिद्धरूप निर्वाण सुखमयी॥५॥

शुभ और अशुभ बध दोनों हैं पुण्य पाप की ही परिभाषा।
चिदानंद चैतन्यमयी है शुद्धज्ञान चेतन की भाषा॥६॥

जब तक मिथ्यात्व हृदय में है

जब तक मिथ्यात्व हृदय में है संसार न पलभर कम होगा।
जबतक पर द्रव्यों से प्रतीति भवभार न तिलभर कम होगा॥१॥

जब तक शुभ अशुभ बंध आश्रव तबतक संवर का मान नहीं।
निर्जरा कर्म की कैसे हो जब तक स्वभाव का भान नहीं॥२॥

जब तक कर्मों का नाश नहीं अब तक निर्वाण नहीं होगा।
जब तक निर्वाण नहीं होगा भव दुख से त्राण नहीं होगा॥३॥
जब तक तत्वों का ज्ञान नहीं तब तक समकित कैसे होगा।
जब तक सम्यक्त्व नहीं होगा तब तक निज हित कैसे होगा॥

इसलिये मुख्य पुरूषार्थ प्रथम सम्यक्त्व प्राप्त करना होगा।
रत्नत्रय के अवलंबन से वसुकर्म जाल हरना होगा॥

बिन समकित व्रत पूजन अर्चन जब तप सब तेरे निष्फल।
संसारबंध के हैं प्रतीत भवसागर के ही दलदल हैं॥

Scanned by CamScanner

पुस्तक प्राप्ति स्थान

1. श्री दिगम्बर जैन मुमुक्ष मण्डल, 39, दि. जैन मन्दिर मार्ग, चौक भोपाल (म. प्र.)
2. सौ.गानी ग्रन्थमाला
   C/o. भाभा मेडिकल, जुमेराती, भोपाल
3. श्री प्रेम चन्द जैन
   125 बैंक एन्कलेव, लक्ष्मी नगर
   दिल्ली-110092
   दूरभाष : 2222450

कर लो निज आतम का ज्ञान-

कर लो निज आतम का ज्ञान-

कर लो निज आतम का ज्ञान जीवन केवल दो दिन का।
पल में उड़ जायेगा मान जैसे जंगल का तिनका॥करलो. ॥१॥
जन्म मरण के दावानल में झुलस रहा है हरदम।
अनगिनती भव व्यर्थ गंवाऐ पीड़ा हुई न कुछ कम॥करलो.॥२॥
महाभाग्य से नर तन पाया जीवन वृथा गंवाया।
सोने चांदी की माया में फंसकर अति दुख पाया॥ करलो.॥३॥
श्री गुरू का उपदेश न माना, की तूने मनमानी।
पांचों पापों की छाया में रहा मूढ़ अज्ञानी॥ करलो.॥४॥
जिनमंदिर जिनश्रुत न सुहाया जिन गुरू वचन न भाये।
पुण्योदय की मादकता में पाप अनंत कमाए॥ करलो.॥५॥
आज परम शुभ अवसर आया सुन ले तू जिनवाणीं।
तत्वों के श्रद्धानपूर्वक बन जा आतमज्ञानी॥ करलो.॥६॥
पाप पुण्य संसार चक्र से अब तो मन को मोड़ो।
धर्मचक्र का आश्रय लेकर कर्मचक्र को तोड़ो॥करलो.॥७॥

Scanned by CamScanner